कृति एवं प्रस्तुति

विद्यावाचस्पति श्री श्री 1008 आचार्य
श्री सुभद्रमुनि जी महाराज

'श्री दशवैकालिक सूत्र' जैन श्रमण के प्रारंभिक आचार–विचार को निर्देशित करने वाला प्रतिनिधि आगम है। श्रमणत्व की भूमिका में प्रवेश लेने वाले प्रत्येक साधक के लिए इस आगम में निर्देशित नियमों, निर्देशों और मर्यादाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। इस सूत्र को हृदयंगम करने के पश्चात् ही श्रमण के लिए श्रमणचर्या का मार्ग प्रशस्त होता है। आगम–वाङ्मय में प्रवेश के लिए भी दशवैकालिक प्रवेश–द्वार है। इस सूत्र के सांगोपांग अध्ययन, आराधन और मनन करने वाले श्रमण के लिए आगम–आराम में विहार सरल और सुगम हो जाता है।

दशवैकालिक सूत्र की इसी प्रधानता को दृष्टिपथ में रखते हुये श्रद्धेय आचार्य श्री सुभद्र मुनि जी महाराज ने इस सूत्र का अनुवाद बहुत ही सरल, सरस और प्राञ्जल भाषा शैली में प्रस्तुत किया है। विभिन्न विषयों की वर्गीकृत प्रस्तुति इस संस्करण की एक अलग विशिष्टता है।

श्रद्धेय आचार्य श्री श्रमण–परम्परा के एक तेजस्वी, यशस्वी और वर्चस्वी श्रमण हैं। इनके बहुआयामी व्यक्तित्व को कलम की परिधियों में समेट पाना संभव नहीं है। इन द्वारा सृजित, संपादित, व्याख्यायित एवं अनुवित विशाल वाङ्मय को देखकर यह स्वतः प्रमाणित होता है कि ये एक युगस्रष्टा दार्शनिक मुनि हैं।

श्रद्धेय आचार्य श्री की दृष्टि परम उदार है, साथ ही सत्यान्वेषक भी। सत्यान्वेषण करते हुये इनकी दृष्टि में पर, पर नहीं होता। स्व, स्व नहीं होता। स्व–पर का परिबोध नष्ट हो जाना ही मुनित्व का मूलमंत्र है। स्व और पर युगपत हैं। 'पर' रहा तो 'स्व' अस्तित्व में रहता है। 'स्व' रहेगा, तब तक 'पर' मिट नहीं सकता। दर्शन जितना गूढ़, जीवन–सा सरस और मुनित्व के आनन्द में रचा है, इनका व्यक्तित्व। यह व्यक्तित्व जितना आकर्षक है उतना ही स्नेहसिक्त भी है।

व्यवहार में परम मृदु। आचार में परम निष्ठावान्। विचार में परम उदार। कटुता ने इनकी हृदय–वसुधा पर कभी जन्म नहीं लिया है। इनका सम्पूर्ण जीवन–आचार, दर्शन का व्याख्याता है।

—संपादक

सिरी दसवेकालिक सुत्तर

आचार्य सुभद्र मुनि

सिरी दसवेकालिक सुत्तर

आचार्य सुभद्र मुनि

सिरी दसवेकालिक सुत्तर

(भगवान महावीर की धर्म-देशना
'श्री दशवैकालिक सूत्र' का हरियाणवी अनुवाद)

आशीर्वाद:
संघशास्ता जैन शासन-सूर्य पूज्य गुरुदेव
श्री रामकृष्ण जी महाराज

अनुवाद:
राष्ट्रसंत आचार्य श्री सुभद्र मुनि जी महाराज

प्रकाशक:
मुनि मायाराम सम्बोधि प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशन शुभ अवसर

राष्ट्रसंत आचार्य श्री सुभद्रमुनि जी महाराज

के परम पावन जन्म-दिवस

12 अगस्त, सन् 2015

के शुभ अवसर पर प्रकाशित

प्रकाशकीय-

प्रकाशन के लिए पर्व जैसा सुअवसर है आगम-प्रकाशन

मुनि मायाराम सम्बोधि प्रकाशन (दिल्ली) पूज्य गुरुदेव संयम सुमेरु चारित्र चूड़ामणि महामुनि श्री मायाराम जी महाराज की परम पावन स्मृति में स्थापित श्रुत-संस्थान है। इसका उद्देश्य जन-जन तक जैन धर्म एवं भगवान् महावीर की वाणी को पहुँचाना है। विगत लगभग पैंतीस वर्षों से यह संस्थान जिनशासन की सेवा में समर्पित मन से लीन है। श्रद्धालुजनों के सहयोग से यह कार्यरत है। इसका उद्देश्य अर्थार्जन करना नहीं है।

श्रद्धेय राष्ट्रसंत आचार्य भगवन् पूज्य गुरुदेव श्री सुभद्र मुनि जी महाराज के समर्थ दिशानिर्देशन में यह संस्थान श्रुत-सेवा का कार्य यथाशक्ति कर रहा है। अब तक यहाँ से शताधिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। प्रस्तुत प्रकाशन के रूप में भगवान् महावीर की परम पावन वाणी 'श्री दशवैकालिक सूत्र' का आचार्य भगवन् द्वारा किया गया हरियाणवी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रकाशन के लिए यह पर्व जैसा मंगलमय अवसर है। यह अवसर देने के लिए हम आचार्य भगवन् के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

आचार्य भगवन् स्वयं हरियाणा से संबद्ध हैं। उनका देह-जन्म हरियाणा में हुआ। दीक्षा भी हरियाणा में ही हुई। अतः हरियाणवी पर उनका सहज अधिकार है। इस अधिकार का लाभ प्रस्तुत प्रकाशन को मिला है। इससे पूर्व भी आचार्य भगवन् हरियाणवी में अनेक रचनाएँ प्रस्तुत कर चुके हैं जो श्रद्धालुजनों के बीच लोकप्रिय रही हैं। उस अनुभव की ऊर्जा भी यहाँ देखी जा सकती है। आशा है कि हरियाणवी बोली/भाषा में रुचि रखने वालों तथा बोलने वालों के लिए यह अनुवाद बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

इन्हीं भावों के साथ!

-प्रकाशक

भूमिका-

भीतर की बात

ईब तै छब्बीस सौ साल पहलां भगवान महाबीर जैन धरम के चोबीसमें तीर्थंकर होए। उन्नैं कसूत्ती तपस्या करकै अपणे सारे करम खतम करे अर केवल ग्यान हासल कर्या। वे हर तरियाँ तै पूरे होए। उन्नैं अपणी देसणा जनता की बोल्ली अर भासा मैं दी। बेदाँ की अर पढे-लिख्याँ की, ग्यानियाँ की भासा उस टैम संस्कृत थी। भगवान महाबीर नैं इस भासा मैं अपणा ग्यान कोन्याँ दिया। भगवान नैं अपणा ग्यान दिया जनता की भासा मैं। उस टैम जनता की भासा प्राकृत थी। इसलिए भगवान महाबीर की बाणी जब गणधराँ नैं सास्तराँ मैं कट्ठी करी तो वा सारी बाणी प्राकृत मैं ए थी। जैन सास्तरां के प्राकृत भासा मैं होण का यो कारण सै। सिरी दसवेकालिक सुत्तर की भासा भी प्राकृत सै। भगवान की बाणी आज भी जनता की बोल्ली अर भासा मैं हो, इस भौअना तै यो काम होया सै।

सिरी दसवेकालिक सुत्तर न्यूँ बण्या :

बिदवान्नाँ नैं बताया सै अक् यो सुत्तर भगवान की बाणी तै आचार्य शय्यंभव नैं निचोड्या था। चौदा पूरवाँ के ग्यान तै इसकी गाथा उन्नैं कट्ठी करी थी। ये गाथा न्यारे सुत्तर मैं कट्ठी क्यूँ करी थी, इसका जुआब इसके इतिहास मैं बताया सै। आचार्य शय्यंभव राजगृह के रह्ण आले बाह्मण थे। उनका गोत वत्स था। वे भगवान महाबीर के निर्वाण तै ३६ साल बाद जनमे थे। आचार्य प्रभव स्वामी की बाणी तै उन्नैं धरम का ग्यान होया अर जैन दीक्सा ली। सुआध्याय कर्या। वे चौदा पूरवाँ के ग्यान्नी बणे। उन्के दीक्सा लेण के टैम उनकी घर आली पेट तै थी। अपणे टैम पै उसकै बेट्टा होया। नाम धर्या-मनक । जिब ओ आठ साल का होया तो उसनैं अपणी माँ तै अपणे पिता का नाम बूझ्या। माँ नैं बताया अक् उसके पिता जैन साद्धु सैं अर इस टैम जैन संघ के आचार्य सैं। माँ तै अग्या ले कै मनक चम्पा नगरी गया, जहाँ उसके पिता उस टैम थे। आचार्य शय्यंभव तै ओ मिल्या। आचार्य जी नैं उसतै धरम का उपदेस दिया। सुण कै उसकै बिराग हो ग्या अर ओ आठ बरस की उमर मैं ए साद्धु बण ग्या।

आचार्य जी नैं उसका हाथ देख कै पता लग्या अक् इसकी उमर कत्ती थोड़ी सै। इतणे थोड़े टैम मैं यो सारे सास्तरां का ग्यान कोन्याँ ले सकदा। फेर उन्नैं पूरवाँ के ग्यान तै दसवेकालिक सुत्तर निचोड्या अर मनक मुनि तै पढाया। इस सुत्तर के हिसाब तै ए उसनैं छह महीने ताईं संजम पाल्या अर फेर उसका सुरगबास हो ग्या। आचार्य जी चौदा पूरवाँ के ग्यान्नी थे। मनक मुनि के सुरगबास तै उनके जी मैं कोए फरक नहीं आया। उन्नैं सारे संघ के आग्गै सच्चाई बता दी। साद्धुआँ नैं बूझी अक् या बात पहलाँ क्यूँ नहीं बताई तो आचार्य जी बोले- पहलाँ बता देता तो कोये साद्धु मनक मुनि तै सेवा नहीं करावै हो। साद्धुआँ के मन मैं इस सच्चाई तै कोए फरक ना आवै, इस कारण पहलाँ नहीं बताई।

ईब सुआल यो था अक् थोड़े-से टैम मैं ए मनक मुनि का किल्लाण करण आले इस सुत्तर का के करैं। आचार्य जी नैं संघ तै इसका जुआब मांग्या। संघ नैं फैसला कर्या अक् यो सुत्तर मनक बरगे ओर साद्धुआँ के संजम की बुनियाद बणैगा, इस कारण यो पूरवाँ के ग्यान मैं उलटा ना मिलाया जावै। संघ के उस फैसले का ए परताप सै जो यो सुत्तर म्हारे धोरै आज भी सै। इसकी इतणी कीम्मत सै अक् पांचमें आरे के आखिर मैं जिब सारे सास्तरां का लोप हो ज्यागा तो इस सुत्तर के पहले चार पाठ बचैंगे अर उन्के ग्यान तै ए दुप्पसह नाम का साद्धु अपणी आतमा का किल्लाण करेगा। उसकी गैल फाल्गुनी नाम की सती, जिनदास नाम का श्रावक अर नागिला के नाम तै मसहूर श्राविका नागश्री भी इस्सै के ग्यान तै आतम-किल्लाण करैंगे अर सुरग मैं जावैंगे।

हरियाणवी मैं अनुवाद :

सिरी दसवेकालिक सुत्तर के ईब ताईं कई संस्करण छप लिए। हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी बरगी कई भासाँ मैं यो छप लिया सै। पहली बार यो जर्मनी देस मैं छप्या था, बाद मैं हिन्दुस्तान मैं छप्या। हिन्दी मैं इसके अनुवाद आचार्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज, आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज, आचार्य श्री घासीलाल जी महाराज अर उपाचार्य श्री मधुकर मुनि जी महाराज जिसे कई बड्डे साद्धुआँ नैं करे अर छपवाए। फेर हरियाणवी मैं इसका अनुवाद करण की के जरूरत थी?

कारण बिना कोए काम कोन्याँ होया करदा। जरूरत हर काम की माँ होया करै। सिरी दसवेकालिक सुत्तर हरियाणवी मैं नहीं था। हरियाणवी मैं जैन साहित्य

जमां ए थोड़ा सै। थोड़े-बहोत भजन सैं, कहाणी सैं, सांग सैं। हरियाणे मैं जाम्मण अर बड्डा होण के कारण हरियाणवी मैं मेरी दिलचस्पी हमेस्साँ रही। उसका माड़ा-मोटा ग्यान भी रह्या। एक बर मनैं हरियाणवी मैं गीता छपी देखी। मेरी भौअना बणी अक् जैन साहित्य भी हरियाणवी मैं छपै तो हरियाणे के माणसाँ नैं लाभ हो। इसे भौअना तै मनैं 'हरियाणवी जैन कथाएँ' लिखीं। वैं कहाणी हरियाणवी पत्रिका 'हरिगंधा' मैं भी छपीं। लोगाँ नैं वे सुआद ले कै पड्ढी। फेर मेरी भौअना सास्तरां के हरियाणवी मैं अनुवाद की बणी। सिरी दसवेकालिक सुत्तर अर सिरी उत्तराध्ययन सुत्तर हरियाणवी मैं करण की मनैं कोसस करी। उनके कई हिस्से कई मैगजीन्नाँ मैं छपे। यो काम सन् १९९७-९८ मैं होया था। इस काम तै लोग मनैं हरियाणवी मैं अनुवाद करण आले की तरियाँ जाणन लाग्गे।

इसके बाद मैं ओर काम्माँ मैं लाग ग्या तो यो काम थोड़ा मंदा पड़ ग्या। ईब कई साल बीत्तें पाछै मनैं सोची अक् पहलाँ ए बहोत टल लिया सै, ईब तो यो काम पूरा होणा ए चहिए। फेर मनैं पहलाँ का अनुवाद पढ्या। उसकी हरियाणवी थोड़ी-सी मुसकल लाग्गी तो कोसस करी अक् वा आसान बण ज्या। सारे सुत्तर की भासा ठीक करी। हरियाणवी जाणन आलां की खात्तर तो यो काम का सै ए, हिन्दी पढणियाँ नैं भी यो पढण मैं सुआद आ सकै सै।

एक बात ध्यान राखण की या सै अक् सुत्तर मैं घणे सारे सबद पढण आलां के लिए कत्ती नये होया करैं। उनका मतलब सिमझण मैं उन्नैं मुस्कल आ सकै सै। या मुस्कल ना आवै, इसके लिए इसे सबद अर उनका हरियाणवी मैं अर्थ सुत्तर पूरा होएँ पाछै परिशिष्ट मैं दे दिया सै। इसे खास सबद हरियाणवी अनुवाद मैं भी ज्यूँ के त्यूँ राखे सैं, बदले कोन्याँ। राग हरियाणवी मैं भी राग ऐ लिख्या सै अर द्वेष हरियाणवी मैं भी द्वेष। इसे तरियां शस्त्र भी शस्त्र सै, प्रतिक्रमण भी प्रतिक्रमण, सचित भी सचित अर अचित भी अचित। एकाधी जंगा वे बोल्लण के तरीक्के तै ए लिख दिए सैं जैसे पृथ्वी नैं प्रिथवी अर वनस्पति नैं बनासपति लिखणा। इस तै हरियाणवी का तरीक्का अर सुभा ज्यूँ का त्यूँ बणा रह्वै, इसकी कोसस करी सै। इस संस्करण मैं मूल सुत्तर भी दिया सै। बिदवानां के सुआध्याय करण मैं यो काम का सै। इस काम मैं कोए गलती होई हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं। पूरी उमेद सै अक् यो अनुवाद हरियाणे आलां की गेलां ओरां के काम का भी होवैगा। सारे इसका लाभ ठावैंगे।

यो काम पूरा होण मैं कर्मठ संत ओजस्वी वक्ता श्री रमेश मुनि जी महाराज अर जगद्वल्लभ, युवा-चेतना-उद्बोधक मुनिरत्न श्री अमित मुनि जी महाराज का पूरा-पूरा सहयोग रह्या सै। संघ प्रवर्तिनी महासाध्वी जैन भारती श्री सुशील कुमारी जी महाराज की परेरणा भी बणी रही। मेरे किरपा-पात्तर हिन्दी के मान्ने होए बिदवान अर कवि-लेखक विनय विश्वास नैं इस सुत्तर का संपादन कर्‌या। उन्नैं बहोत-बहोत आसिरबाद। आखिर मैं जिनका भी सहयोग इस काम मैं मिल्या, उन सबकी खात्तर बहोत-बहोत साधुवाद।

—सुभद्र मुनि
आचार्य

सम्पादकीय-

श्री दशवैकालिक सूत्र और हरियाणवी जन के बीच सेतु है यह अनुवाद

विद्या वाचस्पति आगम रत्नाकर राष्ट्रसंत आचार्य श्री सुभद्र मुनि जी महाराज ने साहित्य-सेवा के विविधानेक महत्वपूर्ण कार्य समय-समय पर संपन्न किए हैं। इन कार्यों का अपना एक गौरवशाली इतिहास है। इस इतिहास का नवीनतम अध्याय है- श्री दशवैकालिक सूत्र का हरियाणवी अनुवाद। यह अनुवाद मैंने देखा है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता मुझे लगी इसकी सहजता। इसकी भाषा न तो इतनी गूढ़ है कि इसे समझने के लिए हरियाणवी पांडित्य की आवश्यकता पड़े और न ही इस सीमा तक सरल कि आगम के रहस्य इसमें व्यक्त ही न हो सकें। प्रस्तुत अनुवाद की भाषा हरियाणवी में आगम को पूरी तरह व्यक्त करने में समर्थ ऐसी भाषा है, जो साधारण हरियाणवी जानने वालों तक सहजता से पहुँच सके। श्री दशवैकालिक सूत्र और साधारण हरियाणवी जन के बीच सेतु है यह भाषा। भगवान् महावीर ने जनभाषा में देशना दी थी। इसलिए कि आत्मकल्याण पर सबका सहज अधिकार हो। यही प्रयोजन प्रस्तुत अनुवाद का भी है।

जनता अनेक भाषाओं और बोलियों का प्रयोग करती है। अधिक से अधिक जनता तक आगम सहजता से पहुँचें, इसके लिए अधिक से अधिक भाषाओं और बोलियों में उनकी प्रस्तुति अपेक्षित है। गुजराती, मराठी, जर्मन, अंग्रेज़ी आदि अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में श्री दशवैकालिक सूत्र अनूदित हो चुका है। हरियाणवी में इसका अनुवाद पहली बार हुआ है, यह हर्ष का विषय है। हर्ष का विषय यह भी है कि अनुवाद की भाषा सहज है। समर्थ है। सुरुचिपूर्ण है। आकर्षक है। आगम का मर्म व्यक्त करने वाली है।

भाषा और बोली में अंतर होता है। लिखी जाने योग्य होते हुए भी बोली प्रायः लिखी नहीं जाती। प्रयोग के नियम होते हुए भी उसका सुनिश्चित व्याकरण नहीं होता। उसके साहित्य की लिखित परम्परा भी सुपुष्ट नहीं होती परंतु इस परम्परा का आधार होती है वह। दुनिया की ऐसी कोई भाषा नहीं, जिसके मूल

में कोई बोली न हो। एक या अनेक बोलियों के आधार पर ही भाषा का निर्माण और विकास होता है। हिन्दी जैसी लगभग पूरी तरह बोलने के आधार पर लिखी जाने वाली भाषा के मामले में तो यह और भी ज़रूरी सच है।

हरियाणवी, हिन्दी की एक सशक्त बोली है। हरियाणवी का अपना साहित्य भी है पर उसकी सुपुष्ट लिखित परम्परा नहीं है। साहित्य किसी बोली को भाषा का रूप कैसे देता है, इसका एक उदाहरण ब्रज और अवधी में सूर और तुलसी का साहित्य है। सूर-तुलसी जिस समय लिख रहे थे, उस समय ब्रज-अवधी हिन्दी की बोलियाँ होते हुए भी भाषाएँ कहलाती थीं। अनेक स्थानों पर आज भी ब्रज भाषा या अवधी भाषा का प्रयोग होता है। हरियाणवी में साहित्य की लिखित परम्परा बने तो वह भी भाषा हो सकती है। प्रस्तुत अनुवाद इस संभावना की ओर एक प्रबल संकेत भी है। आचार्यप्रवर श्री सुभद्र मुनि जी महाराज इससे पूर्व भी हरियाणवी में जैन कहानियाँ प्रस्तुत कर चुके हैं।

आचार्य श्री की हरियाणवी हिन्दी के निकट की सहज हरियाणवी है। हरियाणवी अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग अंदाज़ से बोली जाती है। हरियाणवी का जो रूप रोहतक ज़िले में है, वही करनाल या हिसार ज़िले में नहीं है। अलग-अलग जगहों की बोली में उसी तरह अंतर है, जिस तरह अलग-अलग व्यक्तियों की बोली में। 'मतना जा' को 'मन्ना जा' भी बोला जाता है। दोनों ही रूप ठीक हैं। आचार्य श्री की हरियाणवी हिन्दी के समीप है। इससे उसकी पहुँच का दायरा बड़ा होता है। वह अपेक्षाकृत अधिक लोगों को समझ आती है।

हरियाणवी को आचार्य श्री ने अनुवाद के योग्य न केवल समझा है अपितु बनाया भी है। यह एक बोली में भाषा की क्षमता देखने और भरने वाला कार्य है। बोली को लिखित रूप देने का मार्ग तैयार करने वाला कार्य है। निस्संदेह यह कार्य ऐतिहासिक है। हरियाणवी साहित्य की जब कभी चर्चा होगी, आचार्य श्री के उल्लेख बिना पूरी नहीं होगी। बत्तीस सूत्रों में 'दशवैकालिक' मूल सूत्र है। इसका प्रस्तुत अनुवाद हरियाणवी के लिखित साहित्य में मूल योगदान है। आचार्य प्रवर का इसके लिए भी हार्दिक वंदन और अभिनंदन!

-डॉ. विनय विश्वास

अनुक्रम

- सरधा-भरी भेंट (*iii*)
- प्रकाशन के लिए पर्व जैसा सुअवसर है आगम प्रकाशन (*v*)
- भीतर की बात (*vi*)
- श्री दशवैकालिक सूत्र और हरियाणवी जन के बीच सेतु है यह अनुवाद (*x*)

1. पहला पाठ : फूल 15
2. दूसरा पाठ : साद्धु-धरम की नींव 17
3. तीसरा पाठ : साद्धु के 'ना करण के' काम 21
4. चौथा पाठ : छह काय-जीव 27
5. पाँचवाँ पाठ : पिण्डैषणा : पहला हिस्सा 55
   पाँचवाँ पाठ : पिण्डैषणा : दूसरा हिस्सा 85
6. छठा पाठ : महाचार कथा 101
7. सातवाँ पाठ : सुवाक्य शुद्धि 121
8. आठवाँ पाठ : आचार प्रणिधि 139
9. नौवाँ पाठ : बिनय-समाधी : पहला भाग 159
   नौवाँ पाठ : बिनय-समाधी: दूसरा भाग 169
   नौवाँ पाठ : बिनय-समाधी: तीसरा भाग 177
   नौवाँ पाठ : बिनय-समाधी: चौत्था भाग 183
10. दसवाँ पाठ : सभिक्सु 189
    पहली चूलिका: रतिवाक्या 199
    दूसरी चूलिका : विविक्तचर्या 209
    - परिशिष्ट-1
      दशवैकालिक के सुभाषित 216
    - परिशिष्ट-2
      दशवैकालिक के पारिभाषिक शब्द 228
    - अस्वाध्याय काल 235
    - सुभद्र साहित्य 238

सिरी दसवेकालिक सुत्तर

अह दुमपुप्फिया नामं पढमं अज्झयणं

मूल : **धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।**
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो॥1॥

छाया : धर्मः मङ्गलमुत्कृष्टम्, अहिंसासंयमस्तपः।
देवा अपि तं नमस्यन्ति, यस्य धर्मे सदा मनः॥

मूल : **जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं।**
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं॥2॥

छाया : यथा द्रुमस्य पुष्पेषु, भ्रमर आपिबति रसम्।
न च पुष्पं क्लामयति, स च प्रीणाति (प्रीणयति) आत्मानम्॥

मूल : **एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।**
विहंगमा व पुप्फेसु, दाण-भत्तेसणे रया॥3॥

छाया : एवमेते श्रमणा मुक्ताः, ये लोके सन्ति साधवः।
विहङ्गमा इव पुष्पेषु, दानभक्तैषणे रताः॥

मूल : **वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मइ।**
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा॥4॥

छाया : वयं च वृत्तिं लप्स्यामहे, न च कोऽप्युपहन्यते।
यथाकृतेषु रीयन्ते, पुष्पेषु भ्रमरा यथा॥

मूल : **महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।**
नाणापिण्डरया दन्ता, तेण वुच्चन्ति साहुणो॥5॥
–त्ति बेमि

छाया : मधुकरसमा बुद्धाः, ये भवन्ति अनिश्रिताः।
नानापिण्डरता दान्ताः तेन उच्यन्ते साधवः॥
–इति ब्रवीमि।

॥ पढमं दुमपुप्फियज्झयणं सम्मत्तं ॥

पहला पाठ : फूल

1. धरम सब तै बड्डा मंगल (हो) सै। यू धरम अहिंसा, संजम अर तप के रूप मैं सै। जिस (माणस) का जी धरम मैं टिक जाया करै, उसनै द्यौता भी निमस्कार कर्या करैं।

2. भौंरा (जिस तरियाँ) फूल्लाँ का थोड़ा-थोड़ा रस पीया करै। रस पींदा होया ओ फूल नैं दुखी कोन्या कर्या करदा, उसका नुकसान भी कोन्या कर्या करदा अर अपणा पेट भी भर लिया करै।

3. दुनिया मैं धन-माया के त्याग्गी साद्धु (उस्सै तरियाँ) दाता का दिया होया भोजन-पाणी लिया करैं, भौंरा जिस तरियाँ फूल्लाँ तै रस लिया करै।

4. हम (साद्धु) भोजन-पाणी इस ढंग तै लिया करैं कि किस्से नै भी ना कोये दुख हो अर ना नुकसान। भौंरा जिस तरियाँ फूल्लाँ तै थोड़ा-थोड़ा रस लिया करै, उस्सै तरियाँ हम भी गिरस्थाँ तै, जिसा बणा हो, उसा ए भोजन-पाणी ले लिया करैं।

5. भौंरे की तरियाँ जो ज्ञान्नी साद्धु किसे के आसरे कोन्या रहते अर कई घराँ तै मिले होये भोजन-पाणी मैं राजी रह्या करैं, वे अपणे मन अर इंदरियाँ पै काबू करण आले होया करैं। अपणे इन गुणाँ तै ए वे साद्धु कुहाया करैं।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

॥ फूल नाम का पहला पाठ समाप्त ॥

अह सामण्णपुव्विया बिइयं अज्झयणं

मूल : **कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए।**
पए पए विसीदंतो, संकप्पस्स वसं गओ॥1॥

छाया : कथं नु कुर्याच्छ्रामण्यम्, यः कामान्न निवारयेत्।
पदे पदे विषीदन्, सङ्कल्पस्य वशं गतः॥

मूल : **वत्थ-गंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य।**
अच्छन्दा जे न भुंजन्ति, न से चाइत्ति वुच्चइ॥2॥

छाया : वस्त्रं गन्धमलङ्कारं, स्त्रियः शयनानि च।
अच्छन्दा ये न भुञ्जंते, न ते त्यागिन इत्युच्यन्ते॥

मूल : **जे य कन्ते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठीकुव्वइ।**
साहीणे चयई भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चइ॥3॥

छाया : यश्च कान्तान् प्रियान् भोगान्, लब्धान् विपृष्ठीकरोति।
स्वाधीनान् त्यजति भोगान्, स खलु त्यागीत्युच्यते॥

मूल : **समाइ पेहाइ परिव्वयंतो, सिया मणो निस्सरइ बहिद्धा।**
न सा महं नो वि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं॥4॥

छाया : समया प्रेक्षया परिव्रजतः, स्यात् मनो निःसरति बहिः।
न सा मम नाप्यहमपि तस्याः, इत्येवं तस्या विनयेद् रागम्॥

मूल : **आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाही कमियं खु दुक्खं।**
छिंदाहि दोसं विणइज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए॥5॥

छाया : आतापय त्यज सौकुमार्यम्, कामान् क्राम क्रान्तं खलु दुःखम्।
छिन्धि द्वेषं विनयेद् रागम्, एवं सुखी भविष्यसि सम्पराये॥

मूल : **पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं।**
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे॥6॥

छाया : प्रस्कन्दन्ति ज्वलितं ज्योतिषम्, धूमकेतुं दुरासदम्।
नेच्छन्ति वान्तं भोक्तुम्, कुले जाता अगन्धने॥

दूसरा पाठ : साद्धु-धरम की नींव

1. संसारी सुक्खाँ मैं जी लगाणा जो कोन्या छोड़दा, ओ अपणे साद्धु-धरम नैं क्यूकर पालैगा? इसा माणस भोग्गा के बस हो कै कई-कई बै (बार) दुखी होन्दा रह्या करै।

2. सुथरे कपड़ों, खुसबूदार चीजों, गहणों, लुगाई अर मुलाम बिछौणे (वगैरा) का सुख जो मजबूर होण के कारण नूहीं ले सकदा, ओ त्याग्गी कोन्या होया करदा।

3. त्याग्गी तो ओ होया करै जो अपणी मरजी का अर सुक्खाँ की सारी चीजाँ का मालिक होते-सुहात्ते भी आच्छे लागण आले सुक्खाँ तै मुँह फेर लिया करै। ओ अपणी मरजी तै ए इनका त्याग कर दिया करै।

4. समता का ध्यान करदे होये जै कदे जी (किसे लुगाई के मोह मैं फँस कै) संजम तै भटक ज्या तो साद्धु न्यूँ सोच्चै कि या मेरी नूहीं सै अर मैं इसका नूहीं सूँ। न्यूँ सोच कै साद्धु उसकी मोह-ममता तै अपणे जी नैं दूर हटा ले।

5. घणा नाजुक मत बण! अपणे-आप नैं तपा! जै (अगर) चाहना दूर हटा दी तो समझ ले कि सारा दुख अर सारा कलेस मिट ग्या। द्वेष (मनमुटाव) की भौना अर राग (लगाव/परेम) की भौअना छोड देगा तो तू इस अर उस, दोन्नों दुनिया मैं, सुखी हो ज्यागा।

(रथनेम्मी नाम का एक साद्धु था। ओ राजीमती नाम की एक सती नै देख कै उसके मोह मैं फँस ग्या तो राजीमती उसनैं समझात्ती होई बोल्ली-)

6. अगंधन (नाम के) कुल मैं जाम्मा होया साँप बलदी होई आग मैं बड़ कै मरणा तो मंजूर कर लिया करै पर थूकें पाच्छै अपणा जहर उलटा पीण की कोन्या सोचा करता (थूक्या होया चाट्या कोन्या करदा)।

मूल : धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीविय-कारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे॥7॥

छाया : धिगस्तु तेऽयशस्कामिन्! यस्त्वं जीवितकारणात्।
वान्तमिच्छस्यापातुम्, श्रेयस्ते मरणं भवेत्॥

मूल : अहं च भोगरायस्स, तं चऽसि अंधगवण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर॥8॥

छाया : अहं च भोगराजस्य, त्वं चासि अन्धकवृष्णेः।
मा कुले गन्धनौ भूव, संयमं निभृतश्चर॥

मूल : जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ।
वायाविद्धोव्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि॥9॥

छाया : यदि त्वं करिष्यसि भावम्, या या द्रक्ष्यसि नारीः।
वाताविद्ध इव हडः, अस्थितात्मा भविष्यसि॥

मूल : तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासियं।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ॥10॥

छाया : तस्या असौ वचनं श्रुत्वा, संयतायाः सुभाषितम्।
अङ्कुशेन यथा नागः धर्मे सम्प्रतिपातितः॥

मूल : एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो॥11॥

–त्ति बेमि।

छाया : एवं कुर्वन्ति सम्बुद्धाः, पण्डिताः प्रविचक्षणाः।
विनिवर्त्तन्ते भोगेभ्यः, यथाऽसौ पुरुषोत्तमः॥

–इति ब्रवीमि।

॥ बिइयं सामण्णपुव्वियज्झयणं समत्तं॥

7. रै नाम अर इज्जत चाह्ण आले! तेरी या जिंदगी (एक दिन) खतम हो ज्यागी। तनै धिक्कार सै कि तू संसारी सुक्खाँ की खातर करी होई उलटी (कै) भी पीणा चाह्वै सै? तेरी इस जिंदगी तै तो मौत आच्छी।

8. मैं (राजीमती) भोजराज की बेटी सूँ। तू (रथनेमि) अंधकवृष्णि का बेटा सै। हम गंधन (नाम के) कुल के साँप की तरियाँ छोड्डे होये संसारी सुक्खाँ नैं (थूक नैं) फेर भोग्गण आले (चाट्टण आले) ना बणैं। तू अपणे मन नैं संजम मैं टिका कै रह!

9. तू जिस भी लुगाई नैं देक्खैगा, उसतै ए जी लावैगा (उसके हे पाछै बावला होवैगा) तो बेकाबू हो कै 'हड' नाम की बनासपति की तरियाँ हवा के जोर की गेल्लां हे हालदा रह्वैगा।

10. संजम मैं टिकी होई उस राजीमती के ये आच्छे बोल सुण कै रथनेमि संजम मैं उसे तरियाँ टिक ग्या जिस तरियाँ अंकुस लाग्गण तै हाथी काबू मैं आ (कै टिक) जाया करै।

11. सही नैं सही अर गलत नैं गलत समझण आले ज्ञान्नी होया करैं। वे पाप तै दूर रहण आले होया करैं। वे संसारी सुक्खाँ तै उसै तरियाँ छूट जाया करैं जिस तरियाँ महापुरुस (रथनेमि) छूट गे।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

॥ साद्धु-धरम की नींव नाम का दूसरा पाठ समाप्त ॥

अह खुड्डयायारकहा नामं
तइयं अज्झयणं

मूल : **संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं।**
तेसिमेयमणाइण्णं, निग्गंथाणं-महेसिणं।।1।।

छाया : संयमे सुस्थितात्मनाम्, विप्रमुक्तानां त्रायिणाम्।
तेषामेतदनाचरितम्, निर्ग्रन्थानां महर्षीणाम्।।

मूल : **उद्देसियं कीयगडं, नियागमभिहडाणि य।**
राइ-भत्ते सिणाणे य, गंध-मल्ले य वीयणे।।2।।

छाया : औद्देशिकं क्रीतकृतं, नियोगिकमभ्याहृतानि च।
रात्रिभक्तं स्नानं च, गन्धमाल्ये च वीजनम्।।

मूल : **संनिही गिहिमत्ते य, रायपिंडे-किमिच्छए।**
संबाहणा दंत-पहोयणा य, संपुच्छणा देहपलोयणा य।।3।।

छाया : सन्निधिः गृह्यमत्रं च, राजपिण्डः किमिच्छकः।
सम्बाधनं दन्तप्रधावनं च, सम्प्रश्नः देहप्रलोकनं च।।

मूल : **अट्ठावए य नालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए।**
तेगिच्छं पाणहा पाए, समारंभं च जोइणो।।4।।

छाया : अष्टापदं च नालिका, छत्रस्य च धारणमनर्थाय।
चैकित्स्यमुपानहौ पादयोः, समारम्भाश्च ज्योतिषः।।

तीसरा पाठ :
साद्धु के 'ना करण के' काम

1. संजम (धरम) मैं आच्छी तरियाँ टिके होये साद्धु भीत्तर अर बाहर के धन-माया के बंधनाँ तै दूर रह्या करैं। वे छह तरियाँ के सरीर (प्रिथवी, पाणी, आग, हवा, बनासपति अर हालण-चालण) आले जीवाँ नैं बचाणिये होया करैं। उन सच्चे साद्धुआँ नैं जो काम नूहीं करणे, वे आग्गै बताए सैं।

2. 1. साद्धु की खात्तर बणाया होया भोजन-पाणी लेणा, 2. साद्धु की खात्तर मोल ल्याया होया भोजन-पाणी लेणा, 3. साद्धु तै न्योत्ता दे कै, दिया जाण आला भोजन-पाणी लेणा, 4. साद्धु की खात्तर दूसरी जंगा तै लाया होया भोजन-पाणी लेणा, 5. रात नैं खाणा-पीणा, 6. नहाणा, 7. खसबूदार चीजाँ का लेप कराणा या सूंघणा, 8. माला पहरणा, 9. पंखे तै हवा करणा-कराणा।

3. 10. खाण-पीण की चीज कट्ठी करकै राखणा (रात नैं बासी राखणा), 11. गिरस्थी के बरतनाँ मैं खाणा-पीणा, 12. राजाँ कै बणा होया बहोत सुआद अर ताक्कतबर भोजन-पाणी लेणा, 13. साद्धु की बाबत बूझ कै सदाबरत या दान के भोजन-पाणी मैं तै दिया होया भोजन-पाणी लेणा, 14. मालिस करणा, 15. मंजन या दात्तण तै दाँत साफ करणा, 16. गिरस्थियाँ की राजी-खुसी बूझणा अर उसमैं जी लाणा, 17. सजावट की खात्तर सीसे मैं सरीर देखणा।

4. 18. जुआ अर सतरंज खेलणा, 19. पासे खेलणा या किसे और तरियाँ का जुआ खेलणा, 20. छतर या छतरी लाणा, 21. इलाज कराणा, 22. जूत्ते (चप्पल) पहरणा, 23. आग जलाणा।

मूल : **सिज्जायर - पिंडं च, आसंदीपलियंकए।**
गिहंतर निसिज्जा य, गायस्सुव्वट्टणाणि य॥5॥

छाया : शय्यातरपिण्डश्च, आसन्दीपर्यङ्कौ।
गृहान्तरनिषद्या च, गात्रस्योद्वर्त्तनानि च॥

मूल : **गिहिणो-वेयावडियं, जाइय आजीववत्तिया।**
तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य॥6॥

छाया : गृहिणो वैयावृत्यम्, जात्याजीववृत्तिता।
तप्तानिर्वृतभोजित्वम्, आतुरस्मरणानि च॥

मूल : **मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखंडे अनिव्वुडे।**
कंदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए॥7॥

छाया : मूलकः शृङ्गबेरं च, इक्षुखण्डमनिर्वृतम्।
कन्दो मूलं च सचित्तम्, फलं बीजञ्चामकम्॥

मूल : **सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमालोणे य आमए।**
सामुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य आमए॥8॥

छाया : सौवर्चलं सैन्धवं लवणम्, रूमालवणञ्चामकम्।
सामुद्रं पांशुक्षारश्च, कृष्णलवणञ्चामकम्॥

मूल : **धूवणे त्ति वमणे य, वत्थीकम्म विरेयणे।**
अंजणे दंतवणे य, गायब्भंग-विभूसणे॥9॥

छाया : धूपनमिति वमनं च, वस्तिकर्म विरेचनम्।
अञ्जनं दन्तवर्णश्च, गात्राभ्यङ्गविभूषणे॥

मूल : **सव्वमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं।**
संजमंमि अ जुत्ताणं, लहुभूय-विहारिणं॥10॥

छाया : सर्वमेतदनाचीर्णम्, निर्ग्रन्थानां महर्षीणाम्।
संयमे च युक्तानाम्, लघुभूतविहारिणाम्॥

मूल : **पंचासव-परिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया।**
पंच निग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जु-दंसिणो॥11॥

छाया : पञ्चास्रवपरिज्ञाताः, त्रिगुप्ताः षट्सु संयताः।
पञ्चनिग्रहणा धीराः, निर्ग्रन्था ऋजुदर्शिनः॥

5. 24. उसके घर तै भोजन-पाणी लेणा, जिसकै रात नैं ठहरणा होया हो, 25. चौंकी, मूढे जिसी चीजाँ पै बैठणा, 26. पलंग, खाट वगैरा पै सोणा, 27. भोजन-पाणी लेते होये गिरस्थी के घर मैं बैठणा, 28. सरीर पै मटणा मसलणा।

6. 29. गिरस्थी की सेवा करणा, 30. साद्धु बणन तै पहलाँ के तरीकाँ तै भोजन-पाणी लेणा, 31. आधी काच्ची रही होई सचित (जिसमें जीव हों, इसी) चीज लेणा, 32. दुखी हो ज्या तो साद्धु बणन तै पहलाँ के सुख-भोग याद करणा।

7. 33. सचित या काच्ची (जिसमें जीव हों, इसी) मूली, 34. सचित अदरक, 35. सचित गँडेरी, 36. सचित कंद, 37. सचित मूल, 38. सचित फल, 39. सचित बीज, ये सारी चीज लेणा अर खाणा।

8. 40. सचित (जिसमें जीव हों, इसा) नूण, 41. सचित सैंधा नूण, 42. सचित रूमा नूण, 43. समंदर तै बणा होया सचित नूण, 44. खारी माट्टी तै निकला सचित नूण, 45. सचित काला नूण, ये सारी तरियाँ के नूण लेणा अर खाणा।

9. 46. बीड़ी-सिगरट-हुक्का वगैरा पीणा या कपड़े-लत्ताँ तै धूप (बत्ती) दिखाणा, 47. (जाण कै) उलटी करणा, 48. नीचे (मल अस्थान) तै तेल, दुआई वगैरा चढाणा, 49. पेट साफ करण खात्तर दुआई लेणा, 50. आँखाँ मैं स्याही डालणा, 51. मंजन करणा, 52. मालिस करणा, 53. सरीर की सजावट करणा।

10. संजम मैं पूरा ध्यान लाण आले साच्चे अर हवा की तरियाँ अजाद (हलके) साद्धु ये (ऊपर बताए होये) सारे काम कोन्या कर्‌या करदे। ये काम 'ना करण के' कुहाया करैं।

11. सरल सुभा आले ज्ञान्नी साधु संजम मैं टिके रह्या करैं। वे पाँच आस्रवाँ नैं (जिन रस्ताँ तै पाप-करम आतमा मैं आया करैं, उननैं) जाणन अर रोक्कण आले होया करैं। तीन गुप्तियाँ तै गुप्त (मजबूत) होया करैं। छह तरियाँ के सरीर आले जीवाँ नैं बचाणिये अर पाँच इंदरियाँ (कान, आँख, नाक, जीभ अर खाल) पै काबू राक्खणिये होया करैं।

मूल : आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया॥12॥

छाया : आतापयन्ति ग्रीष्मेषु, हेमन्तेष्वप्रावृताः।
वर्षासु प्रतिसंलीनाः, संयताः सुसमाहिताः॥

मूल : परीसह-रिऊदंता, धूअमोहा जिइंदिया।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो॥13॥

छाया : परीषहरिपुदान्ताः, धुतमोहा जितेन्द्रियाः।
सर्वदुःखप्रहाणार्थम्, प्रकाम्यन्ति महर्षयः॥

मूल : दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य।
केइऽत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झन्ति नीरया॥14॥

छाया : दुष्कराणि कृत्वा दुःसहानि सहित्वा च।
केचिदत्र देवलोकेषु, केचित् सिद्ध्यन्ति नीरजस्काः॥

मूल : खवित्ता पुव्व-कम्माइं, संजमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुपत्ता, ताइणो परिणिव्वुडा॥15॥
-त्ति बेमि

छाया : क्षपयित्वा पूर्वकर्माणि, संयमेन तपसा च।
सिद्धिमार्गमनुप्राप्ताः, त्रायिणः परिनिर्वृताः॥
-इति ब्रवीमि।

॥ तइयं खुड्डयायारकहा अज्झयणं सम्मत्तं॥

12. आच्छी तरियाँ समाधि मैं रहण आले अर ग्यान की साधना मैं लाग्गे होये संजमी साद्धु गरमी हो तो धूप मैं तप्या करैं, सरदी हो तो उघाड़े (मामूली कपड़्याँ मैं) रह्या करैं अर बरसात हो तो अपणे आप्पे नैं समेट कै, अपणे आणे-जाणे नैं कती थोड़ा करकै (एक्कै जंगा) रह्या करैं।

13. अपणी इंदरियाँ नैं जीत्तणिये साद्धु परीषहाँ (साधना के रस्ते मैं आण आली रुकावटाँ) के दुसमनाँ नैं जीत लिया करैं। वे मोह अर अग्यान तै छूट ज्याया करैं। सारे दुक्खाँ नैं मेट्टण खात्तर होंसले तै मेहनत कर्‌या करैं।

14. करड़ी साधना करदे होये (वे साद्धु) करड़े दुख बरदास कर्‌या करैं। उनमैं तै घनखरे साधु सरीर छोड कै देवलोक मैं पैदा होया करैं अर थोड़े-से पूरी तरियाँ सुद्ध हो कै (मोक्स मैं) सिद्ध हो जाया करैं।

15. संजम अर तप तै, बँधे होये, करम मेट कै अपणे-आपे का अर और (छहकाय के) जीवाँ का उद्धार करणिये साधुआँ नैं मुकती की राही मिल जाया करै अर वे मुकत हो जाया करैं।

-न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

॥ साद्धु के 'ना करण के' काम नाम का तीसरा पाठ समाप्त ॥

अह छज्जीवणिया नामं चउत्थं अज्झयणं

मूलः सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, सुअक्खाया, सुपण्णत्ता, सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती॥1॥

छायाः श्रुतं मया आयुष्मन्! तेन भगवता एवमाख्यातम्–इह खलु षड्जीवनिका नामाध्ययनं श्रमणेन भगवता महावीरेण काश्यपेन प्रवेदिता, स्वाख्याता, सुप्रज्ञप्ता, श्रेयो मेऽध्येतुमध्ययनं धर्मप्रज्ञप्तिः॥

मूलः कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती॥2॥

छायाः कतरा खलु सा षड्जीवनिका नामाध्ययनं श्रमणेन भगवता महावीरेण काश्यपेन प्रवेदिता, स्वाख्याता, सुप्रज्ञप्ता, श्रेयो मेऽध्येतुमध्ययनं धर्मप्रज्ञप्तिः।

मूलः इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, सुअक्खाया, सुपण्णत्ता, सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती। तं जहा–पुढवीकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, तसकाइया॥3॥

छायाः इमा खलु सा षड्जीवनिका नामाध्ययनं श्रमणेन भगवता महावीरेण काश्यपेन प्रवेदिता, स्वाख्याता, सुप्रज्ञप्ता, श्रेयो मेऽध्येतुमध्ययनं धर्मप्रज्ञप्तिः, तद्यथा–पृथिवीकायिकाः अप्कायिकाः, तेजस्कायिकाः, वायु-कायिकाः, वनस्पतिकायिकाः, त्रसकायिकाः।

मूलः पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं॥4॥

छायाः पृथिवीचित्तवत्याख्याता अनेकजीवा पृथक्सत्त्वा अन्यत्र शस्त्रपरिणतायाः।

चौथा पाठ : छह काय-जीव

1. हे पुन्न आतमा! मनै सुण्या सै कि गुरू-भगवनाँ नैं न्यूँ कह्या- कास्यप गोत आले सरमण भगवान महावीर नैं सीधे अपणे ग्यान मैं देख कै 'षड्जीवनिका' (छह तरियाँ के सरीर आले जीवाँ की जून) नाम का पाठ आच्छी अर साच्ची तरियाँ फरमाया सै। इस पाठ का नाम 'धर्म प्रज्ञप्ति' (धरम की सच्चाई बताण आला) भी सै। इसका ग्यान मेरी आतमा का भला करणिया सै।

2. ओ 'षड्जीवनिका' नाम का पाठ कोण-सा सै जो सरमण भगवान् महावीर नैं इस तरियाँ फरमाया सै अर जिसका ग्यान लेणा मेरी आतमा का भला करणिया सै?

3. यो भगवान् महावीर का फरमाया होया मेरी आतमा का भला करणिया 'षड्जीवनिका' नाम का पाठ इस तरियाँ सै-

(छह तरियाँ के सरीर आले जीव न्यूँ-न्यूँ सैं) प्रिथवीकाय (माटी के सरीर आले), अप्काय (पाणी के सरीर आले), तेजस्काय (आग के सरीर आले), वायुकाय (हवा के सरीर आले), वनस्पतिकाय (पेड-पोद्धाँ के सरीर आले) अर त्रस (हालण-चालण आले।)

4. किसे शस्त्र (जी खतम करण आली कोये चीज) लाग्गण तै ना बदलै तो धरती (माटी) सचित (जिसमें जीव हों, इसी) बताई सै। उसके आसरे (भीत्तर) घणे सारे जीव रह्या करैं। उनका न्यारा-न्यारा जी होया करै।

मूलः आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं॥5॥

छाया : आपः चित्तवत्यः आख्याताः अनेकजीवाः पृथक्सत्त्वाः अन्यत्र शस्त्र-परिणताभ्यः।

मूलः तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेग जीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं॥6॥

छाया : तेजः चित्तवदाख्यातम् अनेकजीवं पृथक्-सत्त्वम् अन्यत्र शस्त्र-परिणतात्।

मूलः वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं॥7॥

छाया : वायुः चित्तवानाख्यातः अनेक जीवः पृथक्सत्त्वः अन्यत्र शस्त्र-परिणतात्।

मूलः वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेग जीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ- परिणएणं। तं जहा—अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा, संमुच्छिमा तणलया, वणस्सइकाइया, सबीया चित्तमंत-मक्खाया अणेग जीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं॥8॥

छाया : वनस्पतिः चित्तवानाख्यातः अनेकजीवः पृथक्सत्त्वः तद्यथा—अग्रबीजाः, मूलबीजाः, पर्वबीजाः, स्कन्धबीजाः, बीजरुहाः, संमूर्च्छिमाः, तृणलताः, वनस्पतिकायिकाः, सबीजाः चित्तवन्तः आख्याताः अनेकजीवाः पृथक्सत्त्वाः अन्यत्र शस्त्रपरिणतेभ्यः।

मूलः से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा। तं जहा—अंडया, पोयया, जराउया, रसया, संसेइमा, समुच्छिमा उब्भिया, उववाइया, जेसिं केसिंचि पाणाणं अभिक्कंतं, पडिक्कंतं, संकुचियं, पसारियं, रुयं, भंतं, तसियं, पलाइयं, आगइगइ-विन्नाया, जे य कीडपयंगा, जा य कुंथुपिवीलिया, सव्वे बेइंदिया, सव्वे तेइंदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पंचिंदिया, सव्वे तिरिक्ख-जोणिया, सव्वे नेरइया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा, सव्वे पाणा, परमाहम्मिया। एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाउत्ति पवुच्चइ॥9॥

5. किसे शस्त्र लाग्गण तै ना बदलै तो पाणी सचित बताया सै। उसके आसरे घणे सारे जीव रह्या करैं। उनका न्यारा-न्यारा जी होया करै।

6. किसे शस्त्र लाग्गण तै ना बदलै तो आग सचित बताई सै। उसके आसरे घणे सारे जीव रह्या करैं। उनका न्यारा-न्यारा जी होया करै।

7. किसे शस्त्र लाग्गण तै ना बदलै तो हवा सचित बताई सै। उसके आसरे घणे सारे जीव रह्या करैं। उनका न्यारा-न्यारा जी होया करै।

8. किसे शस्त्र लाग्गण तै ना बदलै तो बनास्पती (हरियाली) सचित बताई सै। उसके आसरे घणे सारे जीव रह्या करैं। उनका न्यारा-न्यारा जी होया करै। बनास्पती इतणी तरियाँ की होया करै—अग्र-बीज (जिसके सिरे पै बीज होया करैं), मूल-बीज (जिनकी जड़ बीज होया करै जैसे कंद), पर्व-बीज (जिनके पोरवे बीज होया करैं जैसे गन्ना), स्कंध-बीज (जिनके कंधे बीज होया करैं जैसे थूहर या कैंथ), बीज-रूह (जो बीज की हे सिकल मैं पैदा होया करैं जैसे गेहूँ वगैरा), सम्मूर्छिम (जो बिना बीज के खाल्ली माटी-पाणी तै हे पैदा हो जाया करैं), तृण (घास, दूब) अर लता (बेल)। (ये पाँच तरियाँ के जीव स्थावर—हालण-चालण की ताकत ना राखणिये, होया करैं।)

9. इनके अलावा घनखरे त्रस (हालण-चाल्लण आले) जीव इस तरियाँ होया करैं—अण्डज (अण्डे तै पैदा होण आले जैसे मोर), पोतज (बालक की सिकल मैं पैदा होण आले जैसे हाथी), जरायुज (पैदा होते होये जिनकी देही पै झिल्ली लिपटी रह्या करै जैसे गाय-भैंस), संस्वेदज (पसीन्ने तै पैदा होण आले जैसे जूँ), सम्मूर्छनज (बिना माँ-बाप के हवा-पाणी तै ए पैदा होण आले जैसे कीड़ी, माक्खी, मच्छर), उद्भिज (धरती फोड़ कै पैदा होण आले जैसे पतंगा) अर औपपातिक (अपणे-आपै ए पैदा हो जाण आलें) जैसे देवलोक अर नरक के जीव। (इनके माँ-बाप नहीं होते इसलिए

छाया: अथ ये पुनरिमे अनेके बहव: त्रसा: प्राणिन:। तद्यथा—अण्डजा:, पोतजा:, जरायुजा:, रसजा:, संस्वेदजा:, संमूर्च्छनजा:, उद्भिज्जा:, औपपातिका:, येषां केषाञ्चित् प्राणिनाम् अभिक्रान्तम्, प्रतिक्रान्तम्, संकुचितम्, प्रसारितम्, रुतम्, भ्रान्तम्, त्रस्तम्, पलायितम्, आगतिगतिविज्ञातार:, ये च कीटपतङ्गा:, याश्च कुन्थुपिपीलिका:, सर्वे द्वीन्द्रिया: सर्वे त्रीन्द्रिया:, सर्वे चतुरिन्द्रिया: सर्वे पञ्चेन्द्रिया:, सर्वे तिर्यग्योनय:, सर्वे नैरयिका:, सर्वे मनुजा:, सर्वे देवा:, सर्वे प्राणा: परमधर्माण:। एष खलु षष्ठो जीवनिकाय: त्रसकाय इति प्रोच्यते।

मूल: इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दंडं समारंभिज्जा, नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा, दंडं समारंभंतेऽवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि॥10॥

छाया: इत्येतेषां षण्णां जीवनिकायानां नैव स्वयं दण्डं समारभेत्, नैवान्यै: दण्डं समारम्भयेत्, दण्डं समारभमाणानप्यन्यान् न समनुजानीयात्, यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन, न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रमामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि।

मूल: पढमे भंते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं। सव्वं भंते! पाणाइवायं पच्चक्खामि। से सुहुमं वा, बायरं वा, तसं वा, थावरं वा, नेव सयं पाणे अइवाइज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंतेवि अन्ने न समणुजाणामि; जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। पढमे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं॥11॥

ये गर्भज नूहीं कुहाते अर इनकै मन होया करै इसलिए ये सम्मूर्च्छिम नूहीं कुहाते।) इन साराँ की गिणती छठे जीवनिकाय मैं होया करै।

कई जीव आणा-जाणा (आग्गै जाणा, पाच्छै आणा, सुकड़णा, फैलणा, अवाज करणा, हालणा, डरणा, भाजणा जैसी किरिया) कर्‌या करैं। वे तूरस (हालण-चाल्लणिये) जीव होया करैं। वे कीट, पतंगे, कुंथु, पिपीलिका जैसे दो इंदरियाँ आले, तीन इंदरियाँ आले, चार इंदरियाँ आले, पाँच इंदरियाँ आले, तिर्यंच जून आले, नारकी, माणस अर देई-दयौता होया करैं। ये सारे के सारे जीव सब तै बड्डे सुख की चाहना राख्या करैं।

इस छठे जीवनिकाय के जीव तूरस (हालण-चाल्लणिये) कुहाया करैं।

10. इन छह तरियाँ के सरीर आले जीवाँ तै कोये दुख देणिया काम ना तै आप करणा चहिये, ना कराणा चहिये अर ना करण आले को ठीक बताणा चहिये।

मैं तीन योग तै- मन (भौना) तै, वचन तै (बोल तै), काया तै (किरिया तै) अर—

तीन करण तै (करणा, कराणा अर करण आले को ठीक बताणा) सारी उमर जीवाँ नैं सताण का पाप कोन्या करूँ।

हे पूरभु! मैं पहलाँ करे होये पाप का प्रतिक्रमण (अपणे करे होये पाप की आपै बुराई) करूँ सूँ, अपणे आग्गै उसनैं बुरा बताऊँ सूँ अर फेर उस काम का त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

11. हे पूरभु! पहले महाव्रत मैं हिंसा (जीवाँ नैं सताण अर मारण) का त्याग कर्‌या करैं।

हे पूरभु! मैं हर तरियाँ की हिंसा का नेम ले कै त्याग करूँ सूँ। जीव चाहे छोट्टे हों या बड्डे, तूरस (हालण-चालण आले) हों या स्थावर (हालण-चालण की ताकत ना राखणिये), मैं सारी तरियाँ के जीव ना तै आप मारूँगा, ना किसे ओर तै मरवाऊँगा अर ना किसे के मारण नैं ठीक बताऊँगा। मैं तीन करण अर तीन योग तै इस महाव्रत नैं पालूँगा।

छाया: प्रथमे भदन्त! महाव्रते प्राणातिपाताद्विरमणम्। सर्वं भदन्त! प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि। अथ सूक्ष्मं वा, त्रसं वा, स्थावरं वा, नैव स्वयं प्राणानतिपातयामि, नैवान्यैः प्राणानतिपातयामि, प्राणानतिपातयतोऽप्यन्यान्न समनुजानामि, यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन, न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि। प्रथमे भदन्त! महाव्रते उपस्थितोऽस्मि सर्वस्मात् प्राणातिपाताद्विरमणम्।

मूलः अहावरे दुच्चे भंते! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं। सव्वं भंते! मुसावायं पच्चक्खामि। से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सयं मुसं वइज्जा, नेवऽन्नेहिं मुसं वायाविज्जा, मुसं वयंतेऽवि अन्ने न समणुजाणामि; जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। दुच्चे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं।।12।।

छाया: अथापरस्मिन् द्वितीये भदन्त! महाव्रते मृषावादाद्विरमणम्। सर्वं भदन्त! मृषावादं प्रत्याख्यामि। अथ क्रोधाद्वा लोभाद्वा भयाद्वा हास्याद्वा, नैव स्वयं मृषा वदामि, नैवाऽन्यैर्मृषा वादयामि, मृषा वदतोऽप्यन्यान् न समनुजानामि, यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन, न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि। द्वितीये भदन्त! महाव्रते उपस्थितोऽस्मि सर्वस्मात् मृषावादाद्विरमणम्।

मूलः अहावरे तच्चे भंते! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि। से गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा, अदिन्नं गिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि; जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। तच्चे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं।।13।।

हे पूरभु! मैं पहलाँ करी होई हिंसा का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, अपणे आग्गै उसनैं बुरा बताऊँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

हे पूरभु! मैं पहले महाव्रत मैं (टिक कै रहण) आया सूँ। इसमैं सारी ए हिंसा कत्ती छोड्डी जाया करै।

12. हे पूरभु! इसके बाद दूसरे महाव्रत मैं झूठ बोलणा कत्ती छोड्डा जाया करै।

हे पूरभु! मैं हर तरियाँ के झूठ का नेम ले कै त्याग करूँ सूँ। गुस्से के बस होकै, लोभ के बस होकै, डर के बस होकै अर हाँसी-मजाक के बस होकै मैं ना तो आप झूठ बोलूँगा, ना किसे ओर तै बुलवाऊँगा अर ना किसे के बोलण नैं ठीक बताऊँगा। मैं सारी उमर तीन करण अर तीन योग तै इस सत्य महाव्रत नैं पालूँगा।

हे पूरभु! मैं पहलाँ बोले होये झूठ का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, अपणे आग्गै उसनैं बुरा बताऊँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

हे पूरभु! मैं दूसरे महाव्रत मैं आया सूँ। इसमैं सारा ए झूठ कत्ती छोड्डा जाया करै।

13. हे पूरभु! इसके बाद तीसरे महाव्रत मैं चोरी करणा कत्ती छोड्डा जाया करै।

हे पूरभु! मैं सब तरियाँ की चोरी का नेम ले कै त्याग करूँ सूँ। गाम, सहर या जंगल, कहीं भी थोड़ी या घणी, छोट्टी या बड्डी, सचित (जी आली) या अचित (बिना जी की), कोये भी चीज उसके मालिक के दिये बिना ना तै आप कदे ल्यूँगा, ना किसे ओर के हाथ लिवाऊँगा अर ना किसे लेते होये नैं ठीक बताऊँगा। मैं सारी उमर तीन करण अर तीन योग तै इस अचौर्य महाव्रत नैं पालूँगा।

छाया : अथापरस्मिस्तृतीये भदन्त! महाव्रतेऽदत्तादानाद्विरमणम्। सर्वं भदन्त! अदत्तादानं प्रत्याख्यामि। यथा ग्रामे वा, नगरे वा, अरण्ये वा, अल्पं वा, बहु वा, अणु वा, स्थूलं वा, चित्तवद्वा, अचित्तवद्वा, नैव स्वयमदत्तं गृह्णामि, नैवान्यैरदत्तं ग्राहयामि, अदत्तं गृह्णतोऽप्यन्यान् न समनुजानामि, यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन, न करोमि, न कारयामि, कुर्वतोप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि। तृतीये भदन्त! महाव्रते उपस्थितोऽस्मि सर्वस्मात् दत्तादानाद्विरमणम्।

मूलः अहावरे चउत्थे भंते! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! मेहुणं पच्चक्खामि। से दिव्वं वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोणियं वा, नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंतेऽवि अन्ने न समणुजाणामि; जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। चउत्थे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं॥14॥

छाया : अथापरस्मिश्चतुर्थे भदन्त! महाव्रते मैथुनाद्विरमणम्। सर्वं भदन्त! मैथुनं प्रत्याख्यामि। अथ दैवं वा, मानुषं वा, तैर्यग्योनं वा, नैव स्वयं मैथुनं सेवे, नैवान्यैर्मैथुनं सेवयामि, मैथुनं सेवमानानप्यन्यान् न समनुजानामि, यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन, न करोमि, न कारयामि, कुर्वतोप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि। चतुर्थे भदन्त! महाव्रते उपस्थितोऽस्मि सर्वस्मात् मैथुनाद्विरमणम्।

मूलः अहावरे पंचमे भंते! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं। सव्वं भंते! परिग्गहं पच्चक्खामि। से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा, नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा, परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्ने न समणु-जाणामि; जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। पंचमे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं॥15॥

छाया : अथापरस्मिन् पञ्चमे भदन्त महाव्रते परिग्रहाद्विरमणम्। सर्वं भदन्त! परिग्रहं प्रत्याख्यामि। अथ अल्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, स्थूलं वा,

हे प्रभु! मैं पहलाँ किसे के दिये बिना उसकी चीज लेण आले पाप का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, अपणे आग्गै उसनैं बुरा बताऊँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

हे प्रभु ! मैं तीसरे महाव्रत मैं आया सूँ। इसमैं सारी ए चोरी कत्ती छोड्डी जाया करै।

14. हे प्रभु! इसके बाद चौथे महाव्रत मैं काम-वासना कत्ती छोड्डी जाया करै।

हे प्रभु! मैं हर तरियाँ की काम-वासना का नेम ले कै त्याग करूँ सूँ। देई-द्यौता, माणस अर तिर्यंच तै जुड़ी होई हर तरियाँ की काम-वासना नैं मैं ना तै आप भोगूँगा, ना किसे ओर तै भुगवाऊँगा अर ना किसे के भोगण नैं ठीक बताऊँगा। मैं सारी उमर तीन करण अर तीन योग तै इस ब्रह्मचर्य महाव्रत नैं पालूँगा।

हे प्रभु! मैं पहलाँ भोगी होई काम-वासना का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, अपणे आग्गै उसनैं बुरा बताऊँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

हे प्रभु! मैं चौथे महाव्रत मैं आया सूँ। इसमैं सारी ए काम-वासना कत्ती छोड्डी जाया करै।

15. हे प्रभु ! इसके बाद पाँचवें महाव्रत मैं सारा परिग्रह (धन-माया अर उसका लालच) कत्ती छोड्डा जाया करै।

हे प्रभु! मैं हर तरियाँ की धन-माया का नेम ले कै त्याग करूँ सूँ। गाम, सहर या जंगल, कहीं भी, थोड़ी या घणी, छोट्टी या बड्डी, सचित या अचित, किसे भी तरियाँ की धन-माया मैं ना तै आप ल्यूँगा, ना किसे ओर तै लिवाऊँगा अर ना किसे के लेण नैं ठीक बताऊँगा। मैं सारी उमर तीन करण अर तीन योग तै इस अपरिग्रह महाव्रत नैं पालूँगा।

हे प्रभु ! मैं पहलाँ करे होये धन-माया लेण के पाप का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, अपणे आग्गै उसनैं बुरा बताऊँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

चित्तवन्तं वा, अचित्तवन्तं वा; नैव स्वयं परिग्रहं परिगृह्णामि, नैवान्यैः परिग्रहं परिग्राहयामि, परिग्रहं परि-गृह्णतोऽप्यन्यान् न समनुजानामि, यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन, न करोमि, न कारयामि, कुर्वतोप्यन्यान् न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि। पञ्चमे भदन्त! महाव्रते उपस्थितोऽस्मि सर्वस्मात् परिग्रहाद्विरमणम्।

मूलः अहावरे छट्ठे भंते! वए राइभोयणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! राइभोयणं पच्चक्खामि। से असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, नेव सयं राइं भुंजिज्जा, नेवऽन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा, राइं भुंजंतेऽवि अन्ने न समणुजाणामि; जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं॥16॥

छायाः अथापरस्मिन् षष्ठे भदन्त! व्रते रात्रिभोजनाद्विरमणम्। सर्वं भदन्त! रात्रिभोजनं प्रत्याख्यामि। अथ अशनं वा, पानं वा, खाद्यं वा, स्वाद्यं वा; नैव स्वयं रात्रौ भुञ्जे, नैवान्यैः रात्रौ भोजयामि, रात्रौ भुञ्जानानप्यन्यान् न समनुजानामि, यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन; न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि। षष्ठे भदन्त! व्रते उपस्थितोऽस्मि सर्वस्मात् रात्रि-भोजनाद्विरमणम्।

मूलः इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहिय-ट्ठियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि॥17॥

छायाः इत्येतानि पञ्च महाव्रतानि रात्रिभोजनविरमणषष्ठानि आत्म-हितार्थाय उपसम्पद्य विहरामि।

मूलः से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिलं वा, लेलुं वा, ससरक्खं वा, कायं ससरक्खं वा, वत्थं हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण वा, किलिंचेण वा, अंगुलियाए वा, सिलागाए वा, सिलाग-हत्थेण वा, न आलिहिज्जा, न विलिहिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिंदिज्जा, अन्नं न आलिहाविज्जा, न विलिहाविज्जा, न घट्टाविज्जा, न भिंदा-

हे प्रभु ! मैं पाँचवें महाव्रत मैं आया सूँ। इसमैं सारा ए परिग्रह कत्ती छोड्डा जाया करै।

16. हे प्रभु ! इसके बाद छठे व्रत मैं रात नैं खाणा-पीणा कत्ती छोड्डा जाया करै।

हे प्रभु ! मैं रात नैं हर तरियाँ के खाण-पीण का नेम ले कै त्याग करूँ सूँ। रात नैं नाज, पाणी, खाण अर सुआद की कोये भी चीज मैं ना तै आप खाऊँगा-पीऊँगा, ना किसे तै खुवाऊँगा-प्याऊँगा अर ना ए किसे खाते-पीते होये नैं ठीक बताऊँगा। मैं सारी उमर, तीन करण अर तीन योग तै इस रात्रि-भोजन-त्याग के व्रत नैं पालूँगा।

हे प्रभु ! मैं पहलाँ के रात नैं खाण-पीण के पाप का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, अपणे आग्गै उसनैं बुरा बताऊँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

हे प्रभु ! मैं छठे व्रत मैं आया सूँ। इसमैं रात का खाणा-पीणा कत्ती छोड्डा जाया करै।

17. मैं अपणी आत्मा की भलाई खात्तर ये पाँच महाव्रत अर रात्रि-भोजन-त्याग का छठा व्रत ले कै बिचरूँ सूँ (रहूँ सूँ)।

18. इसे साद्धु अर सती संजमी, बिराग्गी, पापाँ तै बचे होये अर पाप ना करण के नेम लिये होये होया करैं। वे दन मैं या रात मैं, एकले या लोग्गाँ मैं, सोंदे होये या जागते होये प्रिथवी, नदी-किनारे की माटी, सिला, डल्ले, सचित धूल-धमंडल सरीर, कपड़े-लत्ते वगैरा के ऊप्पर हाथ तै, पाँ तै अर काठ-खरपच्ची-आँगली-सलाई बरगी किसे भी चीज तै कुछ बी ना लिक्खैं, ना छूवैं अर ना छेद करैं! वे औराँ तै थोड़ा-घणा ना लिखवावैं, ना छुवावैं अर ना छेद करवावैं! इस तरियाँ लिक्खण नैं, छूण नैं अर छेद

विज्जा, अन्नं आलिहंतं वा, विलिहंतं वा, घट्टंतं वा, भिंदंतं वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि॥18॥

छाया: स भिक्षुर्वा भिक्षुकी वा, संयत-विरत-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा; दिवा वा, रात्रौ वा, एकको वा, परिषद्गतो वा, सुप्तो वा, जाग्रद्वा; स पृथिवीं वा, भित्तिं वा, शिलां वा, लोष्टुं वा, सरजस्कं वा कायम्, सरजस्कं वा वस्त्रम्; हस्तेन वा, पादेन वा, काष्ठेन वा, कलिञ्जेन वा, अङ्गुल्या वा, शलाकया वा, शलाका हस्तेन वा; नालिखेत्, न विलिखेत्, न घट्टयेत्, न भिन्द्यात्, अन्येन नालेखयेत्, न विलेखयेत्, न घट्टयेत्, न भेदयेत्; अन्यमालि- खन्तं वा, विलिखन्तं वा, घट्टयन्तं वा, भिन्दन्तं वा न समनुजानीयात्; यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन; न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि।

मूलः से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय- पावकम्मे दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिमं वा, महियं वा, करगं वा, हरितणुगं वा, सुद्धोदगं वा, उदउल्लं वा कायं, उदउल्लं वा वत्थं, ससिणिद्धं वा कायं, ससिणिद्धं वा वत्थं, न आमुसिज्जा, न संफुसिज्जा, न आवीलिज्जा, न पवीलिज्जा, न अक्खोडिज्जा, न पक्खोडिज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्नं न आमुसाविज्जा, न संफुसाविज्जा, न आवीलाविज्जा, न पवीलाविज्जा, न अक्खोडा-विज्जा, न पक्खोडाविज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्नं आमुसंतं वा, संफुसंतं वा, आवीलंतं वा पवीलंतं वा, अक्खोडंतं वा, पक्खोडंतं वा, आयावंतं वा, पयावंतं वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि॥19॥

छाया: स भिक्षुर्वा भिक्षुकी वा, संयत-विरत-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा; दिवा वा, रात्रौ वा, एकको वा, परिषद्गतो वा, सुप्तो वा, जाग्रद्वा;

करण नैं ठीक ना बतावैं! यो नेम मैं सारी उमर तीन करण अर तीन योग तै पालूँगा। सारी उमर मैं ये सारे काम मन-वचन-काया तै ना करूँगा, ना कराऊँगा अर ना करण आले नैं ठीक बताऊँगा।

हे प्रभु ! मैं पहलाँ करे होये इसे प्रिथवी आले पाप का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, उसनैं बुरा बताऊँ सूँ, धक्कारूँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

19. इसे साद्धु अर सती संजमी, बिराग्गी, पापाँ तै बचे होये अर पाप ना करण के नेम लिये होये होया करैं। वे दन मैं या रात मैं, एकले या लोग्गाँ मैं, सोंदे होये या जागते होये पाणी, ओस, बरफ अक् पाले तै, धुंध-ओले-जमीन फोड़ कै निकले पाणी अक् बारस के पाणी तै भीज्जे सरीर या कपड़े-लत्ते नैं एक बै या कई बै ना छूवैं, ना दाब्बैं, ना झाड़ैं अर ना सुखावैं! वे औराँ तै एक बै या कई बै ना छुवावैं, ना दबवावैं, ना झड़वावैं अर ना सुखवावैं! इस तरियाँ छूण नैं, दाब्बण नैं, झड़वाण नैं अर सुखवाण नैं ठीक ना बतावैं! यो नेम मैं सारी उमर तीन करण अर तीन योग तै पालूँगा। सारी उमर मैं ये सारे काम मन-वचन-काया तै ना करूँगा, ना कराऊँगा अर ना करण आले नैं ठीक बताऊँगा।

हे प्रभु ! मैं पहलाँ करे होये इसे पाणी आले पाप का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, उसनैं बुरा बताऊँ सूँ, धक्कारूँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

स उदकं वा, अवश्यायं वा, हिमं वा, मिहिकां वा, करकं वा, हरतनुकं वा, शुद्धोदकं वा, उदकार्द्रं वा कायम्, उदकार्द्रं वा वस्त्रम्, सस्निग्धं वा कायम्, सस्निग्धं वा वस्त्रम्; नामृषेत्, न संस्पृशेत्, नापीडयेत्, न प्रपीडयेत्, नास्फोटयेत्, न प्रस्फोटयेत्, नातापयेत्, न प्रतापयेत्; अन्येन नामर्षयेत्, न संस्पर्शयेत्, नापीडयेत्, न प्रपीडयेत्, नास्फोटयेत्, न प्रस्फोटयेत्, नातापयेत्, न प्रतापयेत्; अन्यमामृषन्तं वा, संस्पृशन्तं वा, आपीडयन्तं वा, प्रपीडयन्तं वा, आस्फोटयन्तं वा, प्रस्फोटयन्तं वा, आतापयन्तं वा, प्रतापयन्तं वा न समनुजानीयात्; यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन; न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि।

मूलः से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणिं वा, इंगालं वा, मुम्मुरं वा, अच्चिं वा, जालं वा, अलायं वा, सुद्धागणिं वा, उक्कं वा, न उंजिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिंदिज्जा, न उज्जालिज्जा, न पज्जालिज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्नं न उंजाविज्जा, न घट्टाविज्जा, न भिंदाविज्जा, न उज्जालाविज्जा, न पज्जालाविज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्नं उज्जन्तं वा, घट्टंतं वा, भिंदंतं वा, उज्जालंतं वा, पज्जालंतं वा, निव्वावंतं वा, न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि॥20॥

छायाः स भिक्षुर्वा भिक्षुकी वा, संयत-विरत-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा; दिवा वा, रात्रौ वा, एकको वा, परिषद्गतो वा, सुप्तो वा, जाग्रद्वा; सोऽग्निं वा, अङ्गारं वा, मुर्मुरं वा, अर्च्चिर्वा, ज्वालां वा, अलातं वा, शुद्धाग्निं वा, उल्कां वा; नोत्सिञ्चेत्, न घट्टयेत्, न भिन्द्यात्, न उज्ज्वालयेत्, न प्रज्वालयेत्, न निर्वापयेत्; अन्येन नोत्सेचयेत्, न घट्टयेत्, न भेदयेत्, नोज्ज्वालयेत्, न प्रज्वालयेत्, न निर्वापयेत्; अन्यमुत्सिञ्चन्तं वा, घट्टयन्तं वा, भिन्दन्तं वा, उज्ज्वालयन्तं वा, प्रज्वालयन्तं वा, निर्वापयन्तं वा न समनुजानीयात्; यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन; न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि।

20. इसे साद्धु अर सती संजमी, बिरागी, पापाँ तै बचे होये अर पाप ना करण के नेम लिये होये होया करैं। वे दन मैं या रात मैं, एकले या लोग्गाँ मैं, सोंदे होये या जागते होये आग, अंगारे, उपलाँ की आँच, चिंगारी, लपट, कोरी आग अर अकास की आग नैं ईंद्धण दे कै ना बढ़ावैं, ना छूवैं, ना करेलैं, ना जलावैं अर ना बुझावैं! ये सारे काम वे औराँ तै भी ना करवावैं! ये काम करण आले नैं भी ठीक ना बतावैं! यो नेम मैं सारी उमर तीन करण अर तीन योग तै पालूँगा। सारी उमर मैं ये सारे काम मन-वचन-काया तै ना करूँगा, ना कराऊँगा अर ना करण आले नैं ठीक बताऊँगा।

हे प्रभु! मैं पहलाँ करे होये इसे आग आले पाप का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, उसनैं बुरा बताऊँ सूँ, धक्कारूँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

मूलः से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय- पावकम्मे दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुयणेण वा, तालिअंटेण वा, पत्तेण वा, पत्तभंगेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण- हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा कायं, बाहिरं वा वि पुग्गलं, न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्नं न फुमाविज्जा, न वीयाविज्जा, अन्नं फुमंतं वा, वीअंतं वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥21॥

छायाः स भिक्षुर्वा भिक्षुकी वा, संयत-विरत-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा; दिवा वा, रात्रौ वा, एकको वा, परिषद्गतो वा, सुप्तो वा, जाग्रद्वा; स सितेन वा, विधवनेन वा, तालवृन्तेन वा, पत्रेण वा, पत्रभङ्गेन वा, शाखया वा, शाखाभङ्गेन वा, पेहुणेन वा, पेहुणहस्तेन वा, चेलेन वा, चेलकर्णेन वा, हस्तेन वा, मुखेन वा; आत्मनो वा कायम्, बाह्यं वाऽपि पुद्गलम्, न फूत्कुर्यात्, न व्यजेत्; अन्येन न फूत्कारयेत्, न व्याजयेत्; अन्यं फूत्कुर्वन्तं वा, व्यजन्तं वा न समनुजानीयात्; यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन; न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि।

मूलः से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय- पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा, बीयपइट्ठेसु वा, रूढेसु वा, रूढपइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जायपइट्ठेसु वा, हरिएसु वा, हरियपइट्ठेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइट्ठेसु वा, सचित्तेसु वा, सचित्त-कोलपडिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न निसीइज्जा, न तुअट्टिज्जा, अन्नं न गच्छाविज्जा, न चिट्ठाविज्जा, न निसीयाविज्जा, न तुअट्टाविज्जा, अन्नं गच्छंतं वा, चिट्ठंतं वा, निसीयंतं वा, तुअट्टंतं वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥22॥

21. इसे साद्धु अर सती संजमी, बिराग्गी, पापाँ तै बचे होये अर पाप ना करण के नेम लिये होये होया करैं। वे दन मैं या रात मैं, एकले या लोग्गाँ मैं, सोंदे होये या जागते होये चँवर, पंखे, बीजणे, पत्ते, डाली, मोरपंख, मोर-पिच्छी, कपड़े-लत्ते, पल्ले, हाथ या मूँ तै अपणे सरीर या ओर चीजाँ पै ना फूँक मारैं, ना हवा करैं! वे औराँ तै ना फूँक मरवावैं, ना हवा करवावैं! इस तरियाँ फूँक मारण नैं अर हवा करण नैं ठीक ना बतावैं! यो नेम मैं सारी उमर तीन करण अर तीन योग तै पालूँगा। सारी उमर मैं ये सारे काम मन-वचन-काया तै ना करूँगा, ना कराऊँगा अर ना करण आले नैं ठीक बताऊँगा।

हे प्रभु! मैं पहलाँ करे होये इसे हवा आले पाप का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, उसनैं बुरा बताऊँ सूँ, धक्कारूँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

22. इसे साद्धु अर सती संजमी, बिराग्गी, पापाँ तै बचे होये अर पाप ना करण के नेम लिये होये होया करैं। वे दन मैं या रात मैं, एकले या लोग्गाँ मैं, सोंदे होये या जागते होये अंकुरित होये होये अर ना होये होये बीजाँ पै, इसे बीजाँ पै धरी होई चीजाँ पै, पत्ताँ आली बनासपति पै या उस पै धरी होई चीजाँ पै, पाड़ी होई बनासपति पै या उसपै धरी होई चीजाँ पै, सचित या कीड़े लागे होये काठ पै ना चाल्लैं, ना खड़े रहैं, ना बैट्ठैं अर ना सोवैं! वे इस तरियाँ औराँ नैं ना चलावैं, ना खड़े करैं, ना बिठावैं अर ना सुवावैं! वे इस तरियाँ चाल्लण नैं, खड़े रहण नैं, बैट्ठण नैं अर सोण नैं ठीक ना बतावैं! यो नेम मैं सारी उमर तीन करण अर तीन योग तै पालूँगा। सारी उमर मैं ये सारे काम मन-वचन-काया तै ना करूँगा, ना कराऊँगा अर ना करण आले नैं ठीक बताऊँगा।

छाया: स भिक्षुर्वा भिक्षुकी वा, संयत-विरत-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा; दिवा वा, रात्रौ वा, एककी वा, परिषद्गतो वा, सुप्तो वा, जाग्रद्वा; स बीजेषु वा, बीजप्रतिष्ठितेषु वा, रूढेषु वा, रूढप्रतिष्ठितेषु वा, जातेषु वा, जातप्रतिष्ठितेषु वा, हरितेषु वा, हरितप्रतिष्ठितेषु वा, छिन्नेषु वा, छिन्नप्रतिष्ठितेषु वा, सचित्तेषु वा, सचित्तकोलप्रतिनिःश्रितेषु वा; न गच्छेत्, न तिष्ठेत्, न निषीदेत्, न त्वग्वर्तेत (स्वप्यात्); अन्यं न गमयेत्, न स्थापयेत्, न निषादयेत्, न त्वग्वर्तयेत् (स्वापयेत्); अन्यं गच्छन्तं वा, तिष्ठन्तं वा, निषीदन्तं वा, त्वग्वर्तमानं (स्वपन्तं) वा न समनुजानीयात्; यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन, मनसा, वाचा, कायेन; न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्यं न समनुजानामि। तस्य भदन्त! प्रतिक्रामामि, निन्दामि, गर्हे, आत्मानं व्युत्सृजामि।

मूलः से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा, पयंगं वा, कुंथुं वा, पिवीलियं वा, हत्थंसि वा, पायंसि वा, बाहुंसि वा, उरुंसि वा, उदरंसि वा, सीसंसि वा, वत्थंसि वा, पडिग्गहंसि वा, कंबलंसि वा, पायपुच्छणंसि वा, रयहरणंसि वा, गुच्छगंसि वा, उंडगंसि वा, दंडगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सिज्जंसि वा, संथारगंसि वा, अन्नयरंसि वा, तहप्पगारे उवगरणजाए, तओ संजयामेव पडिलेहिअ पडिलेहिअ, पमज्जिअ पमज्जिअ एगंतमवणिज्जा, नो णं संघायमावज्जिज्जा॥23॥

छाया: स भिक्षुर्वा भिक्षुकी वा, संयत-विरत-प्रतिहत-प्रत्याख्यात-पापकर्मा; दिवा वा, रात्रौ वा, एककी वा, परिषद्गतो वा, सुप्तो वा, जाग्रद्वा; स कीटं वा, पतङ्गं वा, कुन्थुं वा, पिपीलिकां वा; हस्ते वा, पादे वा, बाहौ वा, ऊरौ वा, उदरे वा, शीर्षे वा, वस्त्रे वा, प्रतिग्रहे वा, कम्बले वा, पादप्रोञ्छनके वा, रजोहरणे वा, गुच्छके वा, उन्दुके वा, दण्डके वा, पीठके वा, फलके वा, शय्यायां वा, संस्तारके वा, अन्यतरस्मिन् वा तथाप्रकारे उपकरणजाते, ततः संयतमेव प्रतिलिख्य प्रतिलिख्य, प्रमृज्य प्रमृज्य, एकान्तमपनयेत्, नैनं संघातमापादयेत्।

मूलः अजयं चरमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं॥24॥

छाया: अयतं चरंस्तु, प्राणभूतानि हिनस्ति।
बध्नाति पापकं कर्म, तत्तस्य भवति कटुकं फलम्॥

हे प्रभु ! मैं पहलाँ करे होये इसे बनासपति आले पाप का प्रतिक्रमण करूँ सूँ, उसनैं बुरा बताऊँ सूँ, धक्कारूँ सूँ अर उसका त्याग करूँ सूँ। मतलब अपणे आप्पे नैं उस पाप तै कत्ती अलग करूँ सूँ।

23. इसे साद्धु अर सती संजमी, बिराग्गी, पापाँ तै बचे होये अर पाप ना करण के नेम लिये होये होया करैं। वे दन मैं या रात मैं, एकले या लोग्गाँ मैं, सोंदे होये या जागते होये(कीड़ाँ, पतंगाँ, कीड़ी, कुंथु बरगे छोट्टे तै छोट्टे) जीवाँ का ध्यान राखैं! उनके सरीर पै (हाथ, पाँ, जांघ, पेट, सिर वगैरा कहीं भी) या उनकी किसे चीज पै (कपड़े-लत्ताँ पै, पात्तराँ पै, आस्सण-पट्टे-चौंकी वगैरा पै) कोये बी जीव चढ ज्या तो उसकी यतना करैं (पूरे ध्यान तै देख-भाल कै उसनैं इसी जंगा पहुँचा दें जित उसनैं कोये खतरा ना हो)! उन जीवाँ नैं कदे बी दुक्ख ना दें!

यतना ना करण का कडुआ फल

24. यतना ना करण आला (पूरा ध्यान दे कै, देखभाल कै ना हालण-चालण आला) जीवाँ की हिंसा कर्या करै। उसतै पाप-करम बंध्या करैं। ये कडुए फल देण आले होया करैं।

मूलः अजयं चिट्ठमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं॥25॥

छाया : अयतं तिष्ठंस्तु प्राणभूतानि हिनस्ति।
बध्नाति पापकं कर्म, तत्तस्य भवति कटुकं फलम्॥

मूलः अजयं आसमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं॥26॥

छाया : अयतमासीनस्तु, प्राणभूतानि हिनस्ति।
बध्नाति पापकं कर्म, तत्तस्य भवति कटुकं फलम्॥

मूलः अजयं सयमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं॥27॥

छाया : अयतं शयानस्तु, प्राणभूतानि हिनस्ति।
बध्नाति पापकं कर्म, तत्तस्य भवति कटुकं फलम्॥

मूलः अजयं भुंजमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं॥28॥

छाया : अयतं भुञ्जानस्तु, प्राणभूतानि हिनस्ति।
बध्नाति पापकं कर्म, तत्तस्य भवति कटुकं फलम्॥

मूलः अजयं भासमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं॥29॥

छाया : अयतं भाषमाणस्तु, प्राणभूतानि हिनस्ति।
बध्नाति पापकं कर्म, तत्तस्य भवति कटुकं फलम्॥

मूलः कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए।
कह भुंजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न बंधइ॥30॥

छाया : कथं चरेत् कथं तिष्ठेत्, कथमासीत कथं शयीत।
कथं भुञ्जानो भाषमाणः, पापकर्म न बध्नाति॥

मूलः जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुञ्जंतो भासंतो, पाव-कम्मं न बंधइ॥31॥

छाया : यतं चरेत् यतं तिष्ठेत्, यतमासीत यतं शयीत।
यतं भुञ्जानो भाषमाणः, पापकर्म न बध्नाति॥

25. यतना तै खड़ा ना होण आला जीवाँ की हिंसा कर्‌या करै। उसतै पाप-करम बंध्या करैं। ये कड़ुए फल देण आले होया करैं।

26. यतना तै ना बैट्ठण आला जीवाँ की हिंसा कर्‌या करै। उसतै पाप-करम बंध्या करैं। ये कड़ुए फल देण आले होया करैं।

27. यतना तै ना सोण आला जीवाँ की हिंसा कर्‌या करै। उसतै पाप-करम बंध्या करैं। ये कड़ुए फल देण आले होया करैं।

28. यतना तै ना खाण-पीण आला जीवाँ की हिंसा कर्‌या करै। उसतै पाप-करम बंध्या करैं। ये कड़ुए फल देण आले होया करैं।

29. यतना तै ना बोल्लण आला जीवाँ की हिंसा कर्‌या करै। उसतै पाप-करम बंध्या करैं। ये कड़ुए फल देण आले होया करैं।

30. (कोये) किस तरियाँ चाल्लै, किस तरियाँ खड़्या हो, किस तरियाँ बैट्ठै, किस तरियाँ सोवै, किस तरियाँ खावै अर किस तरियाँ बोल्लै, जिसतै पाप-करम कोन्या बंधैं?

31. यतना तै (पूरा ध्यान दे कै, देखभाल कै जीवाँ नैं बचा कै) चाल्लै, यतना तै खड़्या हो, यतना तै बैट्ठै, यतना तै खावै अर यतना तै बोल्लै तो जीव पाप-करम कोन्या बांध्या करदा।

मूलः **सव्व भूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं आसओ।**
पिहि यासवस्स दंतस्स, पाव-कम्मं न बंधइ॥32॥

छाया : सर्वभूतात्मभूतस्य, सम्यक् भूतानि पश्यतः।
पिहितास्रवस्य दान्तस्य, पापकर्म न बध्नाति॥

मूलः **पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए।**
अन्नाणी किं काही? किं वा नाही सेय पावगं॥33॥

छाया : प्रथमं ज्ञानं ततो दया, एवं तिष्ठति सर्वसंयतः।
अज्ञानी किं करिष्यति? किं वा ज्ञास्यति श्रेयः पापकम्?॥

मूलः **सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।**
उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे॥34॥

छाया : श्रुत्वा जानाति कल्याणम्, श्रुत्वा जानाति पापकम्।
उभयमपि जानाति श्रुत्वा, यत् श्रेयस्तत् समाचरेत्॥

मूलः **जो जीवे वि न याणेइ, अजीवे वि न याणइ।**
जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाहीइ संजमं॥35॥

छाया : यो जीवानपि न जानाति, अजीवानपि न जानाति।
जीवाजीवानजानन्, कथमसौ ज्ञास्यति संयमम्॥

मूलः **जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ।**
जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहीइ संजमं॥36॥

छाया : यो जीवानपि विजानाति, अजीवानपि विजानाति।
जीवाजीवान् विजानन्, स हि ज्ञास्यति संयमम्॥

मूलः **जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ।**
तया गइं बहुविहं, सव्व जीवाण जाणइ॥37॥

छाया : यदा जीवानजीवाँश्च, द्वावप्येतौ विजानाति।
तदा गतिं बहुविधाम्, सर्वजीवानां जानाति॥

मूलः **जया गइं बहुविहं, सव्व जीवाण जाणइ।**
तया पुण्णं च पावं च, बंधं-मुक्खं च जाणइ॥38॥

छाया : यदा गतिं बहुविधाम्, सर्वजीवानां जानाति।
तदा पुण्यं च पापं च, बन्धं मोक्षं च जानाति॥

मूलः **जया पुण्णं च पावं च, बंधं-मुक्खं च जाणइ।**
तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे॥39॥

32. जो सारे जीवाँ नैं अपणे जीसे मान्या करै अर इसी ए साच्ची नजर तै सार्‌याँ नैं देख्या करै, जो पाप-करमाँ के अपणी आतमा तक आण के रस्ताँ नैं रोक दिया करै अर अपणी आतमा के काब्बू मैं रह्या करै, ओ पाप-करम कोन्या बांध्या करदा।

33. पहलाँ ग्यान होया करै अर फेर दया- इसे तरियाँ सारे संजमी अपणा संजम पाल्या करैं या पक्के होया करैं। ग्यान ऐ ना हो तो कोये के करैगा? उसनैं के बेरा लगैगा अक् करण का काम कुण-सा सै अर ना करण का कुण-सा?

34. सुण कै ए आतमा की भलाई का ग्यान होया करै अर सुण कै ए पाप की पिछाण होया करै। सुण कै ए ये दोन्नों सिमझ मैं आया करैं। इनमैं जो आच्छा हो, उसके हिसाब तै ए चलणा चहिए।

35. जीवाँ का अर अजीवाँ का जिसनैं ग्यान ए कोन्या, ओ संजम नै किस तरियाँ सिमझैगा? किस तरियाँ पालैगा?

36. जीवाँ का जिसनैं ग्यान सै, अजीवाँ का भी ग्यान सै अर जो दोन्नुआँ नैं आच्छी तरियाँ जाणै सै, ओ संजम का ग्यानी भी जरूर होवैगा।

37. जीव अर अजीव- दोन्नुआँ नैं माणस जिब सिमझ लिया करै तो ओ सारे जीवाँ की हर तरियाँ की गति (जून) नैं भी जाण लिया करै।

38. माणस जिब सारे जीवाँ की हर तरियाँ की गति नैं जाण लिया करै तो ओ पुन्न-पाप अर बंधन-मुकती नैं भी जाण लिया करै।

39. माणस जिब पुन्न-पाप अर बंधन-मुकती नैं जाण लिया करै तो ओ देई-बुकौलाँ अर माणसाँ के संसारी सुख-भोग्गाँ नैं भी सिमझ लिया करै। उनतै सिमझ कै ओ बिरागी हो ज्याया करै।

छाया : यदा पुण्यं च पापं च, बंधं मोक्षं च जानाति।
तया निर्विन्ते भोगान्, यान् दिव्यान् याँश्च मानुषान्।।

मूलः जया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ संजोगं, सब्भिंतरबाहिरं।।40।।

छाया : सदा निर्विन्ते भोगान्, यान् दिव्यान् याँश्च मानुषान्।
तदा त्यजति संयोगम्, साभ्यन्तरबाह्यम्।।

मूलः जया चयइ संजोगं, सब्भिंतर-बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं।।41।।

छाया : यदा त्यजति संयोगम्, साभ्यन्तरबाह्यम्।
तदा मुण्डो भूत्वा, प्रव्रजत्यनगारताम्।।

मूलः जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं।
तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।।42।।

छाया : यदा मुण्डो भूत्वा, प्रव्रजत्यनगारताम्।
तदा संवरमुत्कृष्टम्, धर्मं स्पृशत्यनुत्तरम्।।

मूलः जया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्मरयं, अबोहि कलुसं कडं।।43।।

छाया : यदा संवरमुत्कृष्टम्, धर्मं स्पृशत्यनुत्तरम्।
तदा धुनोति कर्मरजः, अबोधिकलुषं कृतम्।।

मूलः जया धुणइ कम्मरयं, अबोहि कलुसं कडं।
तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ।।44।।

छाया : यदा धुनोति कर्मरजः, अबोधिकलुषं कृतम्।
तदा सर्वत्रगं ज्ञानम्, दर्शनं चाभिगच्छति।।

मूलः जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ।
तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली।।45।।

छाया : यदा सर्वत्रगं ज्ञानम्, दर्शनं चाभिगच्छति।
तदा लोकमलोकं च, जिनो जानाति केवली।।

मूलः जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली।
तया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ।।46।।

40. माणस जिब देई-द्यौताँ अर माणसाँ के संसारी सुख-भोग्गाँ तै बिरागी हो ज्याया करै तो ओ भीत्तर-बाह्र के संजोग्गाँ का (रिस्ते-नात्ताँ का अर उनमैं मोह-ममता का) त्याग कर दिया करै।

41. माणस जिब भीत्तर-बाह्र के संजोग्गाँ का (रिस्ते-नात्ताँ का अर उनमैं मोह-ममता का) त्याग कर दिया करै तो ओ दीक्सा ले कै साद्धु बण जाया करै।

42. माणस जिब दीक्सा ले कै साद्धु बण जाया करै तो ओ सब तै ऊँच्चे, पाप के रस्ताँ नैं मूँदण आले सब तै आच्छे धरम नैं फरस्या करै।

43. माणस जिब सब तै ऊँच्चे, पाप के रस्ताँ नैं मूँदण आले सब तै आच्छे धरम नैं फरस्या करै तो ओ ग्यान ना होण के कारण कट्ठी करी होई करमाँ की धूल नैं झाड़ कै हटा दिया करै।

44. माणस जिब ग्यान ना होण के कारण कट्ठी करी होई करमाँ की धूल नैं झाड़ कै हटा दिया करै तो ओ केवल ग्यान (सब किम् जाणन की ताकत) अर केवल दरसन (सब किम् देखण की ताकत) पा लिया करै।

45. माणस जिब केवल ग्यान (सब किम् जाणन की ताकत) अर केवल दरसन (सब किम् देखण की ताकत) पा लिया करै तो ओ जिन (सब किम् जीत्तण आला) हो जाया करै। ओ केवलग्यान्नी लोक (अकास का वो हिस्सा जिसमैं या दुनिया सै) अर अलोक (अकास का वो हिस्सा जिसमैं कुच्छ बी कोन्या) नैं जाण लिया करै।

46. माणस जिब जिन अर केवलग्यान्नी हो कै लोक अर अलोक नैं जाण लिया करै तो ओ योग्गाँ नैं (मन-वचन-काया) कत्ती बंद कर कै शैलेशी

छाया : यदा लोकमलोकं च, जिनो जानाति केवली।
तदा योगान्निरुद्ध्य, शैलेशीं प्रतिपद्यते।।

मूलः जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ।।47।।

छाया : यदा योगान्निरुद्ध्य, शैलेशीं प्रतिपद्यते।
तदा कर्म क्षपयित्वा, सिद्धिं गच्छति नीरजाः।।

मूलः जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ।।48।।

छाया : यदा कर्म क्षपयित्वा, सिद्धिं गच्छति नीरजाः।
तदा लोकमस्तकस्थः सिद्धो भवति शाश्वतः।।

मूलः सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणा-पहोअस्स, दुल्लहा सुगई तारिसगस्स।।49।।

छाया : सुखस्वादकस्य श्रमणस्य, साताकुलस्य निकामशायिनः।
उत्सोलनाप्रधाविनः, दुर्लभा सुगतिस्तादृशस्य।।

मूलः तवो-गुण-पहाणस्स, उज्जुमइ खंति संजमरयस्स।
परीसहे जिणंतस्स, सुलहा सुगई तारिसगस्स।।50।।

छाया : तपोगुणप्रधानस्य, ऋतुमतेः क्षान्तिसंयमरतस्य।
परीषहान् जयतः, सुलभा सुगतिस्तादृशकस्य।।

मूलः पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं।
जेसिं पिओ तवो संजमो य, खंती य बंभचेरं च।।51।।

छाया : पश्चादपि ते प्रयाताः क्षिप्रं गच्छन्ति अमरभवनानि।
येषां प्रियः तपः संयमश्च क्षान्तिश्च ब्रह्मचर्यञ्च।।

मूलः इच्चेयं छज्जीवणियं, सम्मद्दिट्ठी सया जए।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मुणा न विराहिज्जासि।।52।।
–त्ति बेमि

छाया : इत्येतां षड्जीवनिकाम्, सम्यग्दृष्टिः सदा यतः।
दुर्लभं लब्ध्वा श्रामण्यम्, कर्मणा न विराधयेत्।।
–इति ब्रवीमि।

।। चउत्थं छज्जीवणिया अज्झयणं सम्मत्तं ।।

दसा (पहाड़ जीसी कत्ती ना काँप्पण आली मुकती तै पैहल्याँ की हालत) नैं पा लिया करै।

47. माणस जिब तीन योग्गाँ नैं (मन-वचन-काया) कत्ती बंद कर कै शैलेशी दसा (पहाड़ जीसी कत्ती ना काँप्पण आली मुकती तै पैहल्याँ की हालत) पा लिया करै तो ओ सारे करमाँ नैं मेट कै कत्ती सुद्ध हो कै सिद्ध हो ज्याया करै।

48. माणस जिब सारे करमाँ नैं मेट कै कत्ती सुद्ध हो कै सिद्ध बण्या करै तो ओ सारी दुनिया के सिर पै (दुनिया की सबतै ऊँच्ची अर आखरी जंगा) हमेस्सा टिक्या रहूण आला सिद्ध हो ज्याया करै।

49. सुक्खाँ का सुआद्दू जो साद्धु सुक्खाँ की खात्तर बेचैन, बेटैम सोण आला अर लापरवाई तै अपणे सरीर की सजावट करणिया होया करै, उसनैं आच्छी गति सहूजै-सी कोन्या मिलदी।

50. त्याग-तपस्या मैं आग्गै रहूणिया जो साद्धु सीद्धी अकल (मोक्स के मुताबिक अकल) आला, संजम मैं ए टिकणिया अर उसके रस्ते मैं आण आले दुक्खाँ नैं जीत्तण आला होया करै, उसनैं आच्छी गति सहूजै ए मिल ज्याया करै।

51. तपस्या, संजम, छिमा अर ब्रह्मचर्य जिन्नैं प्यारे सैं, वे बुढ़ापे मैं दीक्सा ले कै भी जल्दी ए द्यौता बण ज्याया करैं।

52. भगवान की बताई होई सच्चाई की नजर तै ए देक्खणिये अर हमेस्साँ चोक्कस रहूणिये साद्धु मुस्किल तै मिल्लण आली साद्धु-भौअना पा कै इन छैकाय जीवाँ नैं मन-वचन-काया तै कदे ना सतावैं।

-न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

।। छह काय जीव नाम का चौथा पाठ समाप्त ।।

अह पिण्डेसणा पंचमज्झयणं

मूलः संपत्ते भिक्खकालंमि, असंभंतो अमुच्छिओ।
इमेण कमजोगेणं, भत्तपाणं गवेसए।।1।।

छायाः संप्राप्ते भिक्षाकाले, असंभ्रान्तः अमूर्च्छितः।
अनेन क्रमयोगेन, भक्तपानं गवेषयेत्।।

मूलः से गामे वा नगरे वा, गोअरग्गगओ मुणी।
चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा।।2।।

छायाः स ग्रामे वा नगरे वा, गोचराग्रगतो मुनिः।
चरेद् मन्दमनुद्विग्नः, अव्याक्षिप्तेन चेतसा।

मूलः पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे।
वज्जंतो बीयहरियाइं, पाणे अ दगमट्टियं।।3।।

छायाः पुरतो युगमात्रया, प्रेक्षमाणो महीं चरेत्।
वर्जयन् बीजहरितानि, प्राणिनाश्चोदकमृत्तिकाम्।।

मूलः ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए।
संकमेण न गिच्छिज्जा, विज्जमाणे परक्कमे।।4।।

छायाः अवपातं विषमं स्थाणुम्, विजलं परिवर्जयेत्।
संक्रमेण न गच्छेत्, विद्यमाने परक्रमे।।

मूलः पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए।
हिंसेज्ज पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे।।5।।

छायाः प्रपतन् वा स तत्र, प्रस्खलन् वा संयतः।
हिंस्यात्प्राणिभूतानि, त्रसानथवा स्थावरान्।।

मूलः तम्हा तेण न गच्छिज्जा, संजए सुसमाहिए।
सइ अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे।।6।।

छायाः तस्मात्तेन न गच्छेत्, संयतः सुसमाहितः।
सत्यन्यस्मिन् मार्गे, यतमेव पराक्रामेत्।।

पाँचवाँ पाठ : पिण्डैषणा : पहला हिस्सा

1. भोजन-पाणी का टैम हो ग्या तो साद्धु उलझे होये जी की बेचैन्नी छोड कै चोक्कस रहूण की भौअना ले कै इस तरियाँ (आग्गै बताए होये तरीक्के तै) भोजन-पाणी टोहूण जावै।

2. गोचरी (भोजन-पाणी) की खात्तर गया होया चोक्कस साद्धु गाम मैं या सहर मैं (या किसे ओर जंगा) बेचैन्नी छोड कै अर जी नैं टिका कै सहज-सहज चाल्लै।

3. साद्धु चालदे होये अपणे सरीर जितणी दूर (साढे तीन हाथ दूर) आग्गै देखदा होया चाल्लै। न्यूँ देख कै चालदा होया ओ बीज, हरी बनासपति, जी-जिनौअर, पाणी अर सचित माट्टी नैं बचावै।

4. साद्धु गड्ढे वगैरा, ऊब्बड़-खाब्बड़ जंगा, ठूँठ-कीच वगैरा तै बचकै चाल्लै अर दूसरा रस्ता हो तो पाणी या नदी वगैरा पार करकै ना जावै।

5. ओ (ध्यान तै ना चाल्लणिया) साद्धु गड्ढे जिसी जंगा पड़ण या फिसलण तै त्रस या स्थावर जीवाँ की हिंसा कर्या करै।

6. इसलिए संजम मैं टिक्या होया साद्धु दूसरे रस्ते हों तो इन (पहलाँ बताए होये) रस्ताँ तै ना जावै। दूसरा कोये रस्ता ना हो तो यतना तै (पूरे ध्यान तै) उस रस्ते जावै।

मूल: इंगालं छारियं रासिं, तुसरासिं च गोमयं।
ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नइक्कमे॥7॥

छाया: आङ्गारं क्षारराशिम्, तुषराशिं च गोमयम्।
सरजस्काभ्यां पद्भ्यास, संयतस्तं नातिक्रामेत्॥

मूल: न चरेज्ज वासे वासंते, महियाए वा पडंतिए।
महावाए व वायंते, तिरिच्छसंपाइमेसु वा॥8॥

छाया: न चरेद्वर्षे वर्षति, मिहिकायां वा पतन्त्याम्।
महावाते वा वाति, तिर्यक्-संपातिकेषु वा॥

मूल: न चरेज्ज वेससामंते, बंभचेरवसाणु-(ण)-ए।
बंभयारिस्स दंतस्स, हुज्जा तत्थ विसुत्तिआ॥9॥

छाया: न चरेद्वेश्यासामन्ते, ब्रह्मचर्यवशानयने।
ब्रह्मचारिणो दान्तस्य, भवेदत्र विस्रोतसिका॥

मूल: अणाय [य] णे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं।
हुज्ज वयाणं पीला, सामण्णंमि अ संसओ॥10॥

छाया: अनायतने चरतः, संसर्गेणा-(सांसर्गिक्या)-ऽभीक्ष्णम्।
भवेद् व्रतानां पीडा, श्रामण्ये च संशयः॥

मूल: तम्हा एयं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वज्जए वेससामंतं, मुणी एगंतमस्सिए॥11॥

छाया: तस्मादेतं विज्ञाय, दोषं दुर्गतिवर्द्धनम्।
वर्जयेद्वेश्यासामन्तम्, मुनिरेकान्तमाश्रितः॥

मूल: साणं सूइयं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं [म्भं] कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए॥12॥

छाया: श्वानं सूतां गाम्, दृप्तं गां हयं गजम्।
संडिम्भं कलहं युद्धम्, दूरतः परिवर्जयेत्॥

मूल: अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले।
इंदियाणि जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे॥13॥

छाया: अनुन्नतो नावनतः, अप्रहृष्टः अनाकुलः।
इन्द्रियाणि यथाभागम्, दमयित्वा मुनिश्चरेत्॥

7. साद्धु अंगारे या कोल्लाँ के ढेर, राख के ढेर, भूस्से के अर गोब्बर के ढेर नैं सचित धूल मैं भरे पाँयाँ तै लाँघ कै ना जावै।

8. बारस होंदी हो, धुंध पड़दी हो, आँद्धी चालदी हो अर पतंगे वगैरा उड़दे हों तो साद्धु गोचरी (भोजन-पाणी) लेण के काम तै (या और किसे काम तै) ना जावै।

9. ब्रह्मचारी (साद्धु) बेस्साँ की जंगा के धोरै गोचरी लेण ना जावै। इसतै इंदरियाँ नैं बस मैं राक्खण आले उसके जी मैं संजम का नाज सुखाण आला बिगाड़ पैदा हो सकै सै।

10. बेस्साँ के मोहल्लाँ मैं जाण आले साद्धु के बरताँ का नुकस्यान हो सकै सै अर (लोग्गाँ के जी मैं) साद्धुपणे मैं सक-सुबा हो सकै सै।

11. इसलिए सोर-सराबे तै दूर रहण आला अर मुकती की राही चाल्लणिया साद्धु दुरगत मैं ले जाण आले इन दोस्साँ नैं सिमझ कै बेस्साँ के धोरे की राही नैं भी छोड दे।

12. साद्धु के रस्ते मैं जै कुत्ता, ब्याई होई गाँ, बिचर्या होया बलद, घोड़ा, हाथी, बालकाँ के खेल्लण की या कलेस की जंगा पड़ ज्या तो उसतै दूर तै ए टल कै जावै।

13. साद्धु चालते होये ना तो घणा ऊँच्चा (अकास मैं देक्खदा होया या घमंड मैं भर्या होया) हो अर ना ए घणा नीच्चा (आच्छी तरियाँ रस्ते नैं ना देक्खदा होया या भोजन-पाणी ना मिल्लण तै अपणे नैं मजबूर सिमझता होया)। ओ ना तै (घणा) राज्जी हो अर ना ए (घणा) बेचैन। ओ इंदरियाँ नैं काब्बू मैं राक्खदा होया चाल्लै।

मूल: दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो अ गोयरे।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया॥14॥

छाया: द्रुतं द्रुतं न गच्छेत्, भाषमाणश्च गोचरे।
हसन्नाभिगच्छेत्, कुलमुच्चावचं सदा॥

मूल: आलोअं थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि अ।
चरंतो न विणिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए॥15॥

छाया: आलोकं चितं द्वारम्, संधिमुदकभवनानि च।
चरन्न विनिर्ध्यायेत्, शङ्कास्थानं विवर्जयेत्॥

मूल: रण्णो गिहवईणं च, रहस्सारक्खियाण य।
संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए॥16॥

छाया: राज्ञो गृहपतीनां च, रहस्यमारक्षकाणां च।
संक्लेशकरं स्थानम्, दूरतः परिवर्जयेत्॥

मूल: पडिकुट्ठं कुलं न पविसे, मामगं, परिवज्जए।
अचिअत्तं कुलं न पविसे, चिअत्तं पविसे कुलं॥17॥

छाया: प्रतिक्रुष्टं कुलं न प्रविशेत्, मामकं परिवर्ज्जयेत्।
अप्रीतं कुलं न प्रविशेत्, प्रीतं प्रविशेत्कुलम्॥

मूल: साणीपावारपिहियं, अप्पणा नावपंगुरे।
कवाडं नो पणुल्लिज्जा, उग्गहंसि अजाइया॥18॥

छाया: शाणीप्रावारपिहितम्, आत्मना नापवृणुयात्।
कपाटं न प्रणोदयेत्, अवग्रहमयाचित्वा॥

मूल: गोयरग्गपविट्ठो अ, वच्चमुत्तं न धारए।
ओगासं फासुअं नच्चा, अणुन्नविअ वोसिरे॥19॥

छाया: गोचराग्रप्रविष्टश्च, वर्चोमूत्रं न धारयेत्।
अवकाशं प्रासुकं ज्ञात्वा, अनुज्ञाप्य व्युत्सृजेत्॥

मूल: णीअदुवारं तमसं, कुट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा॥20॥

छाया: नीचद्वारं तमस्विनम्, कोष्ठकं परिवर्जयेत्।
अचक्षुर्विषयो यत्र, प्राणिनो दुष्प्रतिलेख्याः॥

14. साद्धु गोचरी (भोजन-पाणी) लेण जावै तो ऊँच्चे घराँ मैं भी जावै अर नीच्चे घराँ मैं भी। ओ कदे भी तौल़ा-तौल़ा या भाजदा होया ना चाल्लै। ओ बतल़ाँदा होया या हाँसता होया भी ना चाल्लै।

15. साद्धु गोचरी लेण जावै तो झरोक्खे, झाँकी, चिणी होई दिवार, कुआड़, दिवार के छेक, गल़ी या पनघट (न्हाण की जंगा) नैं ना देक्खै। ओ सक-सुबे आल़ी सारी जंगा टाल़ कै जावै।

16. राज्जा, नगर-सेठ, थाणेदार वगैरा की गुपत बात करण की जंगा अर कल़ेस या बेचैनी पैदा करण आल़ी दुक्ख देण आल़ी सारी जंगाँ नैं साद्धु दूर तै ए टाल़ दे।

17. बदनाम, रोक-टोक आल़े अर नफरत पैदा करण आल़े घराँ मैं साद्धु ना जावै। साद्धु के आण तै राजी होण आल़े घराँ मैं ए जावै।

18. कपड़े, पड़दे, चिक या किसे ओर चीज तै ढँके होए कुआड़ाँ नैं घर आल़ाँ तै बूज्झे बिना साद्धु अपणे-आप ना खोल्लै।

19. हगण-मूतण की हाज्जत हो तो साद्धु गोचरी लेण ना जावै। जाएँ पाच्छै हाज्जत हो जा तो फास्सू जंगा देख कै अर गिरस्थी तै बूझ कै ए फारग हो।

20. साद्धु इसी जंगा नैं टाल़ दे, जित कुआड़ नीच्चे हों, कमरे मैं अँधेरा हो अर जी-जिनौअर कुछ भी दीखदा ना हो। (वहां भोजन-पाणी खात्तर ना जावै।)

मूल: **जत्थ पुप्फाइं बीयाइं, विप्पइन्नाइं कोट्ठए।**
अहुणोवलित्तं उल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए॥21॥

छाया: यत्र पुष्पाणि बीजानि, विप्रकीर्णानि कोष्ठके।
अधुनोपलिप्तमार्द्रम्, दृष्ट्वा परिवर्ज्जयेत्॥

मूल: **एलगं दारगं साणं, वच्छगं वा वि कोट्ठए।**
उल्लंघिया न पविसे, विउहित्ताण व संजए॥22॥

छाया: एडकं दारकं श्वानम्, वत्सकं वाऽपि कोष्ठके।
उल्लङ्घ्य न प्रविशेत्, व्यूह्य वा संयतः॥

मूल: **असंसत्तं पलोइज्जा, नाइदूरावलोअए।**
उप्फुल्लं न विणिज्झाए, निअट्टिज्ज अयंपिरो॥23॥

छाया: असंसक्तं प्रलोकयेत्, नातिदूरादवलोकयेत्।
उत्फुल्लं न विनिर्ध्यायेत्, निवर्त्तेताऽजल्पाकः॥

मूल: **अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी।**
कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिअं भूमिं परक्कमे॥24॥

छाया: अतिभूमिं न गच्छेत्, गोचराग्रगतो मुनिः।
कुलस्य भूमिं ज्ञात्वा, मितां भूमिं पराक्रामेत्॥

मूल: **तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागं विअक्खणो।**
सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए॥25॥

छाया: तत्रैव प्रतिलिखेत्, भूमिभागं विचक्षणः।
स्नानस्य च वर्चसः, संलोकं परिवर्जयेत्॥

मूल: **दगमट्टिअआयाणे, बीआणिहरिआणि अ।**
परिवज्जंतो चिट्ठिज्जा, सव्विंदिअसमाहिए॥26॥

छाया: उदकमृत्तिकादानम्, बीजानि हरितानि च।
परिवर्जयंस्तिष्ठेत्, सर्वेन्द्रियसमाहितः॥

मूल: **तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहरे पाणभोयणं।**
अकप्पियं न गिण्हिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं॥27॥

छाया: तत्र तस्य तिष्ठतः, आहरेत् पानभोजनम्।
अकल्पिकं न गृह्णीयात्, प्रतिगृह्णीयात् कल्पिकम्॥

21. साद्धु इसी जंगा नैं दूर तै ए देख कै छोड दे जित फूल अर बीज फैल्ले पड़े हों अर हालोहाल लीपी-पोत्ती होण के कारण जो जंगा गील्ली हो।

22. किसे कमरे या घर की चोक्खट पै जै कोये बकरा, बालक, कुत्ता, बाछड़ा वगैरा खड़्या हो तो साद्धु उसनैं लांघ कै या हटा कै कमरे या घर मैं ना जावै।

23. साद्धु ललचाई आँक्खाँ तै किसे नैं ना देक्खै। घणी दूर तै किसे चीज नैं ना देक्खै अर दीदे पाड़ कै भी ना देक्खै। किसे घर तै भोजन-पाणी ना मिल्लै तो कोये भी बुराई करे बिना बोलबाला घर तै चल्या आवै।

24. भोजन-पाणी लेण गया होया साद्धु घर मैं वहीं तक जावै, जहाँ तक जाण की छूट हो। उस हद नैं लांघ कै आग्गै ना जावै।

25. संजम मैं रम्या होया साद्धु घर मैं जहाँ तक जाण की छूट हो, वहाँ तक की जमीन नैं आच्छी तरियाँ देक्ख ले। ओ न्हाण की अर फारिग होण की जंगा देक्खण तै बचै।

26. अपणी सारी इंदरियाँ पै काब्बू राक्खणिया साद्धु रस्ते मैं ठीक जंगा ए खड़ा होवै। उस रस्ते तै लोग पाणी, माट्टी, बीज अर हरी बनासपति लांदे हों तो ओ अपणे-आप्पे नैं उन चीज्जाँ (के छूण) तै बचावै।

27. ठीक जंगा खड़्या होया साद्धु भोजन-पाणी लेवै। जै ओ कल्पदा (सास्तराँ मैं बताई बात्ताँ के हिसाब तै ठीक) हो तो लेवै अर ना कल्पदा हो तो ना लेवै।

मूल: **आहरंती सिया तत्थ, परिसाडिज्ज भोयणं।**
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥28॥

छाया: आहरन्ती स्यात् तत्र, परिशाटयेद् भोजनम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥

मूल: **संमद्दमाणी पाणाणि, बीआणि हरिआणि य।**
असंजमकरिं नच्चा, तारिसं परिवज्जए॥29॥

छाया: संमर्दयन्ती प्राणिन:, बीजानि हरितानि च।
असंयमकरीं ज्ञात्वा, तादृशीं परिवर्जयेत्॥

मूल: **साहट्टु निक्खिवित्ताणं, सचित्तं घट्टियाणि य।**
तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणुल्लिया॥30॥

छाया: संहृत्य निक्षिप्य, सचित्तं घट्टयित्वा च।
तथैव श्रमणार्थाय, उदकं संप्रणुद्य॥

मूल: **ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहरे पाणभोयणं।**
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥31॥ युग्मम्

छाया: अवगाह्य चालयित्वा, आहरेत् पानभोजनम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥ युग्मम्

मूल: **पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।**
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥32॥

छाया: पुर:कर्मणा हस्तेन, दर्व्या भाजनेन वा।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥

मूल: **एवं उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टिआ ऊसे।**
हरिआले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे॥33॥

छाया: एवमुदकार्द्र: सस्निग्ध:, सरजस्क: मृत्तिका ऊष:।
हरितालो हिङ्गुलक:, मन:शिला अञ्जनं लवणम्॥

मूल: **गेरुअ-वन्निय-सेडिअ-, सोरट्ठिअ-पिट्ठ-कुक्कुसकए य।**
उक्किट्ठमसंसट्ठे, संसट्ठे चेव बोधव्वे॥34॥ [युग्मम्]

छाया: गैरिक-वर्णिक-सेटिक-, सौराष्ट्रिक-पिष्ट-कुक्कुसकृतेन च।
उत्कृष्टमसंसृष्ट:, संसृष्टश्चैव बोद्धव्य:॥

28. भोजन-पाणी देण आली (आला) जै खिंडाती (खिंडाता) होई (होया) भोजन-पाणी लावै तो साद्धु उसनैं कह्वै- हे बाह्मण! (भाई) यो भोजन-पाणी लेणा मनैं कोन्या कल्पदा। उसके हात्थ तै ओ भोजन-पाणी ना लेवै।

29. जी-जिनौअराँ, बीज्जाँ अर हरी बनासपति नैं पाँयाँ तै मसलती होई (मसलते होये) बाह्मण (भाई) संजम कोन्यां राक्ख्या करदी (करदा)। साद्धु उसके हात्थ तै भी भोजन-पाणी ना लेवै।

30-31. इसे तरियाँ कोये देण आली (आला) साद्धु की खात्तर एक बरतन तै दूसरे मैं घाल कै, सचित अर अचित नैं मिला कै, अचित के ऊपर सचित नैं धर कै, अचित तै सचित नैं भिड़ा कै या रगड़ कै, पाणी चला कै या पाणी मैं चालते होये आ कै भोजन-पाणी देवै तो साद्धु उसतै कह्वै अक् यो मेरे लेण जोग्गा कोन्या।

32-34. भोजन-पाणी देण तै पहलाँ सचित पाणी तै हात्थ-कड़छी-बरतन वगैरा धो कै देण आली (आले) तै साद्धु न्यूँ कह्वै अक् मैं इस तरियाँ दिया होया भोजन-पाणी कोन्या ले सकदा। इसे तरियाँ पाणी टपकते, सचित माट्टी-भरे, धूल-धमंडल, कीच-लाग्गे, नूणी माट्टी-लाग्गे, हलदी-लाग्गे, नूण वगैरा लाग्गे, गेरू लाग्गे, पीली-धौली माट्टी लाग्गे, फिटकरी लाग्गे, चावलाँ के आट्टे-भरे, बिना छणे आट्टे-भरे, नाज की भूसी वगैरा तै भरे अर फलाँ के टुकड़े लाग्गे होये या ना लाग्गे होये हात्थाँ की बाबत भी सिमझणा चहिये।

मूलः असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, पच्छाकम्मं जहिं भवे॥35॥

छायाः असंसृष्टेन हस्तेन, दर्व्या भाजनेन वा।
दीयमानं नेच्छेत्, पश्चात्कर्म यत्र भवेत्॥

मूलः संसट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाण पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे॥36॥

छायाः संसृष्टेन च हस्तेन, दर्व्या भाजनेन वा।
दीयमानं प्रतीच्छेत्, यत्तत्रैषणीयं भवेत्॥

मूलः दुण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, छंदं से पडिलेहए॥37॥

छायाः द्वयोस्तु भुञ्जानयोः, एकस्तत्र निमन्त्रयेत्।
दीयमानं नेच्छेत्, छन्दं तस्य प्रतिलेखयेत्॥

मूलः दुण्हं तु भुंजमाणाणं, दोवि तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे॥38॥

छायाः द्वयोस्तु भुञ्जानयोः, द्वावपि तत्र निमन्त्रयेत्।
दीयमानं प्रतीच्छेत्, यत्तत्रैषणीयं भवेत्॥

मूलः गुव्विणीए उवण्णत्थं, विविहं पाणभोयणं।
भुंजमाणं विवज्जिज्जा, भुत्तसेसं पडिच्छए॥39॥

छायाः गुर्विण्या उपन्यस्तम्, विविधं पानभोजनम्।
भुज्यमानं विवर्ज्जयेत्, भूक्तशेषं प्रतीच्छेत्॥

मूलः सिआ य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी।
उट्ठिआ वा निसीइज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए॥40॥

छायाः स्याच्च श्रमणार्थम्, गुर्व्विणी कालमासवती।
उत्थिता वा निषीदेत्, निषण्णा वा पुनत्तिष्ठेत्॥

मूलः तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतियं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥41॥ युग्मम्

छायाः तद्भवेद् भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥ युग्मम्

35. पस्चात् करम दोस (साद्धु तै भोजन-पाणी दियें पाछै बरतन, कपड़े, हात्थ वगैरा सचित पाणी तै धोणे पड़ैं तो यो दोस लाग्या करै) जहाँ लाग्गदा हो, वहाँ बेस्सक किसे चीज मैं हात्थ, कड़छी या बरतन ना भरे हों, फेर भी साद्धु ओ भोजन-पाणी ना लेवै।

36. (साद्धु के आण तै पहलाँ ए) भोजन-पाणी लाग्गे होये हात्थ, बरतन, कपड़े वगैरा तै दिया होया भोजन-पाणी बिना दोस का हो तो साद्धु ले सकै सै।

37. एक्कै चीज जै दो जणाँ के काम आंदी हो अर उनमैं तै एक, साद्धु तै वा चीज देंदा हो तो साद्धु दूसरे जणे की नीत जरूर देक्ख ले।

38. एक्कै चीज जै दो जणाँ के काम आंदी हो अर दोन्नूँ ए वा चीज साद्धु तै देंदे हों तो साद्धु इसी बिना दोस की चीज ले लेवै।

39. अहिंसा बरत लेण आला साद्धु, पेट मैं बाल़क आल़ी लुगाई की खात्तर खासकर कै त्यार करी होई कई तरियाँ की खाण-पीण की चीजाँ मैं तै कुछ ना लेवै। जै वे चीज खाएँ पाछै बच र्‌ही हों तो ले लेवै।

40-41. पूरे पेट आल़ी लुगाई (जिसकै बाल़क होण मैं थोड़ा ए टैम रह र्‌हया हो, वा) साद्धु तै भोजन-पाणी देण की खात्तर खड़ी होई बैट्ठै अर बैट्ठी होई खड़ी होवै तो ओ भोजन-पाणी साद्धु नैं कोन्या लेणा। इसलिए ओ देण आल़ी तै कह दे अक् इसा भोजन-पाणी लेणा मनैं कोन्या कल़पदा।

मूल: थणगं पिज्जमाणी, दारगं वा कुमारिअं।
तं निक्खिवित्तु रोअंतं, आहरे पाणभोयणं।।42।।

छाया: स्तनकं पाययन्ती, दारकं वा कुमारिकाम्।
तौ निक्षिप्य रुदन्तौ, आहरेत् पानभोजनम्।।

मूल: तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।43।। युग्मम्

छाया: तद्भवेद् , भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्।। युग्मम्

मूल: जं भवे भत्तपाणं तु, कप्पाकप्पम्मि संकिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।44।।

छाया: यद्भवेद् भक्तपानन्तु, कल्पाकल्पे शाङ्कितम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्।।

मूल: दगवारेण पिहिअं, नीसाए पीढएण वा।
लोढेण वावि लेवेण, सिलेसेण व केणइ।।45।।

छाया: उदकवारेण पिहितम्, निःसारिकया पीठकेन वा।
लोष्ठेन वाऽपि लेपेन, श्लेषेण वा केनचित्।।

मूल: तं च उब्भिंदिआ दिज्जा, समणट्ठाए व दावए।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।46।। युग्मम्

छाया: तच्च उद्भिद्य दद्यात्, श्रमणार्थं वा दायकः।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्।। युग्मम्

मूल: असण पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, दाणट्ठा पगडं इमं।।47।।

छाया: अशनं पानकं वाऽपि, खाद्यं स्वाद्यं तथा।
यज्जानीयात् श्रृणुयाद्वा, दानार्थं प्रकृतमिदम्।।

मूल: तारिसं भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।48।। युग्मम्

छाया: तादृशं भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्।।

42-43. नन्हे बालक नैं दूध प्यांदी होई लुगाई, उस रोंदे होये बालक नैं गोदी तै तार कै भोजन-पाणी देण लागै तो उसा भोजन-पाणी साद्धु नैं कोन्या लेणा। इसलिए ओ देण आली माता तै कह दे अक् इसा भोजन-पाणी लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

44. जै इसा कोये सक-सुबा हो ज्या कि यो भोजन-पाणी कल्पै सै या कोन्या कल्पदा तो साद्धु देण आली तै कह दे अक् इसा भोजन-पाणी लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

45-46. पाणी के मटके तै, पत्थर की चाक्की तै, चोंक्की तै, लोड्ढी तै, माट्टी के लेप तै, लाख वगैरा की मोह्र तै या ओर किसे चीज तै भोजन-पाणी ढँक्या हो अर देणिया साद्धु की खात्तर ए उघाड़ कै या खोल कै देंदा हो तो साद्धु कह दे अक् इसा भोजन-पाणी लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

47-48. नाज, पाणी, खाण की या सुआद की चीज की बाबत साद्धु नैं आप या किसे ओर तै सुण कै बेरा लग लिया हो अक् या चीज दान करण की खात्तर ए बणवा राखी सै तो ओ भोजन-पाणी साद्धु के लेण जोग्गा ना होंदा। उसकी बाबत ग्यान्नी साद्धु देणिये तै साफ कह दे अक् इसा भोजन-पाणी लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

मूल: असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं॥49॥

छाया: अशनं पानकं वाऽपि, खाद्यं स्वाद्यं तथा।
यज्जानीयात् शृणुयाद्वा, पुण्यार्थं प्रकृतमिदम्॥

मूल: तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥50॥ युग्मम्

छाया: तद्भवेद् भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥

मूल: असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, वणिमट्ठा पगडं इमं॥51॥

छाया: अशनं पानकं वाऽपि, खाद्यं स्वाद्यं तथा।
यज्जानीयात्शृणुयाद्वा, वनीपकार्थप्रकृतमिदम्॥

मूल: तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥52॥ युग्मम्

छाया: तद्भवेद् भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥

मूल: असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं॥53॥

छाया: अशनं पानकं वाऽपि, खाद्यं स्वाद्यं तथा।
यज्जानीयात् शृणुयाद्वा, श्रमणार्थं प्रकृतमिदम्॥

मूल: तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥54॥ युग्मम्

छाया: तद्भवेद् भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥ युग्मम्

मूल: उद्देसियं कीअगडं, पूइकम्मं च आहडं।
अज्झोअरपामिच्चं, मीसजायं विवज्जए॥55॥

छाया: औद्देशिकं क्रीतकृतम्, पूतिकर्म च आहृतम्।
अध्यवपूरकं प्रामित्यम्, मिश्रजातं विवर्ज्जयेत्॥

49-50. नाज, पाणी, खाण की या सुआद की चीज की बाबत साद्धु नैं आप या किसे ओर तै सुण कै बेरा लग लिया हो अक् या चीज पुन्न करण की खात्तर ए बणवा राखी सै तो ओ भोजन-पाणी साद्धु के लेण जोग्गा ना होंदा। उसकी बाबत साद्धु दान्नी तै कह दे अक् इसा भोजन-पाणी लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

51-52. नाज, पाणी, खाण की या सुआद की चीज की बाबत साद्धु नैं आप या किसे ओर तै सुण कै बेरा लग लिया हो अक् ये चीज मँगताँ की खात्तर ए बणवा राखी सैं तो वे चीज साद्धु के लेण जोग्गी ना होंदी। इसलिए साद्धु देण आली तै साफ कह दे अक् इसा भोजन-पाणी लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

53-54. नाज, पाणी, खाण की या सुआद की चीज की बाबत साद्धु नैं आप या किसे ओर तै सुण कै बेरा लग लिया हो अक् ये चीज साद्धुआँ की खात्तर ए बणवा राखी सैं तो वे चीज साद्धु के लेण जोग्गी ना होंदी। इसलिए साद्धु देण आली तै साफ कह दे अक् ये चीज लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

55. औद्देशिक (साद्धु की ए खात्तर बणाया होया), क्रीतकृत (साद्धु की ए खात्तर मोल लिया होया), पूतिकर्म (साद्धु की खात्तर बणाई होई कोये चीज थोड़ी-सी भी किसे ओर चीज मैं मिल ज्या तो वा दाग्गी या दोस आली बण जाया करै। यो काम जिस घर मैं होवै ओ तीन

मूल: उग्गमं से अ पुच्छिज्जा, कस्सट्ठा केण वा कडं।
सुच्चा निस्संकियं सुद्धं, पडिगाहिज्ज संजए॥56॥

छाया: उद्गमं तस्य च पृच्छेत्, कस्यार्थं केन वा कृतम्।
श्रुत्वा निःशङ्कितं शुद्धम्, प्रतिगृह्णीयात् संयतः॥

मूल: असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
पुप्फेसु हुज्ज उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा॥57॥

छाया: अशनं पानकं वाऽपि, खाद्यं स्वाद्यं तथा।
पुष्पैर्भवेदुन्मिश्रम्, बीजैर्हरितैर्वा॥

मूल: तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥58॥ युग्मम्

छाया: तद्भवेद् भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥

मूल: असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।
उदगम्मि हुज्ज निक्खित्तं, उत्तिंगपणगेसु वा॥59॥

छाया: अशनं पानकं वाऽपि, खाद्यं स्वाद्यं तथा।
उदके भवेत् निक्षिप्तम्, उत्तिङ्गपनकेषु वा॥

मूल: तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥60॥ युग्मम्

छाया: तद्भवेद् भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥ युग्मम्

दिन ताईं दाग्गी रह्या करै। इसलिए उस घर तै चार दिन ताईं लिया होया), आहृत (साद्धु की खात्तर स्थानक मैं ला कै दिया होया), अध्यवतर (अपणी खात्तर भोजन-पाणी बणांदे होये साद्धुआँ नैं याद करकै बढाया होया), प्रामित्य (साद्धु की ए खात्तर उधार लिया होया) अर मिश्रजात (अपणी अर साद्धुआँ की खात्तर मिला कै बणाया होया) भोजन-पाणी लेण तै साद्धु साफ मना करते होये कह दे अक् इसा भोजन-पाणी लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

56. पहलाँ बताए होये भोजन-पाणी की बाबत सक-सुबा हो जा तो साद्धु देणिये तै बूझै अक् यो किसनैं अर किसकी खात्तर बणाया सै। जै ओ भोजन-पाणी सक-सुबा मेट्टण आल़ा अर बिना दोस का दीक्खै तो साद्धु लेवै अर ना दीक्खै तो ना लेवै।

57-58. नाज, पाणी, खाण की या सुआद की चीज फूल्लाँ मैं, बीजाँ मैं अर हरी बनासपति वगैरा मैं मिली होई हो तो वे चीज साद्धु के लेण जोग्गी ना होंदी। इसलिए साद्धु देण आल़ी तै साफ कह दे अक् ये चीज लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

59-60. नाज, पाणी, खाण की या सुआद की चीज सचित पाणी पै, कीड़ी वगैरा के झुंड पै या फफूँद पै धरी हों तो वे चीज साद्धु के लेण जोग्गी ना होंदी। इसलिए साद्धु देण आल़ी तै साफ कह दे अक् ये चीज लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

मूल: **असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा।**
तेउम्मि हुज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिया दए॥61॥

छाया: अशनं पानकं वाऽपि, खाद्यं स्वाद्यं तथा।
तेजसिभवेत् निक्षिप्तम्, तं च संघट्ट्य दद्यात्॥

मूल: **तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।**
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥62॥ युग्मम्

छाया: तद्भवेद् भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥ युग्मम्

मूल: **एवं उस्सक्किया ओसक्किया,**
उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया।
उस्सिंचिया निस्सिंचिया, ओवत्तिया ओयारिया दए॥63॥

छाया: एवमुत्ष्वष्क्यावष्वष्क्य, उज्ज्वाल्य प्रज्वाल्य निर्वाप्य।
उत्सिच्य निषिच्य, अपवर्त्य अवतार्य दद्यात्॥

मूल: **तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।**
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥64॥ युग्मम्

छाया: तद्भवेद् भक्तपानन्तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥ युग्मम्

मूल: **हुज्ज कट्ठं सिलं वावि, इट्टालं वावि एगया।**
ठवियं संकमट्ठाए, तं च होज्ज चलाचलं॥65॥

छाया: भवेत् काष्ठं शिला वाऽपि, इष्टिका वाऽपि एकदा।
स्थापितं संक्रमार्थम्, तच्च भवेत् चलाचलम्॥

मूल: **ण तेण भिक्खू गच्छेज्जा, दिट्ठोतत्थ असंजमो।**
गंभीरं झुसिरं चेव, सव्विंदिअसमाहिए॥66॥ युग्मम्

छाया: न तेन भिक्षुर्गच्छेत्, दृष्टस्तत्र असंयमः।
गम्भीरं शुषिरं चैव, सर्वेन्द्रियसमाहितः॥ युग्मम्

मूल: **निस्सेणिं फलगं पीढं, उस्सवित्ताणमारुहे।**
मंचं कीलं च पासायं, समणट्ठा एव दावए॥67॥

छाया: निश्रेणिं फलकं पीठम्, उत्सृत्य आरोहेत्।
मञ्चं कीलं च प्रासादम्, श्रमणार्थमेव दायकः॥

61-62. जै नाज वगैरा चारूँ तरियाँ का भोजन-पाणी आग पै धर्‌या हो या देणिया आग कै हाथ लांदा होया/ला कै देवै तो साद्धु नैं ओ नहीं लेणा चहिये। देणिये तै कह देणा चहिये अक् यो मेरे लेण जोग्गा कोन्या इसलिए मैं नहीं ले सकदा।

63-64. इसै तरियाँ जै कोये देणिया चूल्हे मैं ईंद्धण गेर कै, चूल्हे मैं तै ईंद्धण काढ कै, चूल्हे नैं बाल कै, फूँक कै (उसकी आँच बढा कै), बल्दी आग नैं बुझा कै, आग पै धरे बरतन मैं तै थोड़ा-सा नाज काढ कै, आग पै धरे बरतन मैं पाणी का छींटा दे कै, आग पै धरे नाज नैं दूसरे बरतन मैं घाल कै अर आग पै तै बरतन तार कै साद्धु नैं भोजन-पाणी देवै तो ओ साद्धु के लेण जोग्गा कोन्या होंदा। इसलिए साद्धु देण आली तै साफ कह दे अक् यो लेणा मनैं कोन्या कल्पदा।

65-66. बारिस वगैरा के मौसम मैं रस्ते मैं काठ, पत्थर, ईंट वगैरा धरी हों अर वे आच्छी तरियाँ जमी होई ना होण के कारण हालदी हों तो साद्धु उनपै कै ना आवै-जावै। न्यूँ आण-जाण तै असंजम हो सकै सै। इसे तरियाँ अपणी इंदरियाँ पै काब्बू राक्खणिया साद्धु अँधेरे अर पोले रस्ताँ तै भी ना आवै-जावै।

67. कोये देणिया साद्धु तै भोजन-पाणी देण की खात्तर ए घर मैं सीढी, तख्ते, पीढे, चौंकी, फट्टे या खंभे वगैरा पै चढकै या इनका सहारा ले कै देवै तो साद्धु ओ भोजन-पाणी ना लेवै।

मूल: दुरूहमाणी पवडेज्जा, हत्थं पायं व लूसए।
पुढविजीवे वि हिंसिज्जा, जे अ तन्निस्सिया जगे॥68॥

छाया: दुरारोहन्ती प्रपतेत्, हस्तं पादं वा लूषयेत्।
पृथिवीजीवानपि हिंस्यात्, ये च तन्निश्रिता जगति॥

मूल: एआरिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो।
तम्हा मालोहडं भिक्खं, न पडिगिण्हंति संजया॥69॥

छाया: एतादृशान् महादोषान्, ज्ञात्वा महर्षयः।
तस्मान्मालापहृतां भिक्षाम्, न प्रतिगृह्णन्ति संयताः॥

मूल: कंदं मूलं पलंबं वा, आमं छिन्नं च सन्निरं।
तुंबागं सिंगबेरं च, आमगं परिवज्जए॥70॥

छाया: कन्दं मूलं प्रलम्बं वा, आमं छिन्नं च सन्निरम्।
तुम्बकं शृङ्गवेरं च, आमकं परिवर्ज्जयेत्॥

मूल: तहेव सत्तुचुन्नाइं, कोलचुन्नाइं आवणे।
सक्कुलिं फाणियं पूयं, अन्नं वावि तहाविहं॥71॥

छाया: तथैव सक्तुचूर्णान्, कोलचूर्णान् आपणे।
शष्कुलिं फाणितं पूपम्, अन्यद्वाऽपि तथाविधम्॥

मूल: बिक्कायमाणं पसढं, रएण परिफासिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥72॥युग्मम्

छाया: विक्रीयमाणं प्रसह्यम्, रजसा परिस्पृष्टम्।
ददतीं प्रत्यचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥ युग्मम्

मूल: बहुअट्ठियं पुग्गलं, अणिमिसं वा बहुकंटयं।
अत्थियं तिंदुअं बिल्लं, उच्छुखंडं व सिंबलिं॥73॥

छाया: वह्वस्थिकं पुद्गलम्, अनिमिषं वा बहुकण्टकम्।
अस्थिकं तिन्दुकं बिलवम्, इक्षुखण्डं वा शाल्मलिम्॥

मूल: अप्पे सिया भोयणजाए, बहुउज्झियधम्मिए।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥74॥ युग्मम्

छाया: अल्पंस्याद् भोजनजातम्, बहूज्झनधर्मकम्।
ददतीं प्रत्यचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥ युग्मम्

68-69. इन पहलाँ बताई होई सीढी वगैरा पै दुक्ख पा कै चढण तै देणिया तलै पड़ सकै सै। उसके हाथ-पाँ टूट सकैं सैं। (उसकै चोट लाग सकै सै।) प्रिथवीकाय अर उसके आसरे रहण आले जीव दुक्ख पा सकैं सैं या मर सकैं सैं। संजम मैं रम्या होया साद्धु इन सारे कसूत्ते दोस्साँ नैं आच्छी तरियाँ सिमझ्या कर अर कदे भी किसे ऊपर की जंगा तै तार कै लाया होया भोजन-पाणी कोन्या लिया करदा।

70. कंद, मूल, फल, पत्ताँ का साग, तुम्बा, अदरक वगैरा सचित हों अर छोल-काट राक्खे हों पर आग मैं पूरे पाके होये या फास्सू ना हों तो आतमा की खात्तर जीण आला साद्धु उननैं कदे भी ना लेवै।

71-72. इसै तरियाँ बजार मैं दुक्कानाँ पै बेचण खात्तर सजाया होया सचित धूल मैं भरा सत्तू, चूरन, बेर का चूरन, तिल, पापड़ी, ढील्ला गुड़, पूआ अर इसी ए ओर खाण की चीज साद्धु नैं मिलती हों तो ना लेवै अर देणिये तै कह दे अक् ये चीज लेणा मनैं कोन्या कलपदा।

73-74. इसै तरियाँ घणी गुठली आले, बीजाँ आले, गूदे आले, मना करे होये, घणे कांड्यां आले फल, अस्थिक (एक खास किसम की फली) फल, तेंदुक फल, बेल, गँडेरी या ओर कोये इसी चीज, जिसमैं खाण का थोड़ा हो अर फैंक्कण का घणा, साद्धु नैं मिलती हों तो ना लेवै अर देणिये तै कह दे अक् ये चीज लेणा मनैं कोन्या कलपदा।

मूल: तहेवुच्चावयं पाणं, अदुवा वारधोअणं।
संसेइमं चाउलोदगं, अहुणाधोअं विवज्जए॥75॥

छाया: तथैवोच्चावचं पानम्, अथवा वारकधावनम्।
संस्वेदजं तण्डुलोदकम्, अधुनाधौतं विवर्ज्जयेत्॥

मूल: जं जाणेज्ज चिराधोअं, मइए दंसणेण वा।
पडिपुच्छिऊण सुच्चा वा, जं च निस्संकिअं भवे॥76॥

छाया: यज्जानीयात् चिराद्धौतम्, मत्या दर्शनेन वा।
प्रतिपृच्छ्य श्रुत्वा वा, यच्च निःशङ्कितं भवेत्॥

मूल: अजीवं परिणतं नच्चा, पडिगाहिज्ज संजए।
अह संकियं भविज्जा, आसाइत्ताण रोअए॥77॥

छाया: अजीवं परिणकं ज्ञात्वा, प्रतिगृह्णीयात् संयतः।
अथ शङ्कितं भवेत्, आस्वाद्य रोचयेत्॥

मूल: थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे।
मा मे अच्चंबिलं पूअं, नालं तिण्हं विणित्तए॥78॥

छाया: स्तोकमास्वादनार्थम्, हस्तके देहि मे।
मा मे अत्यम्लं पूति (तं), नालं तृष्णां विनेतुम्॥

मूल: तं च अच्चंबिलं पूअं, नालं तिण्हं विणित्तए।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥79॥ युग्मम्

छाया: तच्च अत्यम्लं पूति (तं), नालं तृष्णां विनेतुम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥ युग्मम्

मूल: तं च होज्ज अकामेणं, विमणेणं पडिच्छिअं।
तं अप्पणा न पिबे, नोवि अन्नस्स दावए॥80॥

छाया: तच्च भवेत् अकामेन, विमनस्केन प्रतीप्सितम्।
तदात्मना न पिबेत्, नोऽप्यन्यस्मै दापयेत्॥

मूल: एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं, पडिलेहिआ।
जयं परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिकम्मे॥81॥

छाया: एकान्तमवक्रम्य, अचित्तं प्रतिलेख्य।
यतं परिष्ठापयेत्, परिष्ठाप्य प्रतिक्रामेत्॥

75. जिस तरियाँ नाज वगैरा खाण की चीजाँ की बाबत बताया सै, उस्से तरियाँ आच्छा (सुआद ज्युक्कर दाक्ख का) अर बुरा (बेसुआद या खराब कांजी का) पाणी, गुड़ के थड़े की धोवण, आट्टे की धोवण, चौलाँ की धोवण का पाणी हालोंहाल त्यार होया हो तै साद्धु कदे भी ना लेवै।

76. अपणी अकल तै सोच कै, आप देक्ख कै, देणिये तै बूझ कै या सुण कै अक् 'यो पाणी घणी देर का सै' जै साद्धु कै कती जँच ज्या तो ओ धोवण का पाणी ले ले।

77. साद्धु अचित होया होया पूरी तरियाँ फास्सु पाणी ए लेवै। फास्सु पाणी की बाबत भी जै सक हो ज्या अक् यो पाणी मेरे सुभा अर सेहत खात्तर ठीक कोन्या रह्वै तो उसनैं चाख कै लेण या ना लेण की सोच्चै (तै करै)।

78. (साद्धु देण आली तै कह्वै अक्) बाहण! चाक्खण खात्तर मनैं थोड़ा-सा पाणी हाथ मैं दे क्यूँ अक् घणा खट्टा, सड़्या होया अंर प्यास ना मेट्टण आला पाणी मेरे मतलब का कोन्यां इसलिए ओ लेण जोग्गा कोन्या।

79. (साद्धु के मना करें पाच्छै भी) जै देण आली जिद करकै इसा खट्टा, सड़्या होया अर प्यास ना मेट्टण आला पाणी देण लाग्गै तो साद्धु उसतै साफ कह दे अक् इस तरियाँ का पाणी लेणा मन्नैं कोन्या कलपदा।

80. जै इस तरियाँ का (पहलाँ बताया होया) ना लेण जोग्गा पाणी मन मार कै या लापरवाई तै ले लिया हो तो साद्धु नैं चहिये अक् ओ पाणी ना तै आप पीवै अर ना ए किसे ओर तै प्यावै।

81. किसे सून्नी (जी-जिनौराँ तै खाल्ली) जंगा जा कै, उसनैं आच्छी तरियाँ देख-भाल कै यतना (पूरे ध्यान) तै उस पाणी नैं अराम तै गेर दे अर गेरैं पाच्छै परतिकरमण (कोये दोस लाग्या हो तो अपणी आलोचना) कर ले।

मूलः सिआ य गोयरग्गगओ, इच्छिज्जा परिभुत्तुअं।
कुट्ठगं भित्तिमूलं वा, पडिलेहित्ताण फासुअं॥82॥

छायाः स्याच्च गोचराग्रगतः, इच्छेत् परिभोक्तुम्।
कोष्ठकं भित्तिमूलं वा, प्रतिलेख्य प्रासुकम्॥

मूलः अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि संवुडे।
हत्थगं संपमज्जित्ता, तत्थ भुंजिज्ज संजए॥83॥

छायाः अनुज्ञाप्य मेधावी, प्रतिच्छन्ने संवृतः।
हस्तकं सम्प्रमृज्य, तत्र भुञ्जीत संयतः॥

मूलः तत्थ से भुंजमाणस्स, अट्ठिअं कंटओ सिया।
तणकट्ठसक्करं वावि, अन्नं वावि तहाविहं॥84॥

छायाः तत्र तस्य भुञ्जानस्य, अस्थिकं कण्टकः स्यात्।
तृण-काष्ठ-शर्करा वाऽपि, अनयद्वाऽपि तथाविधम्॥

मूलः तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डए।
हत्थेण तं गहेऊण, एगंतमवक्कमे॥85॥

छायाः तदुत्क्षिप्य न निक्षिपेत्, आस्येन न छर्दयेत्।
हस्तेन तद् गृहीत्वा, एकान्तमवक्रामेत्॥

मूलः एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिआ।
जयं परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे॥86॥

छायाः एकान्तमवक्रम्य, अचित्तं प्रतिलेख्य।
यतं परिष्ठापयेत्, परिष्ठाप्य प्रतिक्रामेत्॥

मूलः सिआ य भिक्खू इच्छिज्जा, सिज्जमागम्म भुत्तुअं।
सपिंडपायमागम्म, उंडुअं पडिलेहिआ॥87॥

छायाः स्याच्च भिक्षुरिच्छेत्, शय्यामागम्य भोक्तुम्।
सपिण्डपातमागम्य, उन्दुकं प्रतिलेख्य॥

मूलः विणएणं पविसित्ता, सगासे गुरुणा मुणी।
इरियावहियमायाय, आगओ अ पडिक्कमे॥88॥

छायाः विनयेन प्रविश्य, सकाशे गुरोर्मुनिः।
ईर्यापथिकीमादाय, आगतश्च प्रतिक्रामेत्॥

82-83. गोचरी लेण गाम (या सैह्र) मैं गये होये श्याणे साद्धु नैं जै कदे मजबूरी मैं वहीं खाण-पीण की जरूरत पड़ ज्या तो ओ गिरस्थी तै बूझ कै खाल्ली घर मैं या किसे दिवार धोरै बिना जीवाँ की जमीन आच्छी तरियाँ देक्ख कै, बुहार कै अपणे सरीर नैं धो-पूँझ कै छाँह मैं पूरे ध्यान तै भोजन-पाणी लेवै।

84-86. पहलाँ बताई होई ठीक जंगा भोजन-पाणी लेत्ते होये जै साद्धु के भोजन-पाणी मैं गुठली, काँडा, तुणका, काठ, काँकर अर इसी कोये चीज आ ज्या तो ओ उन चीजाँ नैं ठा कै ना तो इधर-उधर फैंकै अर ना मूँ तै अवाज करदा होया थूक्कै। उन्नैं सिम्भाल कै यतना तै अपणे हाथ मैं ले कै बिना जीवाँ की जंगा चला ज्या अर वहाँ अचित जमीन देख-भाल कै फैंक्कण जोग्गी जंगा ए फैंकै अर फैंके पाच्छै परतिकरमण (कोये दोस लाग्या हो तो अपणी आलोचना) कर ले।

87. कोये खास बात ना हो अर साद्धु चाह्वै अक् उपासरे (स्थानक, ठहरण की जंगा) मैं जा कै ए भोजन-पाणी खाऊँ-पीऊँ तो बिना दोस का भोजन-पाणी ले कै ओ अपणे उपासरे मैं आ ज्या अर भोजन की जंगा नैं देक्खै-भालै, जरूरत हो तो साफ करै। फेर ओ ल्याए होये भोजन-पाणी की सुद्धी परतिकरमण (कोये दोस लाग्या हो तो अपणी आलोचना) करकै कर ले।

88. सबतै पहलाँ नरमाई तै 'मत्थएणं वंदामि' कहंदा होया उपासरे मैं आवै। गुरु या आचार्य धोरै आकै 'इरियावहियाए' का पूरा पाठ पढै अर कायोत्सर्ग (देही की ममता छोड्डण आला ध्यान) करै।

मूलः आभोइत्ताण नीसेसं, अइआरं जहक्कमं।
गमणागमणे चेव, भत्तपाणे च संजए॥89॥

छायाः आभोगयित्वा निःशेषम्, अतिचारं यथाक्रमम्।
गमनागमनयोश्चैव, भक्तपानयोश्च संयतः॥

मूलः उज्जुपन्नो अणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा।
अलोए गुरुसगासे, जं जहा गहिअं भवे॥90॥

छायाः ऋजुप्रज्ञोऽद्विग्नः, अव्याक्षिप्तेन चेतसा।
आलोचयेद् गुरुसकाशे, यद् यथा गृहीतं भवेत्॥

मूलः न सम्ममालोइअं हुज्जा, पुव्विं पच्छा व जं कडं।
पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसट्ठो चिंतए इमं॥91॥

छायाः न सम्यगालोचितं भवेत्, पूर्वं पश्चादवा यत्कृतम्।
पुनः प्रतिक्रामेत् तस्य, व्युत्सृष्टश्चिन्तयेदिदम्॥

मूलः अहो जिणेहिं असावज्जा, वित्ती साहूण देसिया।
मुक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा॥92॥

छायाः अहो जिनैरसावद्या, वृत्तिः साधूनां देशिता।
मोक्षसाधनहेतोः, साधुदेहस्य धारणाय॥

मूलः णमुक्कारेण पारित्ता, करित्ता जिणसंथवं।
सज्झायं पट्ठवित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी॥93॥

छायाः नमस्कारेण पारयित्वा, कृत्वा जिनसंसत्वम्।
स्वाध्यायं प्रस्थाप्य, विश्राम्येत् क्षणं मुनिः॥

मूलः वीसमंतो इमं चिंते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू हूज्जामि तारिओ॥94॥

छायाः विश्राम्यन्निमं चिन्तयेत्, हितमर्थं लाभार्थिकः।
यदि मेऽनुग्रहं कुर्यात्, साधुर्भवामि तारितः॥

89. गोचरी ले कै आण आला साद्धु कायोत्सर्ग करदा होया आण-जाण मैं अर भोजन-पाणी लेण मैं लाग्गे सारे दोस्साँ नैं एक-एक करकै नंबरवार याद करै अर अपणे मन मैं बिठावै।

90. सरल सुभा का सांत रह्ण आला साद्धु, जो चीज जिस तरियाँ ली हो, उसे तरियाँ जी टिका कै गुरु के श्यामीं बतावै। आलोचना करै।

91. जिन छोट्टे दोसाँ की आच्छी तरियाँ आलोचना ना होई हो अर जो पूर्वकर्म (भोजन-पाणी देण तै पहलाँ देणिये के हाथ-हूथ धोण तै लाग्गे पाप) अर पश्चात्कर्म (भोजन-पाणी दिएं पाच्छै देणिये के हाथ-हूथ धोण तै लाग्गे पाप) के दोस लाग्गे हों, आलोचना करदे होये वे दोस आग्गै-पाच्छै होये हों तो उनका फेर परतिकरमण करै अर फेर कायोत्सर्ग करकै उनका ध्यान करै।

92. (साद्धु न्यूँ सोच्चै अक्) ओ हो! कितणी आच्छी बात सै अक् तीर्थंकराँ नैं साद्धुआँ की खात्तर बिना पाप की गोचरी (भोजन-पाणी लेण के तरीक्के) का उपदेस दिया सै! यो उपदेस साद्धु के उस सरीर नैं चलाया करै, जिसतै मोक्स की साधना होया करै।

93. इस तरियाँ आलोचना अर सोच-बिचार करें पाच्छै साद्धु 'नमो अरिहंताणं' पढ कै कायोत्सर्ग ध्यान करै। ध्यान करकै सिद्धाँ की प्रार्थना करै मतलब 'लोगस्स' का पाठ बोल्लै। फेर सास्तर की स्वाध्याय पूरी करकै थोड़ी देर अराम करै।

94. अराम करते होये करमाँ नैं खतम करण की बड्डी चाह्ना राक्खण आला साद्धु अपणी आतमा के भले खात्तर न्यूँ सोच्चै- कोये किरपा करणिये साद्धु मेरे पै थोड़ा भोजन-पाणी लेण का श्यान कर दें तो मैं सिमझूँ अक् उन्नैं मैं भौसागर तै पार तार दिया।

मूलः **साहवो तो चिअत्तेण, निमंतिज्ज जहक्कमं।**
जइ तत्थ केइ इच्छिज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए।।95।।

छायाः साधूंस्ततः प्रीतेन, निमन्त्रयेत् यथाक्रमम्।
यदि तत्र केचिदिच्छेयुः, तैः सार्द्धं तु भुञ्जीत।।

मूलः **अह कोइ न इच्छिज्जा, तओ भुंजिज्ज एक्कओ।**
आलोए भायणे साहू, जयं अप्परिसाडियं।।96।।

छायाः अथ कोऽपि नेच्छेत्, ततो भुञ्जीत एककः।
आलोके भाजने साधुः, यतमपरिशाट्यन्।।

मूलः **तित्तगं व कडुयं व कसायं, अंबिलं व महुरं लवणं वा।**
एअलद्धमन्नत्थ पउत्तं, महुघयं व भुंजिज्ज संजए।।97।।

छायाः तिक्तकं वा कटुकं वा कषायम्, अम्लं वा मधुरं लवणं वा।
एतल्लब्धमन्यार्थप्रयुक्तम् मधुघृतमिव भुञ्जीत संयतः।।

मूलः **अरसं विरसं वावि, सूइयं वा असूइयं।**
उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथुकुम्मासभोयणं।।98।।

छायाः अरसं विरसं वाऽपि, सूचितं वा असूचितम्।
आर्द्रं वा यदि वा शुष्कम्, मन्थुकुल्माषभोजनम्।।

मूलः **उप्पण्णं नाइहीलिज्जा, अप्पं वा बहु फासुअं।**
मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जिअं।।99।। युग्मम्

छायाः उत्पन्नं नातिहीलयेत्, अल्पं वा बहु प्रासुकम्।
मुधालब्धं मुधाजीवी, भुञ्जीत दोषवर्जितम्।।

मूलः **दुल्लहा उ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा।**
मुहादाई मुहाजीवी, दोवि गच्छंति सुग्गइं।।100।।
–त्ति बेमि।

छायाः दुर्लभस्तु मुधादायी, मुधाजीव्यपि दुर्लभः।
मुधादायी मुधाजीवी, द्वावपि गच्छतः सुगतिम्।।
–इति ब्रवीमि।

।। इय पिंडेसणाए पढमो उद्देसो समत्तो ।।

95. गुरु की अग्या ले कै साथ के साद्धुआँ तै ओ बड्डे-छोट्टे के मुताबिक प्रेम तै न्योत्ता दे। जै न्योत्ता मान कै कोये साद्धु भोजन-पाणी लेणा चाह्वै तो राज्जी हो कै उसकी गेल भोजन-पाणी ले।

96. जै कई बै बिनती करकै न्योत्ता दियें पाछै भी कोये साद्धु भोजन-पाणी लेण नैं त्यार ना हो तो साद्धु एकला ए चौड़े मूँ आले पातरे मैं यतना तै बखेरे बिना भोजन-पाणी ले।

97. संजम पालण आला साद्धु ओ ए भोजन-पाणी लेवै, जो गिरस्थी नैं अपणे खात्तर बणा राख्या हो अर जो सास्तराँ मैं बताए तरीक्के तै ए लिया होया हो। फेर ओ भोजन-पाणी तीक्खा हो, कड़ुआ हो, बकबका हो, खट्टा हो, मीट्ठा हो, खारा हो, चाहे किसा भी हो, उसे नैं घी-बूरा मान कै राज्जी हो कै खावै-पीवै।

98-99. धरम की खात्तर ए जीण आला साद्धु सास्तराँ मैं बताए तरीक्के तै मिले होये बेसुआद, बिगड़े सुआद आले, चटपटे, बिना मसाल्लाँ के, घणे तेल-मसाल्ले आले, बेर के चूरण, मूँग-उड़द के बाकले जिसे किसे भी तरियाँ के खराब भोजन-पाणी की ना तै बुराई करै अर ना उसतै घिरणा करै। थोड़ा-घणा जिसा भी मिल्या हो, कोये भी कान्नुन छाँटे बिना उसे मैं राज्जी रह्वै। मिल्ली होई किसे चीज नैं ना बिसरावै। इस तरियाँ धरम की खात्तर जीण आले साद्धु नैं जो भोजन-पाणी मिलै ओ बिना किसे सुआरथ के दिया होया अर फास्सू होणा चहिये, उसे नैं साद्धु खांदे-पींदे होये लाग्गण आले दोस टाल कै समता तै खा-पी ले।

100. इस संसार मैं बिना सुआरथ की भौअना राक्खे देण आले अर बिना सुआरथ का बिचार राक्खे लेण आले साद्धु, दोन्नूँ ए मुस्किल तै मिल्या करैं। इसलिए ये दोन्नूँ सच्चे माणस ऊँच्ची अर आच्छी गती (जून) मैं जाया करैं।

।। पिण्डैषणा नाम के पांचवें पाठ का पहला हिस्सा समाप्त ।।

अह पिंडेसणा पंचमं अज्झयणं बिइयो उद्देसो

मूलः **पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाइ संजए।**
दुगंधं वा सुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए।।1।।
छायाः प्रतिग्रहं संलिख्य, लेपमात्रया संयतः।
दुर्गन्धं वा सुगन्धं वा, सर्वं भुञ्जीत न छर्दयेत्।।

मूलः **सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो अ गोयरे।**
अयावयट्ठा भुच्चाणं, जइ तेणं न संथरे।।2।।
छायाः शय्यायां नैषेधिक्याम्, समापन्नश्च गोचरे।
अयावदर्थं भुक्त्वा, यदि तेन न संस्तरेत्।।

मूलः **तओ कारणमुप्पण्णे, भत्तपाणं गवेसए।**
विहिणा पुव्वउत्तेण, इमेणं उत्तरेण य।।3।।
छायाः ततः कारणमुत्पन्ने, भक्तपानं गवेषयेत्।
विधिना पूर्वोक्तेन, अनेन उत्तरेण च।।

मूलः **कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे।**
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे।।4।।
छायाः कालेन निष्क्रामेद् भिक्षुः, कालेन च प्रतिक्रमते।
अकालं च विवर्ज्य, काले कालं समाचरेत्।।

मूलः **अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि।**
अप्पाणं च किलामेसि, संनिवेसं च गरिहसि।।5।।
छायाः अकाले चरसि भिक्षो!, कालं न प्रतिलिखसि।
आत्मानं च क्लामयसि, संनिवेशं च गर्हसे।।

मूलः **सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारिअं।**
अलाभुत्ति न सोइज्जा, तवुत्ति अहिआसए।।6।।
छायाः सति काले चरेद्भिक्षुः, कुर्यात् पुरुषकारम्।
अलाभ इति न शोचयेत्, तप इत्यधिसहेत।।

पाँचवाँ पाठ : पिण्डैषणा : दूसरा हिस्सा

1. साद्धु जिब भोजन-पाणी खावै-पीवै तो पातरे नैं पूँझ-पूँझ कै कत्ती साफ कर ले, थोड़ा-सा लेप भी लाग्या ना रहूण दे। बदबू अर खसबू आली जिसी भी चीज हो, सारी की सारी (चुकती) खा ले, झूटठी ना छोड्डै।

2. 3. गोचरी ले कै अपणे ठिकाणे बैट्ठे होये साद्धु नैं मिल्ले होये भोजन-पाणी मैं ना सरै अर और भोजन-पाणी की जरूरत पड़ै तो पहलाँ अर आग्गै बताए होये तरीक्के तै दुबारा गोचरी लेण जावै।

4. गोचरी लेण का जिस जंगा जो टैम हो, साद्धु उसे टैम गोचरी लेण जावै अर ठीक टैम पै उलटा आ ज्या। गलत टैम नैं छोड कै ठीक टैम के हिसाब तै ए ओ सारे काम करै।

5. हे साद्धु! पहलाँ तो ठीक टैम देक्खे बिना गलत टैम पै गोचरी लेण जावै अर गोचरी ना मिल्लै तो दुखी होवै अर उस जंगा की बुराई करै (या बात ठीक कोन्या)।

6. गोचरी का टैम होयें पाछै ए साद्धु गोचरी लेण जावै अर देखभाल कै भोजन-पाणी लेवै। भोजन-पाणी ना मिल्लै तो दुक्ख ना मानै। भूख के दुक्ख नैं बरदास करदा होया न्यूँ सोचै अक् इस तरियाँ मेरी तपश्या हो गी।

मूल: **तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया।**
तं उज्जुअं न गच्छिज्जा, जयमेव परक्कमे॥7॥

छाया: तथैवोच्चावचा: प्राणिन:, भक्तार्थं समागता:।
तदृजुकं न गच्छेत्, यतमेव पराक्रमेत्॥

मूल: **गोअरग्गपविट्ठो अ, न निसीइज्ज कत्थइ।**
कहं च न पबंधिज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए॥8॥

छाया: गोचराग्रप्रविष्टश्च, न निषीदेत् कुत्रचित्।
कथां च न प्रबध्नीयात्, स्थित्वा वा संयत:॥

मूल: **अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वावि संजए।**
अवलंबिया न चिट्ठिज्जा, गोयरग्गगओ मुणी॥9॥

छाया: अर्गलां परिघं द्वारम्, कपाटं वाऽपि संयत:।
अवलम्ब्य न तिष्ठेत्, गोचराग्रगतो मुनि:॥

मूल: **समणं माहणं वावि, किविणं वा वणीमगं।**
उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए॥10॥

छाया: श्रमणं ब्राह्मणं वाऽवपि, कृपणं वा वनीपकम्।
उपसंक्रामन्तं भक्तार्थम्, पानार्थं वा संयत:॥

मूल: **तमइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोअरे।**
एगंतमक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठिज्ज संजए॥11॥ युग्मम्

छाया: तमतिक्रम्य न प्रविशेत्, न तिष्ठेत् चक्षुर्गोचरे।
एकान्तमवक्रम्य, तत्र तिष्ठेत् संयत:॥ युग्मम्

मूल: **वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा।**
अप्पत्तिअं सिया हुज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा॥12॥

छाया: वनीपकस्य वा तस्य, दायकस्योभयोर्वा।
अप्रीति: स्याद् भवेत्, लघुत्वं प्रवचनस्य वा॥

मूल: **पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए।**
उवसंकमिज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए॥13॥

छाया: प्रतिषिद्धे वा दत्ते वा, ततस्तस्मिन् निवृत्ते।
उपसंक्रामेद् भक्तार्थम्, पानार्थं वा संयम:॥

7. गोचरी लेण गये होये साद्धु नैं राह मैं खाण-पीण खात्तर कट्ठे होये होये पंछी या जिनौअर मिल ज्याँ तो ओ उनके श्यामीं ना जावै। उनतै बचदा होया यतना तै जावै।

8-9. गोचरी लेण गया होया साद्धु कहीं ना बैट्ठै, ना कहीं खड़ा हो कै धरम या ग्यान की कोये बात करै। यतना राक्खण आल़ा घराँ मैं गोचरी लेण गया होया साद्धु साँकल़, कुआड़, चौक्खट या इसे तरियाँ की ओर किसे चीज का सहारा ले कै खड़ा ना हो।

10-11. संजम राक्खणिया साद्धु गिरस्थी की चोक्खट पै अपणे बराबर तै भोजन-पाणी लेण जाते होये या पहलाँ तै पहोंचे होये किसे साद्धु, बाह्मण, मँगते या गरीब नैं लांघ कै उस घर मैं ना जावै अर उन देण-लेण आल़ाँ की आँक्खाँ के आग्गै भी खड़ा ना हो, ओ एक कानीं जा कै खड़ा रह्वै।

12-13. भोजन-पाणी वगैरा लेण आल़ाँ नैं लांघ कै जाण तै देण-लेण आल़ाँ नैं बुरा लाग्गैगा अर जिनसासन की बुराई भी होवैगी। गिरस्थी जब उनतै कुछ देण तै मना कर दे या जब वे ले कै चले जावैं तो साद्धु भोजन-पाणी लेण उस घर मैं जावै।

मूल: उप्पलं पउमं वावि, कुमुअं वा मगदंतिअं।
अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संलुंचिया दए॥14॥

छाया: उत्पलं पद्मं वाऽपि, कुमुदं वा मगदन्तिकाम्।
अन्यद्वा पुष्पसचित्तं, तच्च संलुञ्च्य दद्यात्॥

मूल: तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥15॥

छाया: तद्भवेद् भक्तपानं तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥

मूल: उप्पलं पउमं वावि, कुमुअं वा मगदंतिअं।
अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संमुद्दिया दए॥16॥

छाया: उत्पलं पद्मं वाऽपि, कुमुदं वा मगदन्तिकाम्।
अन्यद्वा पुष्पसचित्तं, तच्च संमृद्य दद्यात्॥

मूल: तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥17॥

छाया: तद्भवेद् भक्तपानं तु, संयतानामकल्पिकम्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥

मूल: उप्पलं पउमं वावि कुमुअं वा मंगदंतिअं।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च संघट्टिया दए॥18॥

छाया: उत्पलं पद्मं वाऽपि, कुमुदं वा मगदन्तिकाम्।
अन्यद्ध पुष्प सचित्तं, तच्च संघट्य दद्यात्॥

मूल: तं भवे भन्तपाणं तु संजयाए अकप्पियं।
दिंतियं पडिआइक्खे न मे कप्पइ तारिसं॥19॥

छाया: तद्भवेत् भक्तपानं तु संयतानामकल्पिकम।
ददतिं प्रत्याचक्षीत्, न मे कल्पते तादृशम्।।।

मूल: सालुअं वा विरालिअं, कुमुअं उप्पलनालिअं।
मुणालिअं सासवनालिअं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं॥20॥

छाया: शालूकं वा विरालिकाम्, कुमुदमुत्पलनालिकाम्।
मृणालिकां सर्षपनालिकाम्, इक्षुखण्डमनिर्वृतम्॥

14-15. नीले, लाल या चंदरमा जैसे सफैद कमल के, मालती के या किसे ओर सचित फूल मैं छेक-छाक करकै कोये भोजन-पाणी देण लाग्गै तो ओ साद्धु नैं कोन्या कल्पदा। इसलिए साद्धु देणिये तै कह दे अक् इसा भोजन-पाणी मनै कोन्या कल्पदा अर मैं नूहीं ले सकदा।

16-17. पहलाँ बताये होये सचित फूल्लाँ नैं मसल कै कोये भोजन-पाणी देण लाग्गै तो साद्धु ओ ना लेवै। देणिये तै कह दे अक् इसा भोजन-पाणी मनै कोन्या कल्पदा अर मैं नूहीं ले सकदा।

18-19. सचित फूल वगैरा कै हाथ ला कै (संघट्टा कर कै) कोये भोजन-पाणी देण लाग्गै तो साद्धु ओ ना लेवै अर देणिये तै कह दे अक् इसा भोजन-पाणी मनै कोन्या कल्पदा अर मैं नूहीं ले सकदा।

20-21. कमल या पलास की जड़, सफैद या नीले कमल की नाल, कमल का रेस्सा, सरसों की नाल अर गण्डेरी; ये सारी चीज सचित होया करैं इसलिए साद्धु नैं नहीं लेणी। पेड, घास या ओर किसे बनासपति के अंकुर काच्चे या सचित हों तो साद्धु वा सचित चीज ना लेवै।

मूल: **तरुणगं वा पवालं, रूक्खस्स तणगस्स वा।**
अन्नस्स वावि हरिअस्स, आमगं परिवज्जए॥21॥

छाया: तरुणकं वा प्रवालं, वृक्षस्य तृणकस्य वा।
अन्यस्य वाऽपि हरितस्य, आमकं परिवर्जयेत्॥

मूल: **तरुणिअं वा छिवाडिं, आमिअं भज्जिअं सइं।**
दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥22॥

छाया: तरुणिकां वा छिवाडिं, आमिकां भर्जितां सकृत्।
ददतीं प्रत्याचक्षीत, न मे कल्पते तादृशम्॥

मूल: **तहा कोलमणुस्सिन्नं, वेलुअं कासवनालिअं।**
तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए॥23॥

छाया: तथा कोलमनुत्स्विन्नम्, वेणुकंकाश्यपनालिकाम्।
तिलपर्पटकं निम्बम्, आमकं परिवर्जयेत्॥

मूल: **तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्तनिव्वुडं।**
तिलपिट्ठपूइपिन्नागं, आमगं परिवज्जए॥24॥

छाया: तथैव ताण्डुलं पिष्टम्, विकटं वा तप्तनिर्वृतम्।
तिलपिष्टं पूतिपिण्याकम्, आमकं परिवर्जयेत्॥

मूल: **कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगत्तिअं।**
आमं असत्थपरिणयं, मणसावि न पत्थए॥25॥

छाया: कपित्थं मातुलिंगं च, मूलकं मूलव(क)र्तिकाम्।
आममशस्त्रपरिणताम्, मनसाऽपि न प्रार्थयेत्॥

मूल: **तहेव फलमंथूणि, बीयमंथूणि जाणिया।**
विहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए॥26॥

छाया: तथैव फलमन्थून, बीजमन्थून् ज्ञात्वा।
बिभीतकं प्रियालं च, आमकं परिवर्जयेत्॥

मूल: **समुआणं चरे भिक्खू, कुलमुच्चावयं सया।**
नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए॥27॥

छाया: समुदानं चरेद्भिक्षुः, कुलमुच्चावचं सदा।
नीचं कुलमतिक्रम्य, उत्सृतं नाभिधारयेत्॥

22. देणिया आच्छी तरियाँ दाणे ना पड़ी होई मूँग, चौला या मूँगफली वगैरा की कत्ती काच्ची या एक बर भून्नी होई सचित फली देण लाग्गै तो साद्धु उसतै कह दे अक् इसा भोजन-पाणी लेणा मनै कोन्या कल्पदा।

23. इसे तरियाँ भोजन-पाणी लेण गिरस्थाँ के घर गए होए साद्धु तै जै कोए आग वगैरा तै बिना अचित होए/काच्चे बेर, करेले, कायफल, तिलपापड़ी अर नीम की निंबोली वगैरा देण लाग्गै तो वो नूहीं लेणे चहिएँ।

24. चावलाँ का आट्टा, धोअण का पाणी, मिला-जुला पाणी, तिलाँ का आट्टा, सरसम् की खल, ये सारी चीज अचित होए बिना लेणी साद्धु नैं कोन्याँ कल्पदी।

25-26. इसे तरियाँ सचित भोजन-पाणी के त्याग्गी साद्धु आग वगैरा तै बिना अचित होया/काच्चा कैथ (काँट्याँ आले पेड़ कै लाग्गे होए बेल जितणे बकबके अर खाट्टे फल), बिजोरा, पत्ताँ आली या कटी होई मूली लेण की चाहना नूहीं राखैं। इसे तरियाँ बेर जैसे फलाँ के अर जौ जैसे बीजाँ के चूरे, बहेड़ा अर चिरोंजी वगैरा भी सास्तराँ के हिसाब तै सचित हों तो साद्धु उन्नैं ना लेवैं।

27. सुद्ध भोजन-पाणी की चाहना अर खोज करणिया साद्धु ऊँच्चे अर नीच्चे घराँ मैं समता की भौअना राक्ख कै जावै पर सुआद-बेसुआद का ख्याल करकै गरीब घराँ नैं छोड कै अमीर घराँ मैं कदे भी ना जावै।

मूल: अदीणो वित्तिमेसिज्जा, न विसीइज्ज पंडिए।
अमुच्छिओ भोयणंमि, मायण्णे एसणा रए।।28।।

छाया: अदीनो वृत्तिमेषयेत्, न विषीदेत् पण्डितः।
अमूर्च्छितो भोजने, मात्राज्ञ एषणारतः।।

मूल: बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइमं साइमं।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो न वा।।29।।

छाया: बहु परगृहेऽस्ति, विविधं खाद्यं स्वाद्यम्।
न तत्र पण्डितः कुप्येत्, इच्छा दद्यात् परो न वा।।

मूल: सयणासणवत्थं वा, भत्तपाणं च संजए।
अदिंतस्स न कुप्पिज्जा, पच्चक्खेवि अ दीसओ।।30।।

छाया: शयनासनवस्त्रं वा, भक्तपानं च संयतः।
अददतः न कुप्येत्, प्रत्यक्षेऽपि च दृश्यमाने।।

मूल: इत्थिअं पुरिसं वावि, डहरं वा महल्लगं।
वंदमाणं न जाएज्जा, नो अणं फरुसं वए।।31।।

छाया: स्त्रियं पुरुषं वाऽपि डहरं (तरुणं) वा महान्तम्।
वन्दमनं न याचेत्, नचैनं परुषं वदेत्।।

मूल: जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे।
एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ।।32।।

छाया: यो न वन्दते न तस्मै कुप्येत्, वन्दितो न समुत्कर्षेत्।
एवमन्वेषमाणस्य, श्रामण्यमुनतिष्ठति।।

मूल: सिआ एगइओ लद्धुं, लोभेण विणिगूहइ।
मामेयं दाइअं संतं, दट्ठुणं सयमायए।।33।।

छाया: स्यादेककिको लब्ध्वा, लोभेन विनिगूहते।
मा ममेदं दर्शितंसत्, दृष्ट्वा स्वयमादद्यात्।।

मूल: अत्तट्ठागुरुओ लुद्धो, बहुं पावं पकुव्वइ।
दुत्तोसओ अ से होइ, निव्वाणं च न गच्छइ।।34।।

28. साच्चा ग्यानी तो ओ हे साद्धु सै जो अपणे नैं हीणा नूहीं सिमझता अर सरीर चलाण खात्तर भोजन-पाणी की खोज कर्‌या करै। जो भोजन-पाणी ना मिल्लण तै बेचैन कोन्याँ होंदा अर सुआद भोजन-पाणी मिल्लण तै सुआद मैं बौला कोन्याँ होंदा। भोजन-पाणी कितणा होणा चहिए, कितणा नूहीं, इसका उर्‌ठै ठीक-ठीक ग्यान होया करै। ओ वो हे भोजन-पाणी लिया करै, जो सास्तराँ के तरीके तै लेण लायक अर कत्ती सुद्ध हो।

29. गिरस्थी के घर मैं कई तरियाँ की सुआद चीज धरी रह्या करैं। जै गिरस्थ वे चीज साद्धु तै ना देणा चाह्वै तो साद्धु उसपै छोह ना करै बलकम् न्यूँ सोच्चै अक् यो देवै तो इसकी मरजी अर ना देवै तो इसकी मरजी। मेरा इसमैं के जोर?

30. गिरस्थी के घर मैं आँक्खाँ के श्याह्मीं दीखती होई बिछौणे, आस्सण, कपड़े-लत्ते अर नाज-पाणी जैसी कोए चीज हो, अर गिरस्थ ना देवै तो भी साद्धु उसपै माड़ा-सा भी छोह ना करै।

31. बंदना करते होए लोग्गाँ तै साद्धु कुछ भी ना माँगै। जै कोए गिरस्थ माँगी होई चीज ना देवै तो साद्धु उसतै कड़ुए बोल भी ना बोल्लै।

32-34. जो साद्धु बंदना ना करणियाँ तै नराज कोन्याँ होंदा अर राज्जा जैसे बड़े आदमियाँ के बंदना करण तै घमंड कोन्याँ करदा उसका संजम ठीक रह्या करै।

"यो भोजन-पाणी सुआद सै, गुरुजी देख लेंगे तो आप ले लेंगे, मन्नैं कोन्याँ देवैं" -इस लोभी अर नीच ख्याल तै बेसुआद भोजन-पाणी के नीच्चै जो साद्धु सुआद भोजन-पाणी छुपा लिया करै, जो आप्पापोक्खी होया करै, ओ सुआद्दू घणे पाप-करम बाँध्या करै। उसनैं कोए भी चीज खुसी कोन्याँ दिया करदी अर ओ मोक्स मैं भी नूहीं जा सकदा।

छाया : आत्मार्थगुरुको लुब्धः, बहुपापं प्रकरोति।
दुस्तोषकश्च स भवति, निर्वाणं च न गच्छति।।

मूल : सिआ एगइओ लद्धुं, विविहं पाणभोयणं।
भद्दगं भद्दगं भोच्चा, विवन्नं विरसमाहरे।।35।।

छाया : स्यादेककिको लब्ध्वा, विविधं पान भोजनम्।
भद्रकं भद्रकं भुक्तवा, विवर्णं विरसमाहरेत्।।

मूल : जाणंतु ताइमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी।
संतुटठो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ।।36।।

छाया : जानन्तु तावदिमे श्रमणा, आयतार्थी अयं मुनिः।
सन्तुष्टः सेवते प्रान्तं, रूक्षवृत्तिः सुतोष्यः।।

मूल : पूयणट्ठा जसो कामी, माणसम्माणकामए।
बहुं पसवई पावं, मायासल्लं च कुव्वइ।।37।।

छाया : पूजनार्थी यशस्कामी, मानसम्मानकामुकः।
बहु प्रसूते पापं, मायाशल्यं च करोति।।

मूल : सुरं वां मेरगं वावि, अन्नं वा मज्जगं रसं।
ससक्खं न पिबे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो।।38।।

छाया : सुरां वा मेरकं वाऽपि, अन्यं वा मद्यकं रसम्।
ससाक्षि न पिबेद् भिक्षुः, यशः संरक्षन्नात्मनः।।

मूल : पियए एगओ तेणो, न मे कोइ वियाणइ।
तस्स पस्सह दोसाइं, नियडिं च सुणेह मे।।39।।

छाया : पिबति एकक: स्तेनः, न मां कोऽपि विजानाति।
तस्य पश्यत दोषान्, निकृतिं च शृणुत मम्।।

मूल : वड्ढई सुंडिआ तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो।
अयसो अ अनिव्वाणं, सययं च असाहुआ।।40।।

छाया : वर्धते शोण्डिको तस्य, माया मृषा च भिक्षोः।
अयशश्च अनिर्वाणं, सततं च असाधुता।।

35. कोए मूरख साद्धु न्यूँ भी कर्‌या करै अक् गोचरी मैं मिल्ली होई सुआद-सुआद चीज तो एकला बैठ कै खा-पी लिया करै अर बचा होया थोथा-बेसुआद भोजन-पाणी उपासरे (स्थानक) मैं ले आया करै।

36-37. सुआद का लालची ओ साद्धु न्यूँ सोचा करै अक् 'ये उपासरे मैं रह्‌ण आले और साद्धु मनैं रूखी-सूखी चीज खा-पी कै संतोस करण आला अर जो कुछ मिल ज्या, उसे मैं राजी रह्‌ण आला मोक्स-जाणिया सिमझैंगे।' अपणी मानता अर इज्जत की झूठी चाह्‌ना राक्खण आला इसा साद्धु इस तरियाँ का छल्-कपट करकै घणे भूण्डे पाप-करम बाँध लिया करै अर अपणे हिरदे मैं माया का कांडा बोण आला बण जाया करै।

38. अपणी इंदरियाँ पै काब्बू राक्खणिया साद्धु अपणे संजम नैं बचाया करै। ओ संजम की सिकल मैं अपणी इज्जत अर अपणे नाम नैं भी बचाया करै। इसा साद्धु सराब जीसी नसे की और चीज अपणी आत्मा नैं हाजिर-नाजिर जाण कै कत्ती छोड दे।

39. जो साद्धु अपणे धरम तै मूँ मोड़ कै छुप कै एकला सराब वगैरा पीया करै अर सिमझ्या करै अक् यहाँ मनै कोए न्हीं देखदा, ओ भगवान की अग्या (धरम) की चोरी कर्‌या करै। उस छलिये की बुराइयाँ नैं तम आपै ए देखो अर ना दीक्खण आले छल्-कपट के दोस्साँ की बाबत मेरे तै सुणो!

40. सराब वगैरा पीण आले साद्धु के मन मैं लालच, छल्, कपट, झूठ, बदनामी अर तिरिस्ना जीसे दोस बढते जाया करैं। ओ लगातार साद्धु के धरम तै उलटी राही पै चालता रह्‌या करै।

मूलः **निच्चुव्विग्गो जहो तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मई।**
तारिसो मरणंतेवि न, आराहेइ संवरं।।41।।

छायाः नित्योद्विग्नो यथास्तेनः, आत्मकर्मभिर्दुर्मतिः।
तादृशो मरणान्तेऽपि, नाराधयति संवरम्।।

मूलः **आयरिए नाराहेइ, समणे आवि तारिसो।**
गिहत्था वि णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं।।42।।

छायाः आचार्यान्नाराधयति, श्रमणांश्चापि तादृशान्।
गृहस्था अप्येनं गर्हन्ते, येन जानन्ति तादृशम्।।

मूलः **एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विवज्जए।**
तारिसो मरणंतेवि, ण आराहेइ संवरं।।43।।

छायाः एवं तु अगुणप्रेक्षी, गुणानां च विवर्जकः।
तादृशः मरणान्तेऽपि नाराधयति संवरम्।।

मूलः **तवं कुव्वइ मेहावी, पणीअं वज्जए रसं।**
मज्जप्पमयाविरओ, तवस्सी अइ उक्कसो।।44।।

छायाः तपः करोति मेधावी, प्रणीतं वर्जयति रसम्।
मद्यप्रमादविरतः, तपस्वी अत्युत्कर्षः।।

मूलः **तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेगसाहुपूइअं।**
विउलं अत्थ संजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे।।45।।

छायाः तस्य पश्यत कल्याणं, अनेक-साधु-पूजितम्।
विपुलम् अर्थसंयुक्तं, कीर्तयिष्ये शृणुत मम्।।

मूलः **एवं तु स गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जए।**
तारिसो मरणंतेवि, ण आराहेइ संवरं।।46।।

छायाः एवं तु स गुणप्रेक्षी, अगुणानां च विवर्जकः।
तादृशो मरणान्तेऽपि आराधयति संवरम्।।

मूलः **आयरिए आराहेइ, समणे आवि तारिसो।**
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं।।47।।

छायाः आचार्यानाराधयति, श्रमणांश्चापि तादृशः।
गृहस्था अप्येनं पूजयन्ति, येन जानन्ति तादृशम्।।

41. इसा सराब वगैरा पीण आला बेअकला साद्धु अपणे करे होए पाप-करमाँ तै चोर की तरियाँ हमेसा बेचैन रह्या करै। ओ जिंदगी के आखरी टैम पै भी पाप-करमाँ नैं आण तै रोक न्हीं सकदा अर अपणा धरम न्हीं पाल सकदा।

42. इसे बेअकले सराब वगैरा पीण आले साद्धु पै ना तै गरुआँ अर अचार्याँ की मानता पुग्या करै अर ना ए साद्धुआँ की। इसे मूरखता तै बेचैन रह्ण आले साद्धु की तो गिरस्थी भी बुराई ए कर्या करैं। उन्नैं सब बेरा हो सै अक् ओ कीसा सै।

43. न्यूँ तराँ-तराँ के घणे ए दोस्साँ नैं छात्ती कै लाण आला अर आच्छे गुणाँ की बेकदरी करण आला साद्धु मरण के टैम पै भी संबर धरम नैं कोन्याँ पाल सकदा।

44. ग्यान्नी अर श्याणा साद्धु हमेसाँ तपश्या कर्या करै, काम-भोग पैदा करण आले खाणे-पीणे का त्याग कर्या करै अर सराब वगैरा पीण के परमाद (भूण्ड) तै भी कत्ती मूँ मोड़ कै रह्या करै। ओ कदे अपणे तप जीसे गुणाँ पै घमंड कोन्यां कर्या करदा।

45. गरु कह्वैं सैं- हे संतो! थम उस साद्धु के किल्लाण करणिये संजम नैं देखो, जिसकी और साद्धु पूजा कर्या करैं, जो मोक्स मैं जाण आला सै अर मोक्स की ए राही चाल्लण आला सै। मैं आप उसके गुणाँ नैं सराहूँगा, इसलिए थम पूरा ध्यान दे कै मेरे तै सुणो!

46. इस तरियाँ जो साद्धु आच्छे गुणाँ नैं छात्ती कै लाण आला अर भूण्ड छोड्डण आला सै, ओ जिंदगी के आखरी टैम मैं भी अपणे धरम पै भगवान की अग्या के मुताबिक चलदा रह्या करै अर पाप-करमाँ नैं आण तै रोक दिया करै।

47. धरम की राही चाल्लण के गुणाँ तै भर्या होया साद्धु अचार्याँ की अर और सारे साद्धुआँ की आच्छी तरियाँ मानता कर्या करै। इसे गुणवान साद्धु की सेवा-मानता गिरस्थ भी भगती की भौअना तै कर्या करैं। वे उसके सुद्ध संजम नैं आच्छी तरियाँ पिछाणा करैं।

मूल: **तवतेणे वयतेणे, रूवतेणे य जे नरे।**
आयारभावतेणे य, कुव्वइ देवकिव्विसं॥48॥

छाया: तपःस्तेनः वचःस्तेनः, रूपस्तेनस्तु यो नरः।
आचार-भवस्तेनश्च, करोति देवकिल्विषम्॥

मूल: **लद्धुण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिव्विसे।**
तत्थावि से न याणाइ, किं मे किच्चा इमं फलं॥49॥

छाया: लब्ध्वाऽपि देवत्वं, उपपन्नो देवकिल्विषे।
तत्राऽपि सः न जानाति, किं मे कृत्वा इदं फलम्॥

मूल: **तत्तोवि से चइत्ताणं, लब्भइ एलमूअअं।**
नरगं तिरिक्ख जोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा॥50॥

छाया: ततोऽपि सः च्युत्वा, लत्स्यते एडमूकताम्।
नरकं तिर्यग्योनिं वा, बोधिर्यत्र सुदुर्लभा॥

मूल: **एअं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं।**
अणुमायंपि मेहावी, माया मोसं विवज्जए॥51॥

छाया: एतं च दोषं दृष्ट्वा, ज्ञातपुत्रेण भाषितम्।
अणुमात्रमपि मेधावी, माया-मृषां विवर्जयेत्॥

मूल: **सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं,**
संजयाण बुद्धाण सगासे।
तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिइन्दिए,
तिव्वलज्ज गुणवं विहरिज्जासि॥52॥
–त्ति बेमि।

छाया: शिक्षित्वा भिक्षैषणाशुद्धिं,
संयतेभ्यः बुद्धेभ्यः सकाशात्।
तत्रभिक्षुः सुप्रणिहितेन्द्रियः,
तीव्रलज्जः गुणवान् विहरेत्॥
–इति ब्रवीमि।

॥ इति पिंडेसणाए पंचमज्झयणे विइयो उद्देशो समत्तो ॥

48. जो साद्धु तपश्या का, बचनाँ का, रूप का, किरिया का अर भौअना का चोर हो, ओ आगले जनम मैं घणी नीच जून के द्यौताँ मैं जाम्या करै।

49. ओ छल-कपट करणिया साद्धु घणी नीच जून के द्यौताँ मैं जनम ले कै भी न्यूँ न्हीं जाण्या करदा अक् मैं कुण से भूण्ड करण की मारी द्यौताँ की इस नीच जून मैं जाम्या सूँ।

50. द्यौता की उमर पूरी करें पाछै ओ मेमने की तरियाँ गूँग्याँ की जबान मैं बोल्लण आला माणस बण कै या नरक या तिर्यंच जून मैं जनम लिया करै, जहाँ सच्चा ग्यान सहजै-सी कोन्याँ मिल्या करदा।

51. श्याणा (संजम नैं आच्छी तरियाँ पालण आला) साद्धु ज्ञातपुत्र भगवान महावीर के बताए होए इन दोस्साँ नैं आच्छी तरियाँ पिछाण कै राई जोड भी छल-कपट ना करै अर झूठ ना बोल्लै।

52. इसी साद्धना करण आला साद्धु गुणाँ तै भरे होए, संजमी अर ग्यान्नी साद्धुआँ की सेवा-भगती करदा होया सुद्ध भोजन-पाणी लेण का ठीक-ठीक ग्यान सीक्खै! ओ एसणा समिति नैं पालै। या समिति इंदरियाँ पै काब्बू करण आली अर भूण्ड करण तै बचाण आली, इज्जत राक्खण आली होया करै। इस नैं पाल कै साद्धु संजम की राही पै खूब राजी हो कै चाल्लै।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

॥ पिण्डैषणा नाम के पांचवें पाठ का दूसरा हिस्सा समाप्त ॥

अह महायारकहा णाम छट्ठमज्झयणं

मूलः **नाण दंसण संपन्नं, संजमे य तवे रयं।**
गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं।।1।।

छायाः ज्ञानदर्शनसंपन्नं, संयमे च तपसि रतम्।
गणिनमागमसंपन्नं, उद्याने समवसृतम्।।

मूलः **रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया।**
पुच्छंति निहुअप्पाणो, कहं भे आयारगोयरो।।2।। युग्मम्

छायाः राजानो राजामात्याश्च, ब्राह्मणा अथवा क्षत्रियाः।
पृच्छन्ति निभृतात्मानः, कथं भवतामाचारगोचरः।। युग्मम्

मूलः **तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूअसुहावहो।**
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आयक्खइ वियक्खणो।।3।।

छायाः तेभ्यः स निभृतः दान्तः, सर्वभूत-सुखावहः।
शिक्षया सुसमायुक्तः, आख्याति विचक्षणः।।

मूलः **हंदि धम्मत्थकामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे।**
आयारगोयरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठिअं।।4।।

छायाः हंदि (हन्त) धर्मार्थ-कामानां, निर्ग्रन्थानांश्रृणुत मत्।
आचार-गोचरं भीमं, सकलं दुरधिष्ठितम्।।

मूलः **नन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं।**
विउलट्ठाणभाइस्स, न भूअं न भविस्सइ।।5।।

छायाः नान्यत्रेदृमुशक्तं, यल्लोके परमदुश्चरम्।
विपुलस्थानभागिनः, न भूतं न भविष्यति।।

मूलः **सखुड्डगवियत्ताणं, वाहियाणं च जे गुणा।**
अखंडफुडिया कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा।।6।।

छायाः स क्षुल्लकव्यक्तानां, व्याधितानां च ये गुणाः।
अखण्डास्फुटिताः कर्तव्याः, तान् श्रृणुत यथा तथा।।

छठा पाठ : महाचार कथा

1-2. राजा, मंतरी, बाह्मण, खतरी अर और लोगाँ नैं बाग मैं पधारे होए ग्यान-दरसन तै भरपूर, संजम अर तप की एक-एक किरिया मैं पूरी तरियाँ चोक्कस, आगम के ग्यान्नी मुनिराज तै बूझी- 'भगवन्! थारा ब्योहार किसा सै? बताण की किरपा करो!'

3. संजम मैं टिके होए, इंदरियाँ नैं जीत्तण आले, सब जीवाँ तै अभयदान का सुख देण आले, खूब पड्ढे होए परम ग्यान्नी अचार्य जी नैं जुआब मैं कह्या-

4. रै ग्यान सीक्खणियो! धरम के फल (मोक्स) की चाह्ना राक्खण आले साद्धुआँ की करड़ी अर मुस्कल तै पाली जाण आली किरिया मेरे तै पूरा ध्यान दे कै सुणो।

5. जैन सास्तराँ मैं जिस तरियाँ की मुस्कल तै पाली जाण आली साद्धु की करड़ी किरिया बताई सै, उस तरियाँ की और कहीं भी कोन्याँ बताई। मोक्स की राही चालण की इतणी ऊँच्ची किरिया ना तै पहलाँ कदे होई अर ना आगै कदे होवै।

6. बालक, बूड्ढे, बीमार अर आच्छे-बीच्छे, सारे माणसाँ नैं जिन गुणाँ की धरम-किरिया बिना दोस के लगातार पालणी जरूरी हो सै, उसनैं सच्ची-सच्ची ध्यान दे कै मेरे तै सुणो।

मूल: **दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झइ।**
तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथत्ताओ भस्सइ॥7॥

छाया: दशाष्टौ स्थानानि, यानि बालोऽपराध्यति।
तत्रान्यतरस्मिन् स्थाने, निर्ग्रन्थत्वात् भ्रश्यति॥

मूल: **वयछक्कं, कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं।**
पलियंकनिसज्जा, य, सिणाणं सोहवज्जणं॥8॥

व्रतषट्कं कायषट्कं, अकल्पो गृहिभाजनम्।
पर्यङ्क-निषद्ये च, स्नानं शोभावर्जनम्॥

मूल: **तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसिअं।**
अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो॥9॥

छाया: तत्रेदं प्रथमं स्थानं, महावीरेण देशितम्।
अहिंसा निपुणा दृष्टा, सर्वभूतेषु संयमः।

मूल: **जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा।**
ते जाणमजाणं वा, न हणे णो वि घायए॥10॥

छाया: यावन्तो लोके प्राणिनः, त्रसाः अथवा स्थावराः।
तान् जानन्नजानन् वा, न हन्यात् नापिघातयेत्॥

मूल: **सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।**
तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं॥11॥

छाया: सर्वे जीवा अपि इच्छन्ति, जीवितुं न मर्तुम्।
तस्मात् प्राणिवधं घोरं, निर्ग्रन्थाः वर्जयन्ति(णम्)॥

मूल: **अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया।**
हिंसगं न मुसं वूआ, नोवि अन्नं वयावए॥12॥

छाया: आत्मार्थं परार्थं वा, क्रोधाद्वा यदि वा भयात्।
हिंसकं न मृषा ब्रूयात्, नाप्यन्यं वादयेत्॥

मूल: **मुसावाओ उ लोगम्मि, सव्व साहूहिं गरिहिओ।**
अविस्सासो अ भूआणं, तम्हा मोसं विवज्जए॥13॥

छाया: मृषावादश्च लोके, सर्वसाधुभिर्गर्हितः।
अविश्वासश्च भूतानां, तस्मात् मृषां विवर्जयेत्॥

7. जो माणस सारे अठारा असूल्लाँ मैं तै किसे एक भी असूल की खिलाफत कर्‌या करै, ओ संजम की सब तै ऊँच्ची पदवी तै गिर जाया करै।

8. अहिंसा वगैरा छह बरतां की खिलाफत, प्रिथवीकाय वगैरा छह तरियाँ के जीव बचाण की खिलाफत, बिना कल्पदी चीज लेणा, गिरस्थी के बरतन मैं खाणा, बिछौणे पै बैठणा, गिरस्थियाँ के घराँ मैं अर उनके आसनाँ पै बैठणा, न्हाणा अर सरीर की सजावट करणा; ये सारे काम साद्धु के लिए पूरी तरियाँ छोड्डण के सैं।

9. भगवान महावीर नैं इनमैं तै पैहला दरजा अहिंसा का बताया सै। अहिंसा उन्नैं कत्ती बारीक्की तै देक्खी सै अर बताया सै अक् सारे जीवां के परति संजम राक्खणा ए अहिंसा सै।

10-11. दुनिया मैं जितणे भी त्रस (हाल्लण-चाल्लण आले) अर सथावर (जो हाल-चाल कोन्यां सकदे) जीव सैं, साद्धु जाण कै या अणजाणे मैं उनकी हिंसा ना करै अर ना किसे तै करावै।

दुनिया मैं सारे जीव जीणा चाह्वैं सैं। मरणा कोए न्हीं चाह्ता। जीवाँ के इस सुभा नैं सिमझ कै दयालु साद्धु भूण्डा दुक्ख देण आली हिंसा नैं पूरी तरियाँ त्याग दिया करै।

12. साद्धु गुस्से या डर के कारण, अपणी अर ओराँ की खात्तर, किसे तै दुक्ख देणिये अर झूठे बोल ना तै आप बोल्लै अर ना ओराँ तै बुलवावै।

13. इस दुनिया मैं सारे भले माणसाँ नैं झूठ की बुराई करी सै। झूठ बोल्लण आला कहीं भी भरोसे के लायक कोन्याँ रह्वंदा। इसलिए साद्धु नैं झूठ बोल्लण का पूरी तरियाँ त्याग कर देणा चहिए।

मूल: **चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं।**
दंतसोहणमित्तं वि, उग्गहंसि, अजाइया॥14॥

छाया: चित्तवद् अचित्तं वा अल्पं वा यदि वा बहु।
दन्तशोधनमात्रमपि, अवग्रहे अयाचित्वा॥

मूल: **तं अप्पणा न गिण्हंति, नो वि गिण्हावए परं।**
अन्नं वा गिण्हमाणं वि, नाणुजाणंति संजया॥15॥ युग्मम्

छाया: तदात्मना न गृह्णन्ति, नाऽपि ग्राहयन्ति परम्।
अन्यं वा गृह्णन्तमपि, नानुजानन्ति संयताः॥

मूल: **अबंभचरिअं घोरं, पमायं दुरहिट्ठिअं।**
नायरंति मुणी लोए, भेआयणवज्जिणो॥16।

छाया: अब्रह्मचर्यं घोरं, प्रमादं दुरधिष्ठितम्।
नाचरन्ति मुनयो लोके, भेदायतनवर्जिनः॥

मूल: **मूलमेयमहमस्स, महादोससमुस्सयं।**
तम्हा मेहुणसंसग्गं, निग्गंथा वज्जयंति णं॥17॥

छाया: मूलमेतद् अधर्मस्य, महादोष समुच्छ्रयम्।
तस्मात् मैथुन संसर्गं, निर्ग्रन्था वर्जयन्ति (णम्)॥

मूल: **बिडमुब्भेइमं लोणं, तिल्लं सप्पिं च फाणिअं।**
न ते संनिहिमिच्छंति, नायपुत्तवओरया॥18॥

छाया: बिडमुद्भेद्यं लवणं, तैलं सर्प्पिश्च फाणितम्।
न ते संनिधिमिच्छन्ति, ज्ञातपुत्रवचोरताः॥

मूल: **लोहस्सेसअणुफासे, मन्ने अन्नयरामवि।**
जे सिया सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से॥19॥

छाया: लोभस्यैषोऽनुस्पर्शः, मन्यन्ते अन्यतरामपि।
यः स्यात् संनिधिं कामयते, गृही प्रव्रजितो न सः॥

मूल: **जंपि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछणं।**
तंपि संजमलज्जट्ठा, धारंति परिहरंति अ॥20॥

छाया: यदपि वस्त्रं वा पात्रं वा, कम्बलं पादप्रोंच्छनम्।
तदपि संयमलज्जार्थं, धारयन्ति परिहरन्ति च॥

14-15. महाबरती साद्धु सचित या अचित, थोड़ी या घणी चीज, ओर तो के दाँत करेलण का तिणका भी उसके मालिक या गिरस्थी की अग्या लिए बिना ना तो आप लिया करैं, ना किसे ओर पै लिवाया करैं अर ना ए किसे लेंदे होए नैं ठीक बताया करदा।

16-17. संजम नैं खतम करण आली चीजाँ का त्याग करणिये साद्धु संसार मैं रहते होए भी उन काम-भोग्गाँ के चक्कर मैं कदे नहीं फँस्या करदे, जो परमाद की जड़-मूल होया करैं अर बोद्दे माणस जिनके चक्कर मैं फँस्या करैं।

ये काम-भोग सारे पापाँ की जड़ सैं अर बड्डे-बड्डे दोस जाम्मण आले सैं। इसलिए अजाद रहण आले साद्धु इस काम-भोग के लवै लागण का अपणी सारी भौअना तै त्याग कर दिया करैं।

18. ग्यातपुत्तर भगवान महाबीर के बचनाँ पै पक्का भरोसा राक्खण आले साद्धु समंदर के अर ओर किसे भी तरियाँ के नूण, तेल, घी अर पतले गुड़ जीसी चीज कट्ठी करण की चाहना कोन्यां कर्या करदे।

19. यो लोभ का ए असर सै अक् साद्धु की पदवी ले कै भी गिरस्थी की तरियाँ चीज कट्ठी करण का दोस लाग्या करै। जो साद्धु राई जोड भी चीज कट्ठी करण की चाहना राक्ख्या करै ओ गिरस्थी ए होया करै, साद्धु कोन्याँ होया करदा।

20. मोक्स कान्नीं चाल्लण आला साद्धु कपड़े-लत्ते, पातरे, ओघे बरगी जरूरी अर कलपदी होई चीज संजम अर सरम बचाण की खात्तर ए राक्ख्या अर बरत्या करै।

मूल: **न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा।**
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इअ वुत्तं महेसिणा॥21॥

छाया: नासौ परिग्रह उक्त:, ज्ञातपुत्रेण त्रायिना (त्रात्रा)।
मूर्च्छा परिग्रह उक्त: इत्युक्तं महर्षिणा॥

मूल: **सव्वत्थु वहिणा बुद्धा, संरक्खण परिग्गहे।**
अवि अप्पणोवि देहंमि, नायरंति ममाइयं॥22॥

छाया: सर्वत्रोपधिना बुद्धा:, संरक्षण परिग्रहे।
अप्यात्मनोऽपि देहे, नाचरन्ति ममत्वम्॥

मूल: **अहो निच्चं तवोकम्मं, सव्वबुद्धेहिं बन्निअं।**
जाय लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोअणं॥23॥

छाया: अहो नित्यं तप:कर्म, सर्वबुद्धै वर्णितम्।
या च लज्जासमा वृत्ति:, एकभक्तं च भोजनम्॥

मूल: **संति मे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा।**
जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणियं चरे॥24॥

छाया: सन्ति इमे सूक्ष्मा: प्राणिन:, त्रसा: अथवा स्थावरा:।
यान् रात्रावपश्यन्, कथमेषणीयं चरेत्॥

मूल: **उदउल्लं बीअसंसत्तं, पाणा निवडिया महिं।**
दिआ ताइं विवज्जिज्जा, राओ तत्थ कहं चरे॥25॥

छाया: उदकार्द्रं बीजसंसक्तं, प्राणिन: निपतिता महीम्।
दिवा तान् विवर्जयेत्, रात्रौ तत्र कथं चरेत्॥

मूल: **एअं च दोसं दटठूणं, नायपुत्तेण भासिअं।**
सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइ भोअणं॥26॥

छाया: एतं च दोषं दृष्ट्वा, ज्ञातपुत्रेण भाषितम्।
सर्वाहारं न भुञ्जते, निर्ग्रन्था रात्रिभोजनम्॥

मूल: **पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।**
तिविहेणं करणजोएण, संजया सुसमाहिआ॥27॥

छाया: पृथिवीकायं न हिंसन्ति, मनसा वचसा कायेन।
त्रिविधेन करण योगेन, संयता: सुसमाहिता:॥

21. सारे जीव बचाण आले ग्यातपुत्तर भगवान महाबीर नैं कपड़े-लत्ते बरगी काम आण आली चीजाँ मैं परिग्रह (चीज कट्ठी करण का पाप) कोन्याँ बताया। उन्की अग्या के हिसाब तै चाल्लण आले गणधर जीसे साद्धुआँ नैं मूर्च्छा (चीजाँ के लालच) की भौअना मैं परिग्रह मान्या सै।

22. सच्चाई के जानणिये साद्धु छह तरियाँ के सरीर आले जीवाँ नैं बचाण खात्तर लिए होए समान मैं तो के, अपणे सरीर मैं भी किसे तरियाँ की ममता की भौअना कोन्याँ राक्ख्या करदे।

23. ओ हो! सब किम् जानणिये तीर्थंकर भगवान्नाँ नैं साद्धुआँ तै संजम के लिए सरीर बचाण अर चलाण आली आदत के मुताबिक दिन-दिन मैं बस एक बै ए भोजन करण की नितनेम आली तपश्या बताई सै।

24. संसार मैं जितणे त्रस (हाल्लण-चाल्लण आले) अर स्थावर (ना हाल्लण आले) जीव सैं, उनमैं घनखरे कत्ती ए बरीक सैं। साद्धु जिब रात नैं इन्नैं देख ऐ कोन्याँ सकदा तो इन्नैं बचांदा होया सुद्ध भोजन-पाणी किस तरियाँ ले सकैगा?

25. पाप तै बच्चण आला साद्धु दिन मैं तो सचित पाणी मैं भीजे होए अर बीज-बाज मिले होए भोजन-पाणी नैं छोड सकै सै अर धरती पै जो कई तरियाँ के बरीक जीव चालदे-फिरदे रह्या करैं, उन्नैं बचा सकै सै पर रात मैं या बात क्यूक्कर हो! हो ए ना सकदी।

26. ग्यातपुत्तर भगवान महाबीर नैं रात्री-भोजन के दोस साच्ची अर आच्छी तरियाँ देख-भाल कै कही- अपणी अर ओराँ की भलाई चाह्ण आले साद्धु रात नैं कदे भी किसे भी तरियाँ का भोजन कोन्याँ कर्या करदे।

27. समाद्धी मैं टिके होए साद्धु मन, वचन, काया के तीन योगाँ तै अर करणे, कराणे, करते होए नैं ठीक बताणे के तीन करणाँ तै कदे भी प्रिथवीकाय के जीवाँ की हिंसा न्हीं कर्या करदे।

मूल: पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे॥28॥

छाया: पृथिवीकायं विहिंसन्, हिनस्ति तु तदाश्रितान्।
त्रसांश्च विविधान् प्राणिनः, चाक्षुषांश्चाचाक्षुषान्॥

मूल: तम्हा एअं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
पुढविकायसमारंभं, जावजीवाइं वज्जए॥29॥

छाया: तस्मादेतं विज्ञाय, दोषं दुर्गतिवर्द्धनम्।
पृथ्वीकायसमारम्भं, यावज्जीवं विवर्जयेत्॥

मूल: आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया॥30॥

छाया: अप्कायं न हिंसन्ति, मनसा वचसा कायेन।
त्रिविधेन करणयोगेन, संयताः सुसमाहिताः॥

मूल: आउकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए।
तसे अ विविहेपाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे॥31॥

छाया: अप्कायं विहिंसन्, हिनस्ति तु तदाश्रितान्।
त्रसांश्च विविधान् प्राणिनः, चाक्षुषांश्चाचाक्षुषान्॥

मूल: तम्हा एअं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
आउकायसमारंभं, जावजीवाइं वज्जए॥32॥

छाया: तस्माद् एतं विज्ञाय, दोषं दुर्गतिवर्द्धनम्।
अप्कायसमारम्भं, यावज्जीवं वर्जयेत्॥

मूल: जायतेअं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए।
तिक्खमन्नपरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासयं॥33॥

छाया: जाततेजसं क्षेच्छन्ति, पापकं ज्वालयितुम्।
तीक्ष्णमन्यतरं शस्त्रं, सर्वतोऽपि दुराश्रयम्॥

मूल: पाईणं पडिणं वावि, उड्ढं अणुदिसामवि।
अहे दाहिणओ वावि, दहे उत्तरओ वि अ॥34॥

छाया: प्राच्यां प्रतीच्यां वाऽपि ऊर्ध्वमनुदिक्ष्वपि।
अधो दक्षिणतो वापि, दहति उत्तरतोऽपि च॥

28. प्रिथवीकाय की हिंसा करणिया खाली प्रिथवीकाय की ए हिंसा नूहीं करदा बलकम् उसके आसरे रहूण आले तरा-तरा के तूरस अर स्थावर, दीक्खण आले अर ना दीक्खण आले सारे जीवाँ की हिंसा करूया करै।

29. हिंसा बुरी गती मैं ले जाण आला कसूत्ता दोस सै, या बात आच्छी तरियाँ सिमझ कै साद्धु सारी जिंदगी ताईं प्रिथवीकाय की हिंसा करणिये काम्माँ नैं कत्ती छोड दे।

30. समाद्धी मैं टिके होए साद्धु पाणी के जीवाँ की भी तीन करण अर तीन योग तै कदे हिंसा नूहीं करूया करदे।

31. पाणी के जीवाँ की हिंसा करणिया माणस पाणी के आसरे रहूण आले तरा-तरा के तूरस अर स्थावर, दीक्खण आले अर ना दीक्खण आले ओर जीवाँ की भी हिंसा करूया करै।

32. इसलिए इसनैं बुरी गती बढाण आला दोस सिमझ कै साद्धु सारी जिंदगी ताईं अपकाय की हिंसा करणिये काम नैं कत्ती छोड दे।

33. आग तै जनमजात गरम अर फूँक्कण आली होया करै। अपणे भीत्तर दया राक्खणिये साद्धु इसी घणी तीक्खी, चारूँ ओड़ तै तेज हथियार जीसी, सब तरियाँ तै हांग्यां काब्बू आण आली आग जलाण की कदे भी चाहना कोन्याँ करूया करदे।

34. बाली होई आग पूरब अर पच्छिम, उत्तर अर दक्खण, ऊप्पर अर नीच्चै, सारी दिसाँ मैं अर ईसान जीसे सारे कूणाँ मैं रहिणये जीवाँ नैं छूंदी होई कत्ती भसम कर दिया करै।

मूल: भूआण मे समाघाओ, हव्ववाहो न संसओ।
तं पईवपयावट्ठा, संजया किंचि नारभे॥35॥

छाया: भूतानामेष आघात:, हव्यवाह: न संशय:।
तं प्रदीपप्रतापार्थं, संयता: किञ्चित् नारभन्ते॥

मूल: तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
तेउकायसमारंभं, जावजीवाइं वज्जए॥36॥

छाया: तस्मादेतं विज्ञाय, दोषं दुर्गतिवर्द्धनम्।
तेज:कायसमारम्भं, यावज्जीवं वर्जयेत्॥

मूल: अणिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जबहुलं चेअं, नेअं ताइहिं सेविअं॥37॥

छाया: अनिलस्य समारम्भं, बुद्धा मन्यन्ते तादृशम्।
सावद्यबहुलं चैवं (तं), नैनं त्रायिभि: सेवितम्॥

मूल: तालिअंटेण पत्तेण, साहा विहुअणेण वा।
न ते वीइउमिच्छंति, वीआवेउण वा परं॥38॥

छाया: तालवृन्तेन पत्रेण, शाखा-विधूननेन वा।
न ते वीजितुमिच्छन्ति, वीजयितुं वा परम्॥

मूल: जंपि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछणं।
न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति अ॥39॥

छाया: यदपि वस्त्रं वा पात्रं वा, कम्बलं पादप्रोंच्छनम्।
न ते वातमुदीरयन्ति, यतं परिहरन्ति च॥

मूल: तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वाउकायसमारंभं, जावजीवाइं वज्जए॥40॥

छाया: तस्मादेतं विज्ञाय, दोषं दुर्गति-वर्द्धनम्।
वायुकायसमारम्भं, यावज्जीवं वर्जयेत्॥

मूल: वणस्सइं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ॥41॥

छाया: वनस्पतिं न हिंसन्ति, मनसा वचसा कायेन।
त्रिविधेन करणयोगेन, संयता: सुसमाहिता:॥

35. आग जान आले अर बेजान, सार्‌याँ का नास कर्‌या करै। सारे जीवाँ का नुकसान कर्‌या करै। इसलिए संजम पालण आले साद्‌धु नैं रोसनी अर ताप लेण के कारण या किसे ओर कारण तै कदे माड़ी-ही भी अग्नीकाय की हिंसा नूहीं करणी चहिए।

36. इसलिए इस्‌नैं बुरी गती बढाण आला दोस सिमझ कै जीवाँ नैं बचाणिया संजमी साद्‌धु सारी जिंदगी ताईं अग्नीकाय की हिंसा करणिये काम नैं कत्ती छोड दे।

37. तीरथंकर भगवान्नाँ नैं अग्नीकाय की हिंसा जीसी ए वायुकाय की हिंसा भी मान्नी सै। इसलिए सारे जीव बचाण आले साद्‌धु नैं वायुकाय की हिंसा कदे भी नूहीं करणी चहिए।

38. दयाल्लु साद्‌धु ताड़ के पंखे तै, पत्ते तै, पेड़ की टैह्णी तै या किसे ओर चीज तै ना आप हवा करणा चाह्‌ते, ना किसे ओर तै कराणा चाह्‌ते अर ना ए किसे हवा करण आले नैं ठीक बताया करदे।

39. संजमी अपणी कपड़े-लत्ते, पात्तरे, काम्बल अर ओघे जीसी चीज तै भी यतना छोड कै कदे वायुकाय की हिंसा कोन्याँ कर्‌या करदे।

40. वायुकाय की हिंसा पाप सै। इस्‌नैं बुरी गती बढाण आला दोस सिमझ कै साद्‌धु सारी जिंदगी ताईं वायुकाय की हिंसा करणिये काम नैं कत्ती छोड दे।

41. संजम अर समाधी मैं रमे होए साद्‌धु तीन करण अर तीन योग तै कदे भी बनासपतिकाय की हिंसा कोन्यां कर्‌या करदे।

मूल: वणस्सइं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे॥42॥

छाया: वनस्पतिं विहिंसन्, हिनस्ति तु तदाश्रितान्।
त्रसांश्च विविधान् प्राणिनः, चाक्षुषांश्चाचाक्षुषान्॥

मूल: तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्ढणं।
वणस्सइसमारंभं, जावजीवाइं वज्जए॥43॥

छाया: तस्मादेतं विज्ञाय, दोषं दुर्गति-वर्द्धनम्।
वनस्पतिसमारम्भं, यावज्जीवं वर्जयेत्॥

मूल: तसकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया॥44॥

छाया: त्रसकायं न हिंसन्ति, मनसा वचसा कायेन।
त्रिविधेन करणयोगेन, संयताः सुसमाहिताः॥

मूल: तसकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे॥45॥

छाया: त्रसकायं विहिंसन्, हिनस्ति तु तदाश्रितान्।
त्रसांश्च विविधान् प्राणिनः, चाक्षुषांश्चाचाक्षुषान्॥

मूल: तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
तसकायसमारंभं, जावजीवाइं वज्जए॥46॥

छाया: तस्मादेतं विज्ञाय, दोषं दुर्गतिवर्द्धनम्।
त्रसकाय समारम्भं, यावज्जीवं वर्जयेत्॥

मूल: जाइं चत्तारि भुज्जाइं, इसिणा हारमाइणि।
ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अणुपालए॥47॥

छाया: यानि चत्वारि अभोज्यानि, ऋषीणामाहारादीनि।
तानि तु विवर्जयन्, संयममनुपालयेत्॥

मूल: पिंडं सिज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य।
अकप्पिअं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं॥48॥

छाया: पिण्डं शय्यां च वस्त्रं च, चतुर्थं पात्रमेव च।
अकल्पिकं नेच्छेत्, प्रतिगृह्णीयात् कल्पिकम्॥

42. बनासपति की हिंसा के साथ-साथ बनासपतिकाय के आसरे जो तूरस-स्थावर अर छोटे-बड्डे जीव रह्या करैं, उनकी भी हिंसा होया करै।

43. इसलिए बनासपतिकाय की हिंसा नैं बुरी गती बढाण आला दोस सिमझ कै साद्धु सारी जिंदगी ताईं बनासपतिकाय की हिंसा करणिये काम नैं कत्ती छोड दे।

44. गुस्सा, घमंड, छल-कपट अर लोभ, ये कसाय जिनके ठंडे हो लीये, जो संजम मैं रमे रह्या करैं, वे साद्धु मन-वचन-काया के तीन योग अर करणे, कराणे, करदे होए नैं ठीक बताणे की तीन करण तै किसे भी तूरसकाय की हिंसा कदे भी कोन्याँ करदे।

45. तूरसकाय की हिंसा के साथ-साथ उसके आसरे जो तूरस-स्थावर अर छोटे-बड्डे जीव रह्या करैं, उनकी भी हिंसा होया करै।

46. इसलिए तूरसकाय की हिंसा नैं बुरी गती बढाण आला दोस सिमझ कै साद्धु सारी जिंदगी ताईं बनासपतिकाय की हिंसा करणिये काम नैं कत्ती छोड दे।

47. साद्धु नैं जो चार तरियाँ का भोजन-पाणी कल्पदा कोन्याँ, उन चारुआँ नैं छोडदा होया साद्धु सुद्ध संजम पालै।

48. भोजन-पाणी, बिछौणा, कपड़े अर पात्तरे; ये चारूँ चीज दोस आली हों तो साद्धु नैं कल्पदी कोन्याँ, इन्नैं संजमी साद्धु ना लेवै अर जै ये बिना दोस की हों तो ले लेवै।

मूल: जे नियागं ममायंति, कीअमुद्देसिआहडं।
वहं ते समणुजाणंति, इअ उत्तं महेसिणा॥49॥

छाया: ये नियागं ममायन्ति, क्रीतमौद्देशिकमाहृतम्।
वधं ते समनुजानन्ति, इत्युक्तं महर्षिणा॥

मूल: तम्हा असणपाणाइं, कीअमुद्देसिआहडं।
वज्जयंति ठिअप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो॥50॥

छाया: तस्मादशनपानादि, क्रीतमौद्देशिकमाहृतम्।
वर्जयन्ति स्थितात्मानो, निर्ग्रन्था: धर्मजीविन:॥

मूल: कंसेसु कंसपाएसु, कुंडमोएसु वा पुणो।
भुंजंतो असणपाणाइं, आयारा परिभस्सइ॥51॥

छाया: कंसेषु कंसपात्रेषु, कुण्डमोदेषु वा पुन:।
भुञ्जानोऽशनपानादि, आचारात् परिभ्रश्यति॥

मूल: सीओदगसमारंभे, मत्तधोअणछड्डणे।
जाइं छंनंति भूआइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो॥52॥

छाया: शीतोदकसमारम्भे, मात्रकधावनोज्झने।
यानि छिद्यन्ते भूतानि, दृष्ट: तत्र असंयम:॥

मूल: पच्छा कम्मं पुरेकम्मं, सिआ तत्थ न कप्पइ।
एअमट्ठं न भुंजंति, निग्गंथा गिहिभायणे॥53॥

छाया: पश्चात्कर्म पुर: कर्म, स्यात् तत्र न कल्पते।
एतदर्थं न भुञ्जते, निर्ग्रन्था गृहिभाजने॥

मूल: आसंदी-पलिअंकेसु, मंचमासालएसु वा।
अणायरिअमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा॥54॥

छाया: आसंदी-पर्यंकेषु, मंचाशालकेषु वा।
अनाचरितमार्याणां, आसितुं शयितुं वा॥

मूल: नासंदीपलिअंकेषु, न निसिज्जा न पीढए।
निग्गंथा पडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा॥55॥

छाया: नासंदीपर्यंकयो:, न निषद्यायां न पीठके।
निर्ग्रन्था: अप्रतिलेख्य, बुद्धोक्तमधिष्ठातार:॥

49. भगवान महाबीर नैं फरमाया सै अक् जो साद्धु न्योत्ता दे कै दिया होया, मोल लिया होया, साद्धु की खात्तर बणाया होया अर साद्धु की खात्तर ल्याया होया भोजन-पाणी ले लिया करैं, वे छह तरियाँ की जीव हिंसा नैं ठीक बताण का पाप कर्या करैं।

50. इसलिए जिनकी आतमा संजम मैं टिकी होई सै अर जो धरम के हिसाब तै जिंदगी बिताया करैं, वे परिग्रह का त्याग करणिये साद्धु न्योत्ता दे कै दिया होया, मोल लिया होया, साद्धु की खात्तर बणाया होया अर साद्धु की खात्तर ल्याया होया भोजन-पाणी कदे भी कोन्याँ लिया करदे।

51. जो साद्धु गिरस्थी की काँसे की कटोरी, थाली या कुंडी मैं भोजन-पाणी खाया-पीया करै, ओ अपणे साद्धु-धरम की किरिया तै गिर ज्याया करै।

52. केवल ग्यान्नी तीर्थंकर भगवान्नाँ नैं फरमाया सै अक् गिरस्थी के बरतनाँ मैं खाण-पीण तै जीव-हिंसा का पाप कत्ती संदक दीख्या करै। जैसे उन्नैं माँजण-धोण की खात्तर काच्चे पाणी का पाप होया करै अर ओ पाणी इधर-उधर गिरण तै भी हिंसा होया करै।

53. गिरस्थी के बरतन मैं खाण-पीण तै साद्धु कै भोजन-पाणी लेण तै पहलाँ के अर बाद के दोस लाग सकैं सैं। इसलिए यो साद्धु नैं कोन्याँ कल्पदा। किसे भी हालत मैं साद्धु गिरस्थी के बरतनाँ मैं भोजन-पाणी कोन्याँ लिया करदे।

54. साद्धु बिना दोस का संजम पाल्या करैं। गिरस्थी के बैट्ठण-सोण के पलंग, खाट अर कुरसी जैसे आसनाँ पै बैट्ठण-सोण तै उनकै ना करण के काम करण का दोस लाग्या करै।

55. तीर्थंकर भगवान्नाँ की अग्या पै पूरी तरियाँ चाल्लण आले साद्धु कोये खास कारण हो ज्या तो आसन, पलंग, गद्दी अर पीठ जैसे आसनाँ नैं आच्छी तरियाँ झाड़े-पूँझे बिना उनपै कदे भी बैठ्या-सोया न्हीं करदे।

मूल: **गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा।**
आसंदी पलिअंको य, एअमट्ठं विवज्जिआ॥56॥

छाया: गम्भीरविजया एते, प्राणिनो दुष्प्रतिलेख्याः।
आसंदी पर्यङ्कश्च, एतदर्थं विवर्जिताः॥

मूल: **गोअरग्गपविट्ठस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ।**
इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहिअं॥57॥

छाया: गोचराग्रप्रविष्टस्य, निषद्या यस्य कल्पते।
ईदृशमनाचारं, आपद्यते अबोधिकम्॥

मूल: **विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो।**
वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं॥58॥

छाया: विपत्तिर्ब्रह्मचर्यस्य, प्राणानां च वधे वधः।
वनीपकप्रतिघातः, प्रतिक्रोधः अगारिणाम्॥

मूल: **अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थिओ वावि संकणं।**
कुसीलवड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए॥59॥

छाया: अगुप्तिर्ब्रह्मचर्यस्य, स्त्रीतोवापि शङ्कनम्।
कुशीलवर्धनं स्थानं, दूरतः परिवर्जयेत्॥

मूल: **तिन्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ।**
जराए अभिभूअस्स, वाहिअस्स तवस्सिणो॥60॥

छाया: त्रयाणामन्यतरस्य, निषद्या यस्य कल्पते।
जरयाऽभिभूतस्य, व्याधितस्य तपस्विनः॥

मूल: **वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए।**
वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो॥61॥

छाया: व्याधितो वा अरोगी वा, स्नानं यस्तु प्रार्थयते।
व्युत्क्रान्तो भवति आचारः, (त्यक्तो) भवति संयमः॥

मूल: **संति मे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु अ।**
जे अ भिक्खू सिणायंतो, वियडेणुप्पिलावए॥62॥

छाया: सन्ति इमे सूक्ष्माः प्राणिनः, घसासु भिलुकासु च।
यांश्च भिक्षुःस्नान् (स्नानंकुर्वन्) विकृतेनोत्प्लावयति॥

मूल: **तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा।**
जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाणमहिट्ठगा॥63॥

56. ये पलंग जैसे आसन गहरे छेक अर अँधेरे तै भरे होया करैं। इसलिए इनकी झाड़-पूँझ आच्छी तरियाँ होणी मुसकिल हो जाया करै। साद्धुआँ नैं ये आसन किसे भी तरियाँ बरतण की मनाही सै।

57. गोचरी लेण गया होया साद्धु गिरस्थियाँ के घराँ मैं जा कै बैट्ठै तो उसनैं किरिया के दोस लाग्गण का अर ग्यान ना मिल्लण का बुरा फल मिल्या करै।

58. गिरस्थियाँ के घराँ मैं बैट्ठण तै बर्हमचर्यै का नास, जीवाँ की हिंसा, संजम का नुकस्यान, गोचरी लेण आलाँ के काम मैं रुकावट अर घर के लोग्गाँ कै गुस्सा; ये सारे काम होया करैं।

59. गिरस्थियाँ के घराँ मैं बैट्ठण तै बर्हमचर्यै मैं ढील आण का डर रह्या करै अर लुगाइयाँ नैं देक्खण तै और लोगाँ के मन मैं बर्हमचर्यै के लिए सक-सुबा पैदा होया करै। इसलिए काम-वासना बढाण आले इस नीच काम नैं बर्हमचर्यै बरतधारी साद्धु दूर तै हे छोड दे।

60. बूड्ढा, बीमार अर तपस्सी; इन तीनुआँ मैं तै कोये खास कारण हो ज्या तै गिरस्थी के घराँ माड़ी वार बैट्ठ सकै सै। इन तीनुआँ कै पहलाँ बताए होए दोस लाग्गण की गुँजास कोन्याँ होंदी।

61. साद्धु चाहे आच्छा-बीच्छा हो या बेमार, जै न्हाण की चाह्ना करै तो ओ अपणे भीत्तर अर बाह्र के संजम तै कत्ती गिर ज्याया करै।

62. पोली अर तरेड़ाँ आली जमीन मैं कई तरियाँ के बरीक जीव रह्या करैं। अचित पाणी तै भी कोये नहावै तो भी डूब्बण तै उन जीवाँ की हिंसा होया ए करै।

63. इसलिए साद्धु ठंडे या गरम पाणी तै कदे भी नहाया कोन्याँ करदे। वे सारी जिंदगी इस ना नहाण के करड़े बरत नैं पूरी तरियाँ पाल्या करैं।

छाया : तस्मात् ते न स्नान्ति, शीतेन उष्णेन वा।
यावज्जीवं व्रतं घोरं, अस्नानमधिष्ठातारः।।

मूल : सिणाणं अदुवा कक्कं, लोद्धं पउमगाणि अ।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए, नायरंति कया इवि।।64।।

छाया : स्नानमथवा कल्कं, लोध्रं पद्मकानि च।
गात्रस्योद्वर्तनार्थं, नाचरन्ति कदाचिदपि।।

मूल : नगिणस्स वावि मुंडस्स, दीहरोमनहंसिणो।
मेहुणाओ उवसंतस्स, किं विभूसाइं कारिअं।।65।।

छाया : नग्नस्य वाऽपि मुण्डस्य, दीर्घरोमनखवतः।
मैथुनादुपशान्तस्य, किं विभूषया कार्यम्।।

मूल : विभूसावत्तिअं भिक्खू, कम्मं वंधइ चिक्कणं।
संसारसायरे घोरे, जेण पडइ दुरुत्तरे।।66।।

छाया : विभूषाप्रत्ययं भिक्षुः, कर्म बध्नाति चिक्कणम्।
संसारसागरे घोरे, येन पतति दुरुत्तरे।।

मूल : विभूसा वत्तिअं चेअं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जबहुलं चेअं, नेयं ताईहिं सेविअं।।67।।

छाया : वभूषाप्रत्ययं चेतः, बुद्धाः मन्यन्ते तादृशम्।
सावद्यबहुलं चैतद्, नैतत् त्रायिभिः सेवितम्।।

मूल : खवंति अप्पाणममोहदंसिणो, तवेरया संजम अज्जवगुणे।
धुणंति पावाइं पुरे कडाइं, नवाइं पावाइं न ते करंति।।68।।

छाया : क्षिपयन्त्यात्मानममोहदर्शिनः, तपसिरताः संयमार्ज्जवगुणे।
धुन्वन्ति पापानि पुराकृतानि, नवानि पापानि न ते कुर्वन्ति।।

मूल : सओवसंता अममा अकिंचणा,
सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो।
उउप्पसन्ने विमलेव चंदिमा,
सिद्धिं विमाणाइं उवंति ताइणो।।69।।
त्ति बेमि।

छाया : सदोपशांताः अममा अकिञ्चना, स्वविद्यविद्यानुगताः यशस्विनः।
ऋतु प्रसन्ने चन्द्रमा इव विमलाः, सिद्धिं विमानानि उपयान्ति त्रायिनः।।
—इति ब्रवीमि।

।। इअ महायारकहा णाम छट्ठमज्झयणं सम्मत्तं ।।

64. सुद्ध संजम पालण की चाह्ना राक्खणिए साद्धु नैं ना नहाण की तरियाँ अपणे सरीर पै चंदन, लेप, कुमकुम, केस्सर अर और महकदार चीजाँ का बटणा भी कदे नूहीं मसलणा चहिए।

65. जो साद्धु मैले अर थोड़े कपड़े पहरण के कारण (सुथरे कपड़ाँ के लिहाज तै) नंगा सै, मन (के कसायाँ) तै अर सरीर (के बालाँ) तै मुंड्या होया सै, लाम्बे नखूनाँ अर रोयाँ आला सै, काम-वासना के बिगाड़ तै कत्ती (दूर) सांत सै, उसनैं सरीर की सजावट तै के मतलब?

66. सरीर की सुंदरता के ख्याल मैं लाग्या रह्ण आला साद्धु इसे चीकणे करम बाँध लिया करै अक् उनके फल भोगदा होया मुस्किल तै पार होणिये गह्रे संसार के सागर मैं जा पड्या करै।

67. तीर्थंकर भगवान नैं सरीर की सजावट मैं लाग्गे होये मन को करम बांधण का कारण बताया सै। इसलिए सरीर की सजावट पाप तै भरी होया करै। छहकाय नैं बचाण आले साद्धु इसनैं नूहीं कर्या करदे।

68. जो साद्धु मोह-ममता तै दूर सच्चाई के जाणन आले, सुद्ध तपश्या मैं लाग्गे रह्ण आले, संजम अर सरलता के गुणाँ तै भरे होए होया करैं वे पहलाँ बाँधे होए करमाँ नैं खतम कर्या करैं अर नये करम कोन्याँ बाँध्या करदे।

69. हमेस्साँ सान्ती राक्खण आले, ममता तै दूर रह्ण आले, परिग्रह तै अजाद, आतमा के ग्यान तै भरे होए अर सरदी के चाँद की तरियाँ साफ-सुथरे जो साद्धु सैं, वे सारे जीवाँ नैं बचाण आले संजमी होया करैं अर मोक्स मैं जाया करैं। मोक्स मैं ना भी जावैं तो वैमानिक द्योत्याँ मैं तो जरूर जनम लिया करैं।

—न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

।। महाचार कथा नाम का छट्ठा पाठ समाप्त ।।

अह सुवक्क सुद्धी णाम सत्तमं अज्झयणं

मूल: **चउन्हं खलु भासाणं, परिसंक्खाय पन्नवं।**
दुन्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासिज्ज सव्वसो॥1॥

छाया: चतसृणां खलु भाषाणां, परिसंख्याय प्रज्ञावान्।
द्वाभ्यां तु विनयं शिक्षेत, द्वे न भाषेत सर्वशः॥

मूल: **जा य सच अवत्तव्वा, सच्चामोसा अ जा मुसा।**
जा य बुद्धेहिं नाइन्ना, न तं भासिज्ज पन्नवं॥2॥

छाया: या च सत्या अवक्तव्या, सत्यामृषा च या मृषा।
या च बुद्धैरनाचीर्णा, न तां भाषेत प्रज्ञावान्।

मूल: **असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकक्कसं।**
समुप्पेहमसंदिद्धं, गिरं भासिज्ज पन्नवं॥3॥

छाया: असत्या-मृषां सत्यां च, अनवद्यामकर्कशाम्।
समुत्प्रेक्ष्य असंदिग्धां, गिरं भाषेत प्रज्ञावान्॥

मूल: **एअं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं।**
स भासं सच्चमोसं च, तंपि धीरो विवज्जए॥4॥

छाया: एतं चार्थमन्य वा, यस्तु नामयति शाश्वतम्।
स भाषां सत्यामृषां च, तामपि धीरो विवर्जयेत्॥

मूल: **वितहं पि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए नरो।**
तम्हा सो पुट्ठो पावेण, किं पुण जो मुसंवए॥5॥

छाया: वितथामपि तथा मूर्तिं, यां गिरं भाषते नरः।
तस्मात् सः स्पृष्टः पापेन, किं पुनर्यो मृषां वदेत्॥

मूल: **तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ।**
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ॥6॥

छाया: तस्माद् गमिष्यामो वक्ष्यामः, अमुकं वा नः भविष्यति।
अहं वा तत् करिष्यामि, एष वा तत् करिष्यति॥

मूल: **एवमाइउ जा भासा, एसकालंमि संकिया।**
संपयाइअमट्ठे वा, तंपि धीरो विवज्जए॥7॥ युग्मम्

छाया: एवमाद्या तु या भाषा, एष्यत्काले शङ्किता।
साम्प्रतातीतार्थयोर्वा, तामपि धीरो विवर्जयेत्॥ युग्मम्

सातवाँ पाठ : सुवाक्य शुद्धि

1. भासा चार तरियाँ की होया करै। ग्यानी साद्धु सुद्ध भासा बरतण खात्तर इनमैं तै दो नैं लगन अर नरमाई तै सीक्खै अर दो नैं कत्ती ए छोड दे।

2. (पाप आल़ी होण के कारण) ना बोल्लण जोगी सच्ची, सच्ची-झूठी मिली-जुली, कत्ती झूठी अर ग्यान्नियाँ के ना बोल्लण जोगी ब्योहार की भासा या जो-जो भासा तीरथंकर भगवानाँ नैं नूहीं बरती, ग्यान्नी साद्धु उन-उन भासाँ नैं कदे भी ना बरतै।

3. श्याणा साद्धु ब्योहार की अर सच्ची भासा भी वा ए बोल्लै, जिसमैं कोये पाप ना हो, जो मीठी हो, सक-सुबा पैदा करण आल़ी ना हो अर उसनैं भी उसके नतीज्जे का पूरा बिचार करकै ए बोल्लै।

4. ओ बिचार करण आल़ा साद्धु इसी सच्ची अर ब्योहार की भासा भी ना बोल्लै जिसका मतलब साफ ना हो या जो मोक्स तै उलटा मतलब देण आल़ी हो।

5. जो माणस सच्ची दीक्खण आल़ी झूठी चीज नैं भरम होण के कारण सच्ची कह्या करै तो ओ भी भारी पाप-करम बांध्या करै अर जो खाल्ली झूठ ऐ बोलदा हो, उसकी बाबत तो कह्णा ए के सै।

6-7. पाप-करम बांधण तै बचदा होया श्याणा साद्धु, "कल हम जरूर जावैंगे या बखाण देवैंगे या म्हारा फलाणा काम होवैगा या मैं ढिकड़ा काम करूँगा या यो साद्धु यो काम करैगा", इस तरियाँ की आण आल़े टैम की भविस्यबाणी होण के कारण सक-सुबा पैदा करदी होई भासा या आज के अर बीत्ते होए टैम की बाबत सक-सुबा पैदा करण आल़ी भासा कदे भी ना बोल्लै।

मूल: अइअंमि अ कालंमि, पच्चुप्पण्णमणागए।
जमट्ठं तु न जाणिज्जा, एवमेअंति नो वए॥8॥

छाया: अतीते च काले, प्रत्युत्पन्नेऽनागते।
यमर्थं तु न जानीयात्, एवमेतदिति न वदेत्॥

मूल: अइअंमि अ कालंमि, पच्चुप्पण्णमणागए।
जत्थ संका भवे तं तु, एवमेअंति नो वए॥9॥

छाया: अतीते च काले, प्रत्युत्पन्नेऽनागते।
यत्र शंका भवेत् तत् तु, एवमेतदिति नोवदेत्॥

मूल: अइअंमि अ कालंमि, पच्चुप्पण्णमणागए।
निस्संकिअं भवे जं तु, एवमेअं ति निद्दिसे॥10॥

छाया: अतीते च काले, प्रत्युत्पन्नेऽनागते।
निशंकित भवेत् यत्तु, एवमेतदिति निर्दिशेत्॥

मूल: तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो॥11॥

छाया: तथैव परुषा भाषा, गुरुभूतोपघातिनी।
सत्यापि सा न वक्तव्या, यत: पापस्यागम:॥

मूल: तहेव काणं काणत्ति, पंडगं पंडगत्ति वा।
वाहिअं वावि रोगित्ति, तेणं चोरत्ति नो वए॥12॥

छाया: तथैव काणं काण इति, पण्डकं पण्डक इति वा।
व्याधितं वाऽपि रोगीति, स्तेनं चोर इति नो वदेत्॥

मूल: एएणन्नेण अट्ठेणं, परो जेणुवहम्मइ।
आयारभावदोसन्नू, न तं भासिज्जं पन्नवं॥13॥

छाया: एतेन अन्येन अर्थेन, परो येनोपहन्यते।
आचारभावदोषज्ञ:, न तं भाषेत प्रज्ञावान्॥

मूल: तहेव होले गोलित्ति, साणे वा वसुलित्ति अ।
दमए दुहए वावि, नेवं भासिज्जं पन्नवं॥14॥

छाया: तथैव होल: गोल इति, श्वा वा वसुल इति च।
द्रमको दुर्भगाश्चाऽपि, नैवं भाषेत प्रज्ञावान्॥

8. बीत्ते होए, आज के अर आण आले टैम की बाबत जिस बात का आच्छी (पूरी) तरियाँ बेरा ना हो, उसनैं न्यूँ न्हीं कह्वै अक् या बात न्यूँ ए सै।

9. बीत्ते होए, आज के अर आण आले टैम की जिस बात की बाब्बत कोए सक-सुबा हो तो उसनैं न्यूँ भी ना कह्वै अक् या इसे तरियाँ सै। उसकी बाब्बत पक्की बात ना कह्वै।

10. बीत्ते होए, आज के अर आण आले टैम की जिस बात की बाब्बत कोए सक-सुबा ना हो तो साद्धु उसनैं "या न्यूँ ए सै" कह सकै सै। उसकी बाब्बत पक्की बात कह सकै सै।

11. इसे तरियाँ जो भासा रूक्खी हो, और जीवाँ तै दुख-दरद देण आली हो, वा सच्ची भी हो तो न्हीं बोल्लणी चहिए। इसी भासा बोल्लण तै पाप-करम बंध्या करैं।

12. इसे तरियाँ सबकी भलाई चाह्ण आला साद्धु काणे नैं काणा, हीजड़े नैं हीजड़ा, बीमार नैं बीमार अर चोर नैं चोर भी ना कह्वै।

13. बोलचाल अर मन के दोस जाणन आला ग्यान्नी माणस इस तरियाँ की अर और कीसी भी दूसरे जीव तै दुख देण आली भासा ना बोल्लै।

14. इसे तरियाँ ग्यान्नी साद्धु "रै बौले, रै नोक्कर, ओ कूत्ते, रै नीच, रै गरीब, रै निरभाग" जीसी करड़ी बात कदे भी ना बोल्लै।

मूल: अज्जिए पज्जिए वावि, अम्मो माउसिअत्ति अ।
पिउस्सिए भायणिज्जत्ति, धूए णत्तुणिअत्ति अ॥15॥

छाया: आर्ज्जिके प्रार्ज्जिके वाऽपि, अम्ब मातृष्वस इति च।
पितृष्वसः भागिनेयीति, दुहितः नप्त्रीति च॥

मूल: हले हलित्ति अन्निति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुलित्ति, इत्थिअं नेव मालवे॥16॥ युग्मम्

छाया: हले हले इति अन्ने इति, भट्टे स्वामिनि गोमिनि।
होले गोले वसुले इति, स्त्रियं नैवमालपेत्॥

मूल: नामधिज्जेण णं बूआ, इत्थी गुत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा॥17॥

छाया: नामधेयेन तां ब्रूयात्, स्त्री-गोत्रेण वा पुनः।
यथार्हमभिगृह्य, आलपेत् लपेत् वा॥

मूल: अज्जए पज्जए वावि, बप्पो चुल्लपिउत्ति अ।
माउलो भाइणिज्जत्ति, पुत्ते णत्तुणिअत्ति अ॥18॥

छाया: आर्यकः प्रार्यकश्चाऽपि, पिता चुल्लपितेति च।
मातुलः भागिनेय इति, पुत्रः नप्ता इति च॥

मूल: हे भो हलित्ति अन्नित्ति, भट्टे सामिअ गोमिअ।
होल गोल वसुलित्ति, पुरिसं नेवमालवे॥19॥ युग्मम्

छाया: हे भो हल इति अन्न इति, भट्ट इति स्वामिन् गामिन्।
होल गोल वसुल इति, पुरुषं नैवमालपेत्॥ युग्मम्

मूल: नामधिज्जेण णं बूआ, पुरिसगुत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा॥20॥

छाया: नामधेयेन तं ब्रूयात्, पुरुषगोत्रेण वा पुनः।
यथार्हमभिगृह्य, आलपेत् लपेत् वा॥

मूल: पंचिंदियाण पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं।
जाव णं न विजाणिज्जा, ताव जाइत्ति आलवे॥21॥

छाया: पंचेन्द्रियाणां प्राणिना, मेषा स्त्री अयं पुमान्।
यावदेतद् न विजानीयात्, तावज्जातिरिति आलपेत्॥

15-16.. लुगाइयाँ तै बात करदे होए भी "री दाद्दी नान्नी, री पड़दाद्दी, हे अम्माँ, हे मोस्सी, हे बूआ, हे भाणजी, हे बेट्टी, हे पोत्ती, री बाह्मणी, हे आच्छी लुगाई, री मालकण, री नार, री दास्सी, हे बौली, हे नीच" जीसे प्यार-भरे, लल्लो-चप्पो करण आले अर बुरे बोल ना बोल्लै।

17. किसे कारण साद्धु नैं लुगाइयाँ तै बोलणा ए पड़ ज्या तो उसके गुण-दोस बिचार करकै उसके मस्हूर नाम या गोत या किसे ओर ठीक नाम तै एक बर या कई बर बोल्लै।

18-19. संसार मैं ब्योहार का ग्यान्नी साद्धु मरद तै भी रै दाद्दा, पड़दाद्दा, बाब्बू, चाच्चा, माम्मा, भाणजे, बेट्टे, पोत्ते, यार, बाह्मण, साले, भट्ट, माल्लक, साह्ब, नोक्कर, बौले अर नीच जीसे राग-द्वेस बढाण आले नाम्माँ तै ना बतलावै।

20. किसे कारण साद्धु नैं मरद-माणस तै बोलणा पड़ै तो उसके गुण-दोस बिचार करकै उसके मस्हूर नाम या गोत या किसे ओर ठीक नाम तै एक बर या कई बर बोल्लै।

21. पाँच इंदरियाँ आले जीवाँ की बाब्बत जिब तक यो बेरा ना लाग्गै अक् यो बीर सै या मरद, भासा का विवेक राक्खणिया साद्धु उसनैं उसकी जात तै ए बोल्लै जैसे- गाय की जात या कूत्ते की जात।

मूल: **तहेव माणुसं पसुं, पक्खिं वावि सरीसवं।**
थूले पमेइले वज्झे, पायमित्ति अ नो वए॥22॥

छाया: तथैव मानुषं पशुं, पक्षिणं वाऽपि सरीसृपम्।
स्थूलः प्रमेदुरः वध्यः, पाक्य इति च नो वदेत्॥

मूल: **परिवूढत्ति णं बूआ, बूआ उवचिअत्ति अ।**
संजाए पीणिए वावि, महाकायत्ति आलवे॥23॥

छाया: परिवृद्ध इत्येनं ब्रूयात्, ब्रूयादुपचित इति च।
संजातः प्रीणितो वाऽपि, महाकाय इति आलपेत्॥

मूल: **तहेव गाओ दुज्झाओ, दम्मा गोरहगत्ति अ।**
वाहिमा रहजोगित्ति नेवं भासिज्ज पन्नवं॥24॥

छाया: तथैव गावो दोह्याः, दम्या गोरथका इति च।
वाह्या रथयोग्या इति, नैवं भाषेत प्रज्ञावान्॥

मूल: **जुवं गवित्ति णं बूआ, धेणुं रसदयित्त अ।**
रहस्से महल्लए वावि, वए संवहणि त्ति अ॥25॥

छाया: युवा गौरित्येनं ब्रूयात्, धेनुं रसदा इति च।
ह्रस्वं महल्लकं वाऽपि, वदेत् संवहनमिति च॥

मूल: **तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि अ।**
रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासिज्ज पन्नवं॥26॥

छाया: तथैव गत्वा उद्यानं, पर्वतान् वनानि च।
वृक्षान् महतः प्रेक्ष्य, नैवं भाषेत प्रज्ञावान्॥

मूल: **अलं पासाय खंभाणं, तोरणाणि गिहाणि अ।**
फलिहग्गल नावाणं, अलं उदगदोणिणं।27॥

छाया: अलं प्रासाद-स्तंभयोः, तोरणानां गृहाणां च।
परिघार्गलानावां, अलमुदकद्रोणीनाम्॥

मूल: **पीढए चंगबेरे (रा) अ, नंगले मइअं सिआ।**
जंतलट्ठी व नाभी वा, गंडिआ व अलं सिआ॥28॥

छाया: पीठकाय चंगबेराय, लाङ्गलाय मयिकाय स्युः।
यंत्रयष्टये वा नाभये वा, गण्डिकायै वा अलं स्युः॥

22. इसे तरियां माणस, पसु-पक्सी अर सांप-सूंप देख कै न्यूँ कदे ना कहवै अक् यो मोटा सै, यो पेटू सै, यो मारण जोग्गा सै या यो रांद्धण जोग्गा सै !

23. उसकी बाबत मजबूर हो कै बोल्लणा हे पड़ ज्या तो बिचार कर कै बिना दोस की अर श्याणां के बोल्लण जोग्गी भासा हे बोल्लै जैसे यो सब तरियाँ तै पूरा सै, यो ताक्कतबर सै, यो जुआन सै, यो छिक्या होया सै, यो बड्डे सरीर आला सै।

24. पैहलां बताए होए बिबेक के हिसाब तै हे श्याणा साद्धु इस तरियाँ ना बोल्लै- ये गाँ दूध काड्ढण जोग्गी सैं, ये बाछड़े बधिया करण जोग्गे सैं, बोझढोण जोग्गे अर रथ मैं जोत्तण जोग्गे सैं- ये बचन ओरां तै दुक्ख देणिए बचन सैं।

25. जै मजबूर हो कै बोल्लण हे पड़ ज्या तो दूध आली गां नै दूध देण आली, काब्बू करण जोग्गे बाछड़े नै जुआन, छोट्टे बलद नैं बालक, बूढे बलद नै बडी उमर का अर रथ मैं जोत्तण जोग्गे बलद नैं ताक्कतबर कह्वै।

26-27. श्याणा साद्धु बाग, पहाड़ अर जंगलां मै जावै अर वहाँ बड्डे-बड्डे पेड देक्खै तो इसी हिंसा अर पाप आली भासा ना बोल्लै अक् ये पेड मैह्ल, खंभे, गेट, मकान, कुआड़ां की सांक्कल, कुण्डी, नाव अर पाणी की (गहरी) कूण्डी बणाण जोग्गे सैं।

28. न्यूँ भी ना कह्वै अक् ये पेड चौंकी, खेत्ती के ओजार, कोल्हू, पहियां के धुरे, सुनार के ओजार धरण की चीज बणाण खात्तर काम के सैं।

मूल: आसणं सयणं जाणं, हुज्जा वा किंचुवस्सए।
भूओवघाइणिं भासं, नेवं भासिज्ज पन्नवं॥29॥

छाया: आसनं शयनं यानं, भवेद्वा किञ्चिदुपाश्रये।
भूतोपघातिनीं भाषां, नैवं भाषेत प्रज्ञावान्॥

मूल: तहेव गंतु मुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि अ।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासिज्ज पन्नवं॥30॥

छाया: तथैव गत्वा उद्यानं, पर्वतान् वनानि च।
वृक्षान् महत: प्रेक्ष्य, एवं भाषेत प्रज्ञावान्॥

मूल: जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया।
पयायसाला वड़िमा, वए दरिसणित्ति अ॥31॥

छाया: जातिमन्त इमे वृक्षा:, दीर्घवृत्ता: महालया:।
प्रजातशाखा: विटपिन:, वदेत् दर्शनीया इति च॥

मूल: तहा फलाइं पक्काइं, पायखज्जाइं नो वए।
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइत्ति नो वए॥32॥

तथा फलानि पक्वानि, पाकखाद्यानि नो वदेत्।
वेलोचितानि टालानि, द्वैधिकानीति नो वदेत्॥

मूल: असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वडिमा फला।
वइज्ज बहुसंभूआ, भूअरूवत्ति व पुणो॥33॥

छाया: असमर्था इमे आम्रा:, बहुनिर्वर्तितफला:।
वदेत् बहुसंभूता:, भूतरूपा इति वा पुन:॥

मूल: तहेवोसहिओ पक्काओ, नीलिआओ छवीइ अ।
लाइमा भज्जिमाउत्ति, पिहुखज्जत्ति नो वए॥34॥

छाया: तथैवौषधय: पक्वा:, नीलिकाश्छवयश्च।
लवनवत्यो भर्जनवत्य इति, पृथुक भक्ष्या इति नो वदेत्॥

मूल: रूढा बहुसंभूआ, थिरा ओसढा वि अ।
गब्भिआओ पसूआओ, संसाराओ त्ति आलवे॥35॥

छाया: रूढा: बहुसम्भूता:, स्थिरा उत्सृता अपि च।
गर्भिता: प्रसूता:, संसारा इति आलपेत्॥

29. अर यो पेड आच्छा सै, इसतै आसण, बिछौणा, यान या स्थानक के लिए कुआड़ या और कोए चीज आच्छी बण सकै सै, श्याणा साद्धु इस तरियां की जीव मारण आली भासा भी ना बरतै।

30. बाग मैं, पहाड़ां पै अर जंगल मैं गया होया साद्धु वहाँ खड़े बड्डे-बड्डे पेड देख कै कुछ कहणा ए हो तो सास्तर मैं बताए तरीक्के तै बिना पाप की साफ-सुथरी भासा ए बरतै।

31. जैसे- ये पेड आच्छी नसल के सैं, ऊँच्चे सैं, गोल सैं, फैल्ले होए सैं, घणी ए टैहणी आले सैं अर देक्खण जोग्गे सैं।

32. फलाँ की बाबत भी साद्धु इसी भासा ना बोल्लै अक् फल पके होए सैं या पका कै खाण जोग्गे सैं, इब्बै ए तोड़ण जोग्गे सैं, इनमैं गुठली कोन्यां, ये मुलैम सैं अर काट्टण जोग्गे सैं।

33. बोलणा ए पड़ ज्या तो साद्धु इस तरियां बोल सकै सै—ये आम के पेड बोझ ठाण जोग्गे कोन्यां, इनमैं गुठलियां आले फल घणे ए लाग रहे सैं, घनखरे फल पक लिए सैं अर इनमैं इसे फल घणे ए सैं, जिनमैं इब ताईं गुठली कोन्यां पड़ी अर जो मुलैम सैं।

34. इसे तरियां खेत्तां मैं खड़े नाज की बाबत भी साद्धु इसी पापण भासा ना बोल्लै जैसे—यो नाज पक लिया सै, यो लीली छाल आला काच्चा सै, यो काट्टण जोग्गा सै, यो भून्नण जोग्गा सै, यो चिउड़ा बणा कै खाण जोग्गा सै।

35. बोलणा ए पड़ ज्या तो इस तरियां बोल्लै जैसे—इसमैं अंकुर जाम्याए सैं, तकरीबन पक लिए सैं, टिक लिए सैं, बड्डे हो लिए सैं, इनमैं इबै भुट्टे कोन्यां निकले। इब सिट्टे निकल लिए सैं, या बीज पड़ लिए सैं।

मूल: **तहेव संखडिं नच्चा, किच्चं कज्जंत्ति नो वए।**
तेणगं वावि बज्झित्ति, सुतित्थित्ति अ आवगा॥36॥

छाया: तथैव संखडिं ज्ञात्वा, कृत्यं कार्यमिति नो वदेत्।
स्तेनक वाऽपि वध्य इति, सुतीर्था इति च आपगाः॥

मूल: **संखडिं संखडिं बूआ, पणिअट्ठत्ति तेणगं।**
बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाणं विआगरे॥37॥

छाया: संखडिं संखडिं ब्रूयात्, पणितार्थ इति स्तेनकम्।
बहुसमानि तीर्थानि, आपगानां व्यागृणीयात्॥

मूल: **तहा नइओ पुन्नाओ, कायतिज्जत्ति नो वए।**
नावाहिं तारिमाउत्ति, पाणिपिज्जत्ति नो वए॥38॥

छाया: तथा नद्यः पूर्णाः, कायतरणीया इति नो वदेत्।
नौभिस्तरणीया इति, प्राणिपेया इति नो वदेत्॥

मूल: **बहु बाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा।**
बहुवित्थडोदगा आवि, एवं भासिज्ज पन्नवं॥39॥

छाया: बहुभृता अगाधाः, बहुसलिलोत्पीडोदकाः।
बहुविस्तीर्णोदकाश्चापि, एवं भाषेत प्रज्ञावान्॥

मूल: **तहेव सावज्जं जोगं, परस्सट्ठा अ निट्ठिअं।**
कीरमाणं त्ति वा नच्चा, सावज्जं न लवे मुणी॥40॥

छाया: तथैव सावद्यं योगं, परस्यार्थं च निष्ठितम्।
क्रियमाणमिति वा ज्ञात्वा, सावद्यं न लपेत् मुनिः॥

मूल: **सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे।**
सुनिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी॥41॥

छाया: सुकृतमिति सुपक्वमिति, सुछिन्नं सुहृतं मृतम्।
सुनिष्ठितं सुलष्टमिति, सावद्यं वर्जयेत् मुनि॥

मूल: **पयत्त पक्कत्ति व पक्कमालवे, पयत्तछिन्नति व छिन्नमालवे।**
पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउअं, पहारगाढत्ति व गाढमालवे॥42॥

छाया: प्रयत्न पक्वमिति वा पक्वमालपेत्, प्रयत्नछिन्नमिति वा छिन्नमालपेत्।
प्रयत्नलष्टेति वा कर्म-हेतुकं, प्रहारगाढ इति वा गाढमालपेत्॥

36. किसे गिरस्थी के घर जीमणवार होंदी देख कै न्यूँ कहणा अक् गिरस्थ नैं पित्तराँ के ब्हान्ने यो पुन्न करणा चहिए अर चोर नैं देख कै न्यूँ कहणा अक् यो चोर मारण जोग्गा सै अर आच्छे घाट आली नदी देख कै न्यूँ कहणा अक् इस नदी का घाट आच्छा सै, इस तरियाँ की पापण भासा नहीं बोलणी चहिए।

37. बोलणा ए पड़ ज्या तो ग्यान्नी साद्धु जीम्मणवार नैं दावत, चोर नैं धन की मारी दुक्ख ठा कै सुआरथ सिद्ध करण आला, नदी नैं बराबर किनाराँ आली कह कै बिना पाप की भासा बोल्लै।

38. इसे तरियाँ नदियाँ की बाबत 'ये पाणी तै पूरी भरी होई बहवैं सैं, ये हात्थाँ तै पार उतरण जोग्गी या नाव तै तिरण जोग्गी सैं अर इनके किनाराँ पै सारे जीव अराम तै बैठ कै पाणी पी सकैं सैं, न्यूँ नहीं बोलणा चहिए।

39. बोलणा ए पड़ ज्या तो साद्धु न्यूँ कह्वै अक् ये पाणी तै तकरीबन भरी होई सैं, गहरी सैं, और नदियाँ के बहाव नैं पाछै हटाण आली सैं, घणे ए पाणी आली सैं अर चोड़े पाट आली सैं।

40-41. गिरस्थी के पाप आले पहलां के, इब होण आले अर आग्गै होण आले काम्मां की बाबत साद्धु इसी भासा ना बोल्लै अक् यो बड्डा मकान बणा कै आच्छा कर्या, यो बेसकीमती तेल रज्झा कै ठीक कर्या, यो खतरनाक जंगल काट कै आच्छा कर्या, आच्छा होया जो उस नीच के घरां चोरी हो गी, आच्छा होया जो ओ पापी, ओ भूंडी बोलणिया मर ग्या, आच्छा होया जो उस घमंडी की धन-माया जड़-मूल तै खतम हो गी, आच्छा हो जै इस छोरी का ब्याह हो ज्या, क्यूँ अक् या सुथरी घणी सै।

42. बोलणा ए पड़ ज्या तो साद्धु न्यूँ बोल्लै—जो आच्छी तरियाँ पकाया होया हो, उसनैं जतना तै पकाया होया; जो आच्छी तरियाँ कट्या होया हो, उसनैं जतना तै काट्या होया; जो आच्छी तरियाँ होया होया हो, उसनैं जतना तै पूरा कर्या होया कह्वै। सिंगार-सिंगूर नैं करम बांधणिया अर गहरे घाव नैं गहरा घाव कह सकै सै।

मूल: **सब्बुक्कसं परग्घं वा, अउलं नत्थि एरिसं।**
अविक्किअमवत्तव्वं, अचिअत्तं चेव नो वए।।43।।
छाया: सर्वोत्कृष्टं परार्घं वा, अतुलं नास्तीदृशम्।
अविकृतमवक्तव्यं, अप्रीतिकरं चैव नो वदेत्।।

मूल: **सव्व मेअं वइस्सामि, सव्वमेअंत्ति नोवए।**
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एवं भासिज्ज पन्नवं।।44।।
छाया: सर्वमेतद् वदिष्यामि, सर्वमेतदिति नो वदेत्।
अनुचिन्त्य सर्वं सर्वत्र, एवं भाषेत प्रज्ञावान्।।

मूल: **सुक्कीअं वा सुविक्कीअं, अकिज्जं किज्जमेव वा।**
इमं गिण्ह इमं मुंच, पणिअं नो वियागरे।।45।।
छाया: सुक्रीतं वा सुवक्रीतं, अक्रेयं क्रेयमेव वा।
इदं गृहाण इदं मुञ्च, पणितं न व्यागृणीयात्।।

मूल: **अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा।**
पणिअट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं विआगरे।।46।।
छाया: अल्पार्घे वा महार्घे वा, क्रये वा विक्रयेऽपि वा।
पणितार्थे समुत्पन्ने, अनवद्यं व्यागृणीयात्।।

मूल: **तहेवासंजयं धीरो, आस एहि करेहि वा।**
सयं चिट्ठ वयाहि त्ति, नेवं भासिज्ज पन्नवं।।47।।
छाया: तथैवाऽसंयतं धीरः, आस्व एहि कुरु वा।
शेष्व तिष्ठ व्रज इति, नैवं भाषेत प्रज्ञावान्।।

मूल: **बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो।**
न लवे असाहुं साहुत्ति, साहुं साहुत्ति आलवे।।48।।
छाया: बहव इमे असाधवः, लोके उच्यन्ते साधवः।
न लपेत् असाधुं साधुरिति, साधुं साधुरित्यालपेत्।।

43. इसे तरियाँ खरीद-बेच का जिकर हो तो साद्धु पाप-करमां आली इसी भासा ना बोल्लै—या चीज सब तै आच्छी सै, या घणी महँगी सै, या न्यारी ए सै, इसके जीसी दूसरी चीज कोन्यां, या बेचण जोग्गी कोन्यां, इसमैं घणे ए गुण सैं, इसकी खासियत की बाबत के कुहा हो सै, इस चीज तै तो घिरणा आवै सै, वगैरा।

44. (कोए साद्धु के हाथ संदेसा भेजै तो ओ) न्यूँ ना कह्वै—आप बेफिकर रहो, आपकी ये सारी बात मैं उसनैं ज्यूँ की त्यूँ कह द्यूंगा। (किसे का संदेसा देते होए भी न्यूँ ना कह्वै) मेरी कही होई ये सारी बात पूरी अर ज्यूँ की त्यूँ सैं। बोलणा जरूरी हो तो श्याणा साद्धु सारी जंगा सारी बात एक-एक करकै बिबेक की कसोटी पै परख-परख कै बोल्लै।

45. साद्धु ब्योपार की बाबत न्यूँ ना बोल्लै—यो समान खरीद लिया तो आच्छा कर्या (भोत सस्ता मिल ग्या) अर यो समान बेच दिया (बड़ा नफा कमाया), यो समान ले ल्यो (महँगा होण आला सै) अर यो समान बेच द्यो, वगैरा।

46. थोड़ी या घणी कीमत आले समान के खरीदण-बेचण की बाबत जै कदे कोए जिकर आ ज्या अर बोलणा ए पड़ ज्या तो साद्धु नैं आच्छी तरियाँ सोच कै बिना पाप आले बोल ऐ बोलणे चहिएं।

47. इसे तरियां ग्यान अर धीरज राखणिया साद्धु संजम ना राक्खणिए गिरस्थां की बाबत न्यूँ ना कह्वै अक् यहां बैट्ठो, यहां आओ, फलाणा काम करो, सो ज्याओ, खड़े रहो, चले जाओ। इस तरियाँ के बोल बोलणा पापण भासा बोलणा सै।

48. दुनिया मैं इसे भतेरे साद्धु सैं, जो जनता मैं साद्धु कुहाया करैं पर ग्यान्नी साद्धु, उसनैं साद्धु ना कह्वै जो साद्धु ना हो, जो साद्धु हो, उसे नैं साद्धु कह्वै।

मूल: **नाणदंसणसंपन्नं, संजमे अ तवे रयं।**
एवं गुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे॥49॥

छाया: ज्ञानदर्शनसंपन्नं, संयमे च तपसि रतम्।
एवं गुणसमायुक्तं, संयतं साधुमालपेत्॥

मूल: **देवाणं मणुआणं च, तिरिआणं च वुग्गहे।**
अमुगाणं जओ होउ, मा वा होउत्ति नो वए॥50॥

छाया: देवानां मनुजानां च, तिरश्चाञ्च विग्रहे।
अमुकानां जयो भवतु मा वा भवतु इति नो वदेत्॥

मूल: **वाओ वुट्ठं च सीउण्हं, खेमं धायं सिवंत्ति वा॥**
कयाणु हुज्ज एआणि, मा वा होउत्ति नो वए॥51॥

छाया: वातो (वायुः) वृष्टं च शीतोष्णं, क्षेमं भ्रातं शिवमिति वा।
कदा नु भवेयुः एतानि, मा वा भवेयुरिति नो वदेत्॥

मूल: **तहेव मेहं व नहं व माणवं, न देव देवत्ति गिरं वइज्जा।**
समुच्छिए उन्नए वा पओए, वइज्ज वा वुट्ठ बलाहयत्ति॥52॥

छाया: तथैव मेघं वा नभो वा मानवं, न देवदेव इति गिरं वदेत्।
सम्मूर्च्छित उन्नतो वा पयोदः, वदेत् वा वृष्टो बलाहक इति॥

मूल: **अंतलिक्खंत्ति णं बूआ, गुज्झाणुचरिअत्ति अ।**
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतंत्ति आलवे॥53॥

छाया: अन्तरिक्षमिति एतद् ब्रूयात्, गुह्यानुचरितमिति च।
ऋद्धिमन्तं नरं दृष्ट्वा, ऋद्धिमन्तमिति आलपेत्॥

मूल: **तहेव सावज्जणुमोअणी गिरा, ओहारिणी जा अ परोवघाइणी।**
से कोह लोह भय हास माणवो, न हासमाणो वि गिरं वइज्जा॥54॥

छाया: तथैव सावद्यानुमोदिनो गीः, अवधारिणी या च परोपघातिनी।
तां क्रोध-लोभ-भय-हासेभ्यो मानवः, न हसन्नपि गिरं वदेत्॥

मूल: **सुवक्कसुद्धिं समुपेहिआ मुणी,**
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मिअं अदुट्ठे (ट्ठं) अणुवीइ भासए,
सयाण मज्झे लहइ पसंसणं॥55॥

49. जो साद्धु ग्यान, दरसन अर चारित्तर तै भर्‌या हो, संजम अर तप मैं पूरी तरियां लाग्या होया हो अर गुणवान् हो, उसे नैं साद्धु कह्णा चहिए।

50. द्यौता, माणस अर तिर्‌यंच–इनमैं आपस मैं लड़ाई होंदी हो तो उसनैं देख कै फलाणे की जीत हो अर ढिकड़ा हार ज्या, इस तरियां की हिंसा बढाण आली बात साद्धु नैं नूहीं कहणी चहिए।

51. धूप अर गरमी वगैरा तै दुखी साद्धु नैं अपणा दुख दूर करण खात्तर हवा, बारिस, सरदी, गरमी, तपत, बिमारी की सांति, आच्छी फसल अर भलाई की बाबत न्यूँ नूहीं कह्णा चहिए–ये कब होवैंगे, या ये ना होवैं तो आच्छा रह्वै।

52. (साद्धु) बाद्दल, अकास अर माणस नैं द्यौता ना बतावै। ओ बाद्दल की बाबत न्यूँ कह सकै सै अक् यो बाद्दल चढ आया, या यो बरसण आला सै या यो ऊँच्चा चढदा आवै सै या बरस लिया सै वगैरा।

53. अकास नैं अंतरिक्स अर ना दीखणिए चालदे होए द्यौत्यां का रस्ता कह्वै। इसे तरियां धन आले माणस नैं धन आला कह्वै।

54. इसे तरियां अकलमंद साद्धु इसी भासा ना बोल्लै जो पाप-करम की अनुमोदना करण आली, पक्की बात कह्ण आली अर दूसरे जीवां तै दुक्ख देण आली हो, अर गुस्से, लोभ, डर अर हांसी-मजाक के बस हो कै भी कोए बात ना कह्वै।

55. जो साद्धु सुध भासा के सारे भेदां नैं पूरी तरियां ध्यान मैं धर कै बुरी भासा नैं तो छोड दिया करै अर बोलण तै पहलां फैदे-नुकसान का पूरा बिचार कर कै बिना दोस की, सबका भला करण आली अर

छाया : सद्वाक्यशुद्धिं सम्प्रेक्ष्य मुनिः, गिरं च दुष्टां परिवर्जयेत् सदा।
मितामदुष्टामनुचिन्त्य भाषते, सतां मध्ये लभते प्रशंसनम्।।

मूल : भासाइ दोसे अ गुणे अ जाणिआ,
तीसे अ दुट्ठे परिवज्जए सया।
छसु संजए सामणिए सया जए,
वइज्ज बुद्धे हिअमाणुलोमिअं।।56।।

छाया : भाषायाः दोषांश्च ज्ञात्वा, तस्याश्च दृष्टायाः परिवर्जकः सदा।
षट्सुसंयतः श्रामण्ये सदा यतः, वदेत् बुद्धो हितमानुलौमिकम्।।

मूल : परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए,
चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स निद्धुणे धुन्नमलं पुरेकडं,
आराहए लोगमिणं तहा परं।।57।।

–त्ति बेमि।

छाया : परीक्ष्यभाषी सुसमाहितेन्द्रियः, अपगतचतुःकषायः अनिश्रितः।
स निर्द्धूय धूतमलं पुराकृतं, आराधयेत् लोकमिमं तथा परम्।।

–इति ब्रवीमि।

।। इअ सुवक्कसुद्धी णाम सत्तमं अज्झयणं समत्तं ।।

थोड़े सब्दां आली भासा बोल्या करै, ओ आच्छे माणसां मैं आच्छा कुहाया करै।

56. छह तरियां के सरीर आले जीवां नैं बचा कै चाल्लण आला साद्धु अर संजम मैं बहादुरी बरतण आला सच्चाई का ग्यान्नी साद्धु पहलां बताए होए भासा के गुण-दोस आच्छी तरियां पिछाण कै दोस-भरी अर कठोर भासा नैं तो छोड दे अर काम पड़ै तो बस अपणा अर दूसरां का भला करण आली सुथरी अर मीठी भासा ए बोलै।

57. जो गुण-दोस की परख करकै बोलण आला सै, जो सारी इंदरियां पै काब्बू राखण आला सै, जो चार कसायां नैं पूरी तरियां रोक्कण आला सै, ओ किसे के आसरे ना रहण आला साद्धु पाछले जनमां मैं कट्टी करी होई करमां की गंदगी दूर करकै इस जनम की अर आगले जनम की सच्ची साधना कर्या करै।

--न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

।। सुवाक्य शुद्धि नाम का सातवां पाठ समाप्त ।।

अह आयारप्पणिहि णाम अट्ठमज्झयणं

मूल: **आयारप्पणिहिं लद्धु, जहाकायव्व भिक्खुणा।**
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे॥1॥

छाया: आचार प्रणिधिं लब्ध्वा, यथा कर्त्तव्यं भिक्षुणा।
तद् भवद्भ्य उदाहरिष्यामि, आनुपूर्व्या शृणुत मम॥

मूल: **पुढविदगअगणिमारुअ, तणरूक्खस्स बीयगा।**
तस्सा अ पाणा जीवत्ति, इइ वुत्तं महेसिणा॥2॥

छाया: पृथिव्युदकाग्निमारुताः, तृणवृक्षसबीजकाः।
त्रसाश्च प्राणिनो जीवा इति, इत्युक्तं महर्षिणा॥

मूल: **तेसिं अच्छणजोएण, निच्चं होयव्वयं सिआ।**
मणसा कायवक्केण, एवं हवइ संजए॥3॥

छाया: तेषामक्षणयोगेन, नित्यं भवितव्यं स्यात्।
मनसा कायेन वाक्येन, एवं भवति संयतः॥

मूल: **पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, नेव भिंदे न संलिहे।**
तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए॥4॥

छाया: पृथिवीं भित्तिं शिलां लेष्टुं, नैव भिन्द्यात् न संलिखेत्।
त्रिविधेन करणयोगेन, संयतः सुसमाहितः॥

मूल: **सुद्धपुढवीं न निसीए, ससरक्खंमि अ आसणे।**
पमज्जित्तु निसीइज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं॥5॥

छाया: शुद्धपृथिव्यां न निषीदेत्, सरजस्के वा आसने।
प्रमृज्य तु निषीदेत्, याचित्वा यस्यावग्रहम्॥

मूल: **सीओदगं न सेविज्जा, सिलावुट्ठं हिमाणि अ।**
उसिणोदगं तत्तफासुअं, पडिगाहिज्ज संजए॥6॥

छाया: शीतोदकं न सेवेत, शिलावृष्टं हिमानि च।
उष्णोदकं तप्तप्रासुकं, प्रतिगृह्णीयात् संयतः॥

आठवाँ पाठ : आचार प्रणिधि

1. साद्धु के आचरण का अनमोल खजान्ना ले कै साद्धु का ब्योहार किसा होणा चहिए, यो मैं यहाँ बताऊँ सूँ। उसकी बाबत एक-एक करकै सारी बात चौकस हो कै सुणो।

2. भगवान महाबीर नैं बताया सै- प्रिथवी, पाणी, आग, हवा, बनासपति अर हर तरियां के त्रस प्राणी, इन सार्यां मैं चेतना होया करै।

3. इन सारे जीवां गेल साद्धु मन, बचन अर काया के योग तै हमेस्सां अहिंसा का (किसे तै दुक्ख ना देण आला) ब्योहार ए करै। इसा करण तै ए साद्धु सच्चा संजमी हो सकै सै।

4. संजम मैं सुद्ध समाधी की भौअना राखण आला साद्धु तीन करण अर तीन योग तै सचित प्रिथवी नैं, दिवार नैं, पत्थर नै अर डले वगैरा नैं फोड़ण, घिस्सण अर कुरेदण बरगे काम ना करै।

5. साद्धु नैं कुदरती अर सचित प्रिथवी पै अर सचित धूल-धमंडल आसन पै उठणा-बैठणा कोन्यां कलपदा। अचित जमीन पै बैठणा हो तो भी उसके मालिक की अग्या ले कै अर जमीन नैं पूरे ध्यान तै साफ करकै ए बैठै।

6. कच्चे पाणी, ओले, बारिस के पाणी अर बरफ बरगे सचित पाणी नैं साद्धु कदे भी ना बरतै। जरूरत हो तो गरम हो कै फास्सु बणे होए पाणी बरगा अचित पाणी ए लेवै अर बरतै।

मूल: **उदउल्लं अप्पणोकायं, नेव पुंछे न संलिहे।**
समुप्पेह तहाभूअं, नो णं संघट्टए मुणी।।7।।

छाया: उदकार्द्रमात्मनः कायं, नैव पुञ्छयेत् न संलिखेत्।
समुत्प्रेक्ष्य तथाभूतं, नैनं संघट्टयेत् मुनिः।।

मूल: **इंगालं अगणिं अच्चिं, अलायं वा स जोइअं।**
न उंजिज्जा न घटिज्जा, नो णं निव्वावए मुणी।।8।।

छाया: अङ्गारमग्निमर्च्चिः, अलातं वा सज्योतिः।
नोत्सिञ्चेत् न घटयेत्, नैनं निर्वापयेत् मुनिः।।

मूल: **तालिअंटेण पत्तेण, साहाए विहुणेण वा।**
न वीइज्ज अप्पणो कायं, बाहिरं वावि पुग्गलं।।9।।

छाया: तालवृन्तेन पत्रेण, शाखया विधूननेन वा।
न वीजयेत् आत्मनः कायं, बाह्यं वाऽपि पुद्गलम्।।

मूल: **तणरुक्खं न छिंदिज्जा, फलं मूलं च कस्सइ।**
आमगं विविहं बीअं, मणसावि ण पत्थए।।10।।

छाया: तृणवृक्षं न छिन्द्यात्, फलं मूलं च कस्यचित्।
आमकं विविधं बीजं, मनसापि न प्रार्थयेत्।।

मूल: **गहणेसु न चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा।**
उदगंमि तहा निच्चं, उत्तिंगपणगेसु वा।।11।।

छाया: गहनेषु न तिष्ठेत्, बीजेषु हरितेषु वा।
उदके तथा नित्यं, उत्तिंगपनकयोः वा।।

मूल: **तसे पाणे न हिंसिज्जा, वाया अदुव कम्मुणा।**
उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविहं जगं।।12।।

छाया: त्रसान्प्राणिनः न हिंस्यात्, वाचा अथवा कर्मणा।
उपरतः सर्वभूतेषु, पश्येत् विविधं जगत्।।

मूल: **अट्ठसुहुमाइं पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए।**
दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा।।13।।

छाया: अष्टौ सूक्ष्माणि प्रेक्ष्य, यानि ज्ञात्वा संयतः।
दयाधिकारी भूतेषु, आसीत् तिष्ठेत् शयीत वा।।

7. ग्यान्नी साद्धु पाणी मैं भीजे होए सरीर नैं कपड़े-लत्ते वगैरा तै ना पूँझै अर ना ए हाथ तै मसलै। पाणी मैं भीजा सरीर देख कै उसकै हाथ भी ना लावै।

8. पाप तै हर तरियां दूर रहण आला साद्धु अंगारे की, लोहे की, टूटी होई लपट की, सिलगते होए काठ की अर और किसे भी तरियां की आग नैं ना तै ईंधण गेर कै बालै, ना उसकै हाथ लावै अर ना पाणी-पूणी गेर कै उसनैं बुझावै।

9. साद्धु अपणे सरीर कै या बाह्र की किसे चीज कै ताड़ के पेड़ के पंखां तै, कमल वगैरा के पत्त्यां तै, पेड की टहणी तै अर और किसे भी तरियां के पंखे तै हवा ना करै।

10. साद्धु किसे भी तरियां के तुणके, पेड, पेडां के फल, उनकी जड़ नैं ना छेदै अर ना ए किसे भी तरियां के सचित बीज बरतै। बरतणा तै दूर रह्या, मन मैं बरतण का ख्याल भी ना करै।

11. साद्धु नैं पेड़ां के घणे झुरमुटां मैं, बीजां के ऊपर, दूब के ऊपर, हरियाली के ऊपर, पाणी आली बनासपति के ऊपर, काई के ऊपर, कुकुरमुत्ते वगैरा किसे भी तरियां की बनासपति के ऊपर कदे भी खड़ा नहीं होणा चहिए।

12. सारे जीवां की हिंसा नैं छोड्डण आला साद्धु मन, वचन अर काया के योगां तै त्रस जीवां की हिंसा ना करै। अहिंसा के लिये होए बरतां नैं रोज मजबूत बणाण खात्तर इस दुनिया मैं भरे तरां-तरां के जीवां नैं अपणे जीसा ए देखै अर सिमझै।

13. साद्धु आठ तरियां के सूछमां नैं पहलां आच्छी तरियां देख अर सिमझ कै ए सुद्ध (बिना जीवां की) जंगा उठण, बैठण, लोटण वगैरा के करणिये काम करै।

मूल: कयराइं अट्ठ सुहुमाइं, जाइं पुच्छिज्ज संजए।
इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खिज्ज विअक्खणो॥14॥

छाया: कतराणि अष्टौ सूक्ष्माणि, यानि पृच्छेत् संयत:।
इमानि तानि मेधावी, आचक्षीत विचक्षण:॥

मूल: सिणेहं पुप्फसुहुमं च, पाणुत्तिंगं तहेव य।
पणगं बीअहरिअं च, अंडसुहुमं च अट्ठमं॥15॥

छाया: स्नेहं पुष्पसूक्ष्मं च, प्राणोत्तिंगं तथैव च।
पनकं बीजहरितं च, अण्डसूक्ष्मं च अष्टमम्॥

मूल: एवमेआणि जाणित्ता, सव्व भावेण संजए।
अप्पमत्तो जए निच्चं, सव्विंदिअसमाहिए॥16॥

छाया: एवमेतानि ज्ञात्वा, सर्वभावेन संयत:।
अप्रमत्तो यतेत नित्यं, सर्वेन्द्रियसमाहित:॥

मूल: धुवं च पुडिलेहिज्जा, जोगसा पायकंबलं।
सिज्जमुच्चारभूमिं च, संथारं अदुवासणं॥17॥

छाया: ध्रुवं च प्रतिलेखयेत्, योगेन पात्रकम्बलम्।
शय्यामुच्चारभूमिं च, संस्तारमथवाऽऽसनम्॥

मूल: उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण जल्लिअं।
फासुअं पडिलेहित्ता, परिट्ठाविज्ज संजए॥18॥

छाया: उच्चारं प्रस्रवणं, श्लेष्म सिङ्घाण जल्लिकम्।
प्रासुकं प्रतिलेख्य, परिष्ठापयेत् संयत:॥

मूल: पविसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोअणस्स वा।
जयं चिट्ठे मिअं भासे, न य रूवेसु मणं करे॥19॥

छाया: प्रविश्य परागारं, पानार्थं भोजनाय वा।
यतं तिष्ठेत् मितं भाषेत, न च रूपेषु मन: कुर्यात्॥

14. साद्धु नैं जो जानणे बहोत जरूरी सैं, वे आठ सूछम कुण-कुण-से सैं? यो सवाल बूझ्या तो गुरु जी नैं बताया अक् रै चेल्ले! वे आठ सूछम न्यूँ-न्यूँ सैं :

15. सनेह सूछम (पाणी के बारीक जीव जैसे ओस, बरफ, ओले, सील्लण वगैरा), पुसप-सूछम (बड़ बरगे सिमझ मैं ना आण आले फूल), प्राण-सूछम (कुंथू बरगे इतणे बारीक जीव, जो हालैं तो दीखैं अर ना हालैं तो ना दीखैं), उत्तंग-सूछम (दीमक बरगे जीवां की बांबी, जिसके जीव बाह्र तै न्हीं दीखदे), पनक-सूछम (तरां-तरां की काई), बीज-सूछम (साल वगैरा पेड्डां के आगे के हिस्सां पै रहण आले छोटे-छोटे कण), हरित-सूछम (हालोहाल जाम्मण आले माट्टी के रंग के अंकुर), अर अण्ड-सूछम (माक्खी, कीड़ी, मकड़ी वगैरा के कत्ती छोट्टे अण्डे), ये आठ तरियां के सूछम जीव होया करैं।

16. इंदरियां के सुख अर दुख देण आले बिसयां पै समता की भौअना राखण आला संजमी साद्धु पहलां बताए होए आठ तरियां के सूछम जीवां नैं आच्छी तरियां जाण-पिछाण कै हमेसां धरम मैं चोकस रहंदा होया इनकी जतना करै।

17. सास्तर मैं बताए होए तरीकां तै रोज की रोज ठीक टैम पै कपड़े, पातरे, थानक, फारिग होण की जंगा, सोण की जंगा अर आसन वगैरा की ठीक-ठीक परतिलेखणा (देखभाल, झाड़-पूँझ) करणी चहिए।

18. साद्धु नैं चहिए अक् ओ गू-मूत, थूक, नाक का मैल, सरीर का मैल अर इसी ए ओर गंदी चीज किसे फास्सु (बिना जीवां की) जंगा पहलां परतिलेखणा (देखभाल) करकै ए गेरै।

19. गिरस्थी के घरां भोजन-पाणी के लिए गया होया साद्धु जतना तै उस्सै जंगा खड्या होवै, जहां खड्या होणा चहिए। ओ बिचार करकै बोलै, थोड़ा बोलै अर भला करण आली बात बोलै। ओ लुगाई वगैरा के रूप नैं देख कै अपणे मन नैं चंचल ना होण दे।

मूल: बहुं सुणेहिं कन्नेहिं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ॥20॥

छाया: बहु शृणोति कर्णाभ्यां, बहु अक्षिभ्यां पश्यति।
न च दृष्टं श्रुतं सर्वं, भिक्षुराख्यातुमर्हति॥

मूल: सुअं वा जइ वा दिट्ठं, न लविज्जोवघाइअं।
न य केण उवाएण, गिहिजोगं समायरे॥21॥

छाया: श्रुतं वा यदि वा दृष्टं, न लपेत् औपघातिकम्।
न च केनचित् उपाये, गृहियोगं समाचरेत्॥

मूल: निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दगं पावगं त्ति वा।
पुट्ठो वावि अपुट्ठो वा, लाभा लाभं न निद्दिसे॥22॥

छाया: निष्ठानं रसनिर्यूढं, भद्रकं पापकमिति वा।
पृष्टो वाऽपि अपृष्टो वा, लाभालाभौ न निर्दिशेत्॥

मूल: न य भोअणंमि गिद्धो, चरे उंछं अयंपिरो।
अफासुअं न भुंजिज्जा, कीयमुद्देसिआहडं॥23॥

छाया: न च भोजने गृद्धः, चरेत् उंच्छमजल्पाकः।
अप्रासुकं न भुञ्जीत, क्रीतमौद्देशिकमाहृतम्॥

मूल: संनिहिं च न कुव्विज्जा, अणुमायं पि संजए।
मुहाजीवी असंबद्धे, हविज्ज जगनिस्सिए॥24॥

छाया: संनिधिं च न कुर्यात्, अणुमात्रमपि संयतः।
मुधाजीवी असंबद्धः, भवेत् जगन्निश्रितः॥

मूल: लूहवित्ति सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिया।
आसुरत्तं न गच्छिज्जा, सुच्चा णं जिणसासणं॥25॥

छाया: रूक्षवृत्तिः सुसन्तुष्टः, अल्पेच्छः सुभरः स्यात्।
आसुरत्वं न गच्छेत्, श्रुत्वा जिन शासनम्॥

मूल: कन्नसुक्खेहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए।
दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहिआसए॥26॥

छाया: कर्णसौख्येषु शब्देषु, प्रेमं नाभिनिवेशयेत्।
दारुणं कर्कशं स्पर्शं, कायेन अध्यासीत॥

20. गिरस्थियां के संपरक मैं आण की वजह तै साद्धु कान्नां तै आच्छी-बुरी सब तरियां की बात सुण्या करै अर इसे तरियां आंक्खां तै भी अच्छा-बुरा बहोत कुछ देख्या करै। जो कुछ भी ओ देक्खै अर सुणै, ओ सब लोगां के श्यामीं परगट करणा ठीक नहीं होया करदा।

21. किसे तै सुणी होई अर आप देखी होई कोए भी हिंसा आली बात साद्धु नैं किसे के श्यामीं न्हीं कह्णी चहिए। किसे की बिनती वगैरा तै उकसावे मैं आ कै गिरस्थियां जिसा आचरण भी न्हीं करणा चहिए।

22. चाहे कोए साद्धु तै बूझै या ना बूझै, कदे भी सुआद भोजन-पाणी नैं सुआद अर बेसुआदे भोजन-पाणी नैं बेसुआदा नहीं कह्णा चहिए। ना हे भोजन-पाणी के मिलण या ना मिलण की बाबत कुछ कह्णा चहिए।

23. सुआद भोजन-पाणी की लालसा मैं साद्धु नैं खास अर जाणकार घरां मैं गोचरी लेण नहीं जाणा चहिए। बेकार की चंचलता छोड कै कई जंगा तै समता राखदे होए थोड़ा-थोड़ा भोजन-पाणी लेणा चहिए। वहां तै भी इसा भोजन-पाणी नहीं लेणा चहिए, जो साद्धु के लिए ए बणाया होया, मोल ल्याया होया, मंगाया होया अर फास्सु ना हो।

24. साद्धु नाज बरगी किसे भी चीज नैं थोड़ी-सी भी कट्ठी ना करै अर रात बिचाली ना रक्खै। हर हालत मैं संतोस राख कै पाप-करमां तै दूर रह्वै अर बिना लगाव राखे अपणी जिंदगी बितावै। ओ गिरस्थियां तै बंद्ध्या होया ना रह्वै अर दुनिया के सारे जीवां नैं बचा कै चालै।

25. रूक्खे-सूक्खे भोजन मैं संतोस राखण आला, थोड़ी इच्छा राखण आला अर थोड़े ए भोजन-पाणी तै छिक जाण आला साद्धु तीरथंकर भगवान की बाणी नैं सुण कै अर धारण कर कै गुस्से के कड़ुए फल नैं सिमझै अर कदे किसे पै गुस्सा ना करै।

26. कान्नां नैं प्यारे अर मीठे लागण आले बोलां मैं प्रेम नहीं रखणा चहिए। कठोर अर खुरदरा सपर्स (स्पर्श) काया तै समता राख कै सहन करणा चहिए।

मूल: **खुहं पिवासं दुस्सिज्जं, सीउन्हं अरइं भयं।**
अहिआसे अव्वहिओ, देहदुक्खं महाफलं॥27॥

छाया: क्षुधं पिपासां दुःशय्यां, शीतोष्णमरतिं भयम्।
अध्यासीत अव्याथितः, देहदुःखं महाफलम्॥

मूल: **अत्थं गयंमि आइच्चे, पुरच्छा अ अणुग्गए।**
आहारमाइअं सव्वं, मणसा वि ण पत्थए॥28॥

छाया: अस्तंगते आदित्ये, पुरस्तात् च अनुद्गते।
आहारमादिकं सर्वं, मनसाऽपि न प्रार्थयेत्॥

मूल: **अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मिआसणे।**
हविज्ज उयरे दंते, थोवं लद्धुं न खिंसए॥29॥

छाया: अतिंतिणः अचपलः, अल्पभाषी मिताशनः।
भवेत् उदरे दान्तः, स्तोकं लब्ध्वा न खिंसयेत्॥

मूल: **न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे।**
सुअलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा तवस्सि बुद्धिए॥30॥

छाया: न बाह्यं परिभवेत्, आत्मानं न समुत्कर्षेत्।
श्रुतलाभाभ्यां न माद्येत्, जात्या तपस्विबुद्ध्या॥

मूल: **से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मिअं पयं।**
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीअं तं न समायरे॥31॥

छाया: स जानन् अजानन् वा, कृत्वा अधार्मिकं पदम्।
संवृणुयात् क्षिप्रमात्मानं, द्वितीयं तत् न समाचरेत्॥

मूल: **अणायारं परक्कम, नेव गूहे न निन्हवे।**
सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए॥32॥

छाया: अनाचारं पराक्रम्य, नैव गूहयेत् न चिह्नुवीत।
शुचिः सदा विकटभावः, असंसक्तः जितेन्द्रियः॥

27. साद्धु नैं चहिए अक् ओ भूख, प्यास, ना सुहाण आले बिछौणे, सरदी, गरमी, संजम मैं होण आली ऊब अर डर बरगे कष्ट आ ज्यां तो उनतै कदे बेचैन ना होवै। पूरी मजबूती तै इन आए होए कष्टां नैं बरदास करै। सरीर के कष्ट समता राख कै सहन करण तै ए मोक्स का महाफल मिल्या करै।

28. सूरज छिप्पण तै ले कै तड़के ताईं, जब तक सूरज निकल नहीं आवै, तब तक साद्धु नैं हर तरियां के भोजन-पाणी की चाहना मन मैं भी नहीं रखणी चहिए।

29. साद्धु, गिरस्थी के घर तै भोजन-पाणी ना मिलै या बेसुआदा मिलै तो उसकी बुराई वगैरा ना करै, किसे तरियां की चंचलता ना दिखावै अर थोड़ा बोलै, थोड़ा खावै अर अपणे पेट नैं पूरी तरियां अपणे बस मैं राखै। जो थोड़ा भोजन-पाणी मिलैं पाछै भी देणिए की अर उस भोजन-पाणी की किसे तरियां भी बुराई नहीं कर्या करदा, ओ हे सच्चा साद्धु होया करै।

30. दूसरे की बेसती नहीं करणी चहिए अर अपणे आपे नैं भोत अच्छा अर ऊँच्चा नहीं सिमझणा चहिए। और तो के, अपणे ग्यान, अपणी सच्ची कमाई, जात, तपश्या अर बुद्धी वगैरा के बढण पै भी घमंड नहीं करणा चहिए।

31. जाण कै या जाणे बिना जै कोए अधरम का काम हो ज्या तो साद्धु नैं चहिए अक् ओ अपणी आतमा नैं जलदी ए उस पाप तै दूर हटा ले, उलटी खैंच ले अर आग्गै फेर ओ काम दुबारा कदे भी ना करै।

32. साफ-सुथरी बुद्धी आला, कदे कोए पाप ना छुपाण आला, किसे तरियां के बंधण ना राक्खण आला अर चंचल इंदरियां पै काबू राखण आला साद्धु अपणे संजम मैं किसे तरियां का दोस लाग ज्या तो गरुदेव के श्यामीं उस दोस की आलोचना करै अर आलोचना करदे होए दोस नैं थोड़ा-घणा कर कै या गोलमोल बातां मैं उलझा कै ना कहवै अर ना ए दोस नैं कत्ती छुपाण की कोसस करै।

मूल: **अमोहं वयणं कुज्जा, आयरिअस्स महप्पणो।**
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए॥33॥

छाया: अमोघं वचनं कुर्यात्, आचार्यस्य महात्मनः।
तत् परिगृह्य वाचा, कर्मणा उपपादयेत्॥

मूल: **अधुवं जीविअं नच्चा, सिद्धिमग्गं विआणिआ।**
विणिअट्टिज्ज भोगेसु, आउं परिमिअप्पणो॥34॥

छाया: अध्रुवं जीवितं ज्ञात्वा, सिद्धिमार्गं विज्ञाय।
विनिवर्त्तेत भोगेभ्यः, आयुः परिमितमात्मनः॥

मूल: **बलं थामं च पेहाए, सद्धामारुग्गमप्पणो।**
खेत्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं निजुंजए॥35॥

[बलं स्थाम प्रेक्ष्य, श्रद्धामारोग्यमात्मनः।
क्षेत्रं कालं च विज्ञाय, तथात्मानं नियुञ्जीत॥]

मूल: **जरा जाव न पीडेई, वाही जाव न वड्ढई।**
जाविंदिआ न हायंति, ताव धम्मं समायरे॥36॥

छाया: जरा यावन्न पीडयति, व्याधिर्यावन्न वर्द्धते।
यावदिन्द्रियाणि न हीयंते, तावद् धर्मं समाचरेत्॥

मूल: **कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं।**
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हिअमप्पणो॥37॥

छाया: क्रोधं मानं च मायां च, लोभं च पापवर्द्धनम्।
वमेत् चतुरो दोषांस्तु, इच्छन् हितमात्मनः॥

मूल: **कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।**
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो॥38॥

छाया: क्रोधः प्रीतिं प्रणाशयति, मानो विनयनाशनः।
माया मित्राणि नाशयति, लोभः सर्वविनाशनः॥

मूल: **उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।**
मायं च अज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे॥39॥

छाया: उपशमेन हन्यात् क्रोधं, मानं मार्दवेन जयेत्।
मायां च आर्जवभावेन, लोभं सन्तोषतः जयेत्॥

33. बिनैवान साद्धु का फरज सै अक् ओ महान आतमा अचार्यां की अग्या अर हुकम नैं बेकार ना जाण दे। उन नैं इज्जत तै मान्नै अर फेर जलदी ए करम मैं उन्नैं पालदे होए आचरण करै। इस तरियां उन हुकमां नैं सफल करै।

34. इस जिंदगी नैं आणी-जाणी, मोक्स की राही नैं हमेसां रहण आली सच्चाई अर अपणी उमर नै थोड़ी सिमझ कै साद्धु काम-भोग्गां तै हमेसां फारिग रहवै।

35. अपणे मन अर सरीर की ताक्कत, सरधा, सेहत, द्रव्यै, छेत्तर, काल अर भाव वगैरा का बिचार करकै साद्धु अपणी आतमा नैं जहां तक हो सकै, धरम के काम मैं लावै।

36. जिब तक सरीर बुढापे तै दुक्खी ना हो, जिब तक सरीर पै बेमारियां का जमघट ना लाग्गै, जिब तक कान, आंख बरगी इंदरियां कमजोर हो कै काम करण मैं लाचार ना हों तब तक चौक्कस हो कै धरम का आचरण कर लेणा चहिए।

37. जो अपणी आतमा का भला चाहवै सै, उसनैं गुस्से, घमंड, छल-कपट अर लोभ, इन चार बड्डे दोसां तै पूरी तरियां बचणा चहिए। ये चारूं दोस पाप-करम बड्ढाण आले सैं।

38. गुस्सा प्रेम का नास करया करै, घमंड बिने (नरमाई) का नास करया करै, छल-कपट दोस्ती का नास करया करै अर लोभ सारे के सारे सद्गुणां का नास कर दिया करै।

39. शांती की भौअना तै गुस्से का नास करो, नरमाई तै घमंड नैं जीतो, सरलता तै छल-कपट नैं अर संतोस तै लोभ नैं जीत ल्यो।

मूल: **कोहो अ माणो अ अणिग्गहीआ,**
माया अ लोभो अ पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया,
सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स।।40।।

छाया: क्रोधश्च मानश्च अनिगृहीतौ, माया च लोभश्च प्रवर्द्धमानौ।
चत्वार एते कृत्स्नाः कषायाः, सिञ्चन्ति मूलानि पुनर्भवस्य।।

मूल: **रायणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलयं सययं न हावइज्जा।**
कुम्मुव्व अल्लीणपलीणगुत्तो, परक्कमिज्जा तव संजमंमि।।41।।

छाया: रात्निकेषु विनयं प्रयुञ्जीत, ध्रुवशीलतां सततं न हापयेत्।
कूर्म इव आलीनप्रलीनगुप्तः, पराक्रमेत तपः संयमयोः।।

मूल: **निद्दं च न बहुमन्निज्जा, सप्पहासं विवज्जए।**
मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायंमि रओ सया।।42।।

छाया: निद्रां च न बहु मन्येत, सप्रहासं विवर्जयेत्।
मिथः कथासु न रमेत, स्वाध्याये रतः सदा।।

मूल: **जोगं च समणधम्मंमि, जुंजे अनलसो धुवं।**
जुत्तो अ समणधम्मंमि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं।।43।।

छाया: योगं च श्रमणधर्मे, युञ्जीत अनलसो ध्रुवम्।
युक्तश्च श्रमणधर्मे, अर्थं लभते अनुत्तरम्।।

मूल: **इह लोगपारत्तहिअं, जेण गच्छई सुग्गइं।**
बहुस्सुअं पज्जुवासिज्जा, पुच्छिज्जत्थविणिच्छयं।।44।।

छाया: इह लोके परत्र हितं, येन गच्छति सुगतिम्।
बहुश्रुतं पर्युपासीत, पृच्छेत् अर्थविनिश्चयम्।।

मूल: **हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिइंदिए।**
अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी।।45।।

छाया: हस्तं पादं च कायं च, प्रणिधाय जितेन्द्रियः।
आलीनगुप्तः निषीदेत्, सकाशे गुरोः मुनिः।।

40. काब्बू ना कर्‌या होया गुस्सा, घमंड, बढ़ता होया छल़-कपट अर लोभ; ये चारूं ए मुस्किल तै बस मैं आण आल़े तगड़े कसाय पुनरजनम के जैहरीले पेड की जड़ां नैं सींचण आल़े होया करैं।

41. मोक्स की साधना करणिये साद्धु नैं अपणे तै दीक्सा, ग्यान वगैरा मैं बडे अचार्‌यां, उपाध्यायां की इज्जत अर भगती करणी चहिए। उसनैं अपणे सील अर चारित्तर की मजबूत्ती मैं कदे कमी नहीं करणी चहिए। कछुवे की तरियां अपणी इंदरियां अर अंगां नैं मोस कै तपश्या अर संजम की किरियां मैं करड़े हो कै हमेस्सां हिम्मत तै मैह्नत करणी चहिए।

42. (साद्धु) नींद नैं बढावा ना देवै, आपस मैं हांसी-मजाक भी ना करै अर काम-भोग्गां की (फालतू) बात्तां मैं जी ना लावै। ओ हमेस्सां सुवाध्याय मैं पूरी तरियां लाग्या रह्वै।

43. साद्धु आलस अर परमाद का कत्ती त्याग करकै साद्धु के धरम मैं मन-वचन-काया के तीन्नूं योग्गां नैं सुथरी ढाल़ ला दे। कारण यो सै अक् साद्धु के धरम मैं लाग्या होया साद्धु ए सबतै आच्छे फल़- मोक्स नैं पाया करै।

44. साद्धु नैं लोक-परलोक, दोन्नुआं मैं भला करण आल़ा अर मरें पाछे आच्छी गति देण आल़ा साच्चा ग्यान लेण की खात्तर बडे ग्यान्नी साद्धु की सेवा-भगती करणी चहिए। सारी चीज्जां की सच्चाई नैं आच्छी तरियां जाणन की लालसा राखणी चहिए।

45. इंदरियां नैं जीत्तण आल़ा साद्धु गुरूदेव के ना तै घणा दूर बैट्ठै अर ना ए घणा पास। ओ सुथरी तरियां ध्यान देंदा होया जतना तै अपणे हाथ, पांयां अर सरीर नैं मोस कै मरयाद्दा तै बैट्ठै।

मूल: न पक्खओ न पुरओ, नवे किच्चाण पिट्ठओ।
न य ऊरूं समासिज्ज, चिट्ठिज्जा गुरुणंतिए॥46॥

छाया: न पक्षतः न पुरतः, नैव कृत्यानां पृष्ठतः।
न च ऊरुं समाश्रित्य, तिष्ठेत् गुर्वन्तिके॥

मूल: अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अंतरा।
पिट्ठिमंसं न खाइज्जा, मायामोसं विवज्जए॥47॥

छाया: अपृष्टो न भाषेत्, भाषमाणस्यान्तरा।
पृष्ठमांसं न खादेत्, मायामृषां विवर्जयेत्॥

मूल: अप्पत्तिअं जेण सिआ, आसु कुप्पिज्ज वा परो।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहिअगामिणिं॥48॥

छाया: अप्रीतिर्येन स्यात्, आशु कुप्येत् वा परः।
सर्वशः तां न भाषेत्, भाषामहितगामिनीम्॥

मूल: दिट्ठं मिअं असंदिद्धं, पडिपुन्नं विअं जिअं।
अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं॥49॥

छाया: दृष्टां मितामसंदिग्धां, प्रतिपूर्णां व्यक्तां जिताम्।
अजल्पाकी मनुद्विग्नां, भाषां निसृजेत् आत्मवान्॥

मूल: आयारपन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं।
वायविक्खलिअंनच्चा, न तं उवहसे मुणी॥50॥

छाया: आचार-प्रज्ञप्ति-धरं, दृष्टिवादमधीयानम्।
वाग्विस्खलितं ज्ञात्वा, न तमुपहसेत् मुनिः॥

मूल: नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं।
गिहिणो तं न आइक्खे, भूआहिगरणं पयं॥51॥

छाया: नक्षत्रं स्वप्नं योगं, निमित्तं मंत्रभेषजम्।
गृहिणः तत् न आचक्षीत, भूताधिकरणं पदम्॥

मूल: अन्नट्ठं पगडं लयणं, भइज्ज सयणासणं।
उच्चारभूमिसंपन्नं, इत्थीपसुविवज्जिअं॥52॥

छाया: अन्यार्थं प्रकृतं लयनं, भजेत शयनासनम्।
उच्चारभूमिसंपन्नं, स्त्रीपशुविवर्जितम्॥

46. ओ अचार्य बरगे गुरुआं की बराबर मैं ना बैट्टै। उनके आग्गै, उनकी तरफ कमर करकै, उनके पाछै अर पांयां तै पां भिड़ा कै उनकी कत्ती जड़ मैं भी नहीं बैठणा चहिए।

47. बिनेवान् साद्धु गुरुआं के बूझे बिना ना बोलै। बीच मैं ना बोलै। पाछे तै चुगली ना करै अर छल-कपट करदा होया झूठ का थोड़ा-सा भी सूहारा ना लेवै।

48. जिस भासा अर सबद के बोलण तै मन मैं बैर भौअना पैदा होंदी हो अर जिसनैं सुणतां ए कोए नराज होंदा हो तो वा बुरा करणी भासा बरतण की हर तरियां तै मनाही सै।

49. आतमा के हे ध्यान मैं रहण आला साद्धु वा हे भासा बोलै जो उसके तजरबे तै ठीक हो, जिसमैं कोए सक-सुबा ना हो, जो पूरी बात कहण आली हो, साफ हो अर जो थोड़े सबदां मैं अराम तै बिना डर के अर ठीक-ठीक अवाज मैं बोली जावै।

50. आचरण के महान गरंथ पढे होए (आचारांग अर भगवती सूत्तर पढण आले) अर दिरिष्टीवाद नां का पूर्व पढण आले ग्यान्नी साद्धु भी जै कदे बोलदे होए परमाद के बस हो कै असुध भासा या सबद बरत लें तो उन महापुरुसां का मजाक नहीं करणा चहिए।

51. साद्धु नैं नछत्तर, सुपने, योग, निमित्त, मंतर अर दुआई वगैरा की बाबत (उनके फल देण या ना देण की बाबत) गिरस्थियां तै चरचा नहीं करणी चहिए। इनकी बाबत चरचा करणा छै काय के जीवां की हिंसा का कारण सै।

52. साद्धु इसी जंगा या मकान मैं ठहरै जो गिरस्थी के रहण के लिए हो, जो साद्धु के लिए बणाया होया ना हो, जित धरम के हिसाब तै फारिग होण की जंगा हो अर जित जनानी, जिनौअर वगैरा ना रहंदे हों। इसे तरियां बिछोणे, आसन वगैरा भी जो दूसरां के लिए बणे हों, उन्नैं हे बरतै।

मूल: विवित्ता अ भवे सिज्जा, नारीणं न लवे कहं।
गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा, साहूहिं संथवं॥53॥

छाया: विविक्ता च भवेत् शय्या, नारीणां न लपेत् कथाम्।
गृहिसंस्तवं न कुर्यात्, कुर्यात् साधुभिः संस्तवम्॥

मूल: जहा कुक्कुडपोअस्स, निच्चं कुललओ भयं।
एवं क्खु बंभयारिस्स, इत्थी विग्गहओ भयं॥54॥

छाया: यथा कुक्कुटपोतस्य, नित्यं कुललतः भयम्।
एवं खलु ब्रह्मचारिणः, स्त्रीविग्रहतः भयम्॥

मूल: चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुअलंकिअ।
भक्खरं पिव दट्ठुणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे॥55॥

छाया: चित्रभित्तिं न निध्यायेत्, नारीं वा स्वलंकृताम्।
भास्करमिव दृष्ट्वा, दृष्टिं प्रतिसमाहरेत्॥

मूल: हत्थपायपलिच्छिन्नं, कन्ननासविगप्पिअं।
अवि वाससयं नारिं, बंभयारी विवज्जए॥56॥

छाया: हस्तपादप्रतिछिन्नां, कर्णनासाविकृताम्।
अपि वर्षशतिकां नारीं, ब्रह्मचारी विवर्जयेत्॥

मूल: विभूसा इत्थीसंसग्गो, पणीअं रसभोअणं।
नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा॥57॥

छाया: विभूषा स्त्रीसंसर्गः, प्रणीतरसभोजनम्।
नरस्यात्मगवेषिणः, विषं तालपुटं यथा॥

मूल: अंगपच्चंगसंठाणं, चारूल्लविअपेहिअं।
इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं॥58॥

छाया: अङ्गप्रत्यङ्गसंस्थानं, चारुलपित-प्रेक्षितम्।
स्त्रीणां तत् न निध्यायेत्, कामरागविवर्द्धनम्॥

मूल: विसएसु मणुन्नेसु, पेमं नाभिनिवेसए।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय, परिणामं पुग्गलाण उ॥59॥

छाया: विषयेषु मनोज्ञेषु, प्रेम नाभिनिवेशयेत्।
अनित्यं तेषां विज्ञाय, परिणामं पुद्गलानां तु॥

53. उपासरे (ठहरण की जंगा) मैं जै कोए और साद्धु ना हो, एक साद्धु एकला हे हो अर वहां बस लुगाई ए हों तो ओ परवचन, धरम-चरचा वगैरा ना करै। गिरस्थियां तै परिचै या बातचीत भी ना करै। साद्धुआं के या सज्जनां के साथ ऐ परिचै या बातचीत करणी चहिए।

54. बर्हमचारी मरद नैं लुगाई के सरीर तै उसै तरियां डर लाग्या रह्या करै जिस तरियां मुरगी के बच्चे नैं बिल्ली तै हमेस्सां लाग्या रह्या करै।

55. भले कोए लुगाई कपड़े अर गैह्णां तै सजी-धजी हो या फटे-पराणे लत्ते पहरे होए हो, बर्हमचारी मरद उसकी तरफ एकटक ना देखै। और तो के, दिवार पै बणी होई लुगाई की तसबीर भी ना देखै। जै कदे लुगाई पै नजर पड़ भी जा तो जिबै ए अपणी नजर उसे तरियां हटा ले जिस तरियां दुपहरी के सूरज पै नजर पड़तें ए अपणे-आप हट जाया करै।

56. बर्हमचारी इसी लुगाई के धोरै जाण तै भी बच कै रह्वै, जिसके हाथ-पां कट र्हे हों, कान-नाक बिगड़े होए हों अर वा बेसक सौ साल की बूढी ए क्यूं ना हो।

57. आतमा की साधना मैं लागे होए बर्हमचारी के लिए सरीर की सजावट, लुगाई का साथ अर बिगाड़ण आल़ा ताकतबर भोजन-पाणी तालपुट नां के जहर जिसा सै।

58. बर्हमचारी लुगाइयां के हाथ-पां, आंगल़ी-ऊंगल़ी, मीट्ठी बोल्ली, तिरछी नजर वगैरा कदे भी ना देखै। कारण यो अक् ये सब काम भोग्गां की बेमारी बढाण आल़े अर बर्हमचर्यै का नास करण आल़े होया करैं।

59. ग्यान्नी साद्धु न्यूं सिमझै अक् चीज्जां की सिकल बदलती रह्या करै अर वें थोड़ी ए देर टिक्कण आल़ी होया करैं। न्यूं सिमझ कै ओ मनभात्ते सबद, रूप, सुआद, खसबू अर मुलैम बिसयां तै लगाव ना राखै।

मूल: पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं नच्चा जहा तहा।
विणीअतिण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा॥60॥

छाया: पुद्गलानां परिणामं, तेषां ज्ञात्वा यथा तथा।
विनीततृष्णो विहरेत्, शीतीभूतेन आत्मना॥

मूल: जाइ सद्धाइ निक्खंतो, परिआयट्ठाणमुत्तमं।
तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरिअसंमए॥61॥

छाया: यया श्रद्धया निष्क्रान्तः, पर्यायस्थानमुत्तमम्।
तामेवोऽनुपालयेत्, गुणेषु आचार्यसम्मतेषु॥

मूल: तवं चिमं संजमजोगं च,
सज्झायजोगं च सया अहिट्ठिए।
सूरे व सेणाइ समत्तमाउहे,
अलमप्पणो होइ अलं परेसिं॥62॥

छाया: तपश्चेदं संयमयोगं च, स्वाध्याययोगं च सदाऽधिष्ठेत्।
शूर इव सेनया समस्तायुधः, अलमात्मनो भवति अलं परेभ्यः॥

मूल: सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो,
अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झइ जंसि मलं पुरे कडं,
समीरिअं रूप्पमलं व जोइणा॥63॥

छाया: स्वाध्यायसद्ध्यानरतस्य त्रायिणः, अपापभावस्य तपसिरतस्य।
विशुद्ध्यते यदस्यमलं पुराकृतं, समीरितं रूप्यमलमिव ज्योतिषा॥

मूल: से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए,
सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे।
विरायई कम्मघणंमि अवगए,
कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमा॥64॥
–त्ति बेमि।

छाया: स तादृशः, दुःखसहः जितेन्द्रियः, श्रुतेनयुक्तः, अममः अकिंचनः।
विराजते कर्मघनेऽपगते, कृत्स्नाभ्रपुटापगमे इव चन्द्रमा॥
–इति ब्रवीमि।

॥ इअ आयार पणिही णाम अट्ठमज्झयणं ॥

60. ग्यान्नी साद्धु इंदरियां के बिसै बणन आली चीज्जां की बदलण आली सच्चाई जाण कै तिरिस्ना तै कत्ती मुक्त हो कै, छमा के इमरत तै आतमा नैं ठंडी करकै अजाद भौअना तै बिचरण करै।

61. साद्धु नैं चहिए अक् जिस सरधा तै संसार त्याग कै उसनैं दीक्सा ली सै, अचार्यां की ठीक बताई होई अर तीरथंकर भगवान की कही होई गुणां मैं उस्सै सरधा नैं पूरी मजबूती तै पाले।

62. तपश्या करण आला, संजम अर जोग पालण आला अर सुआध्याय मैं सरधा राखण आला साद्धु अपणा अर ओरां का बचाव करण मैं उसे तरियां मजबूत हो जिस तरियां फौज तै घिर कै एक सस्तर धारण करणिया बहाद्दर जोद्धा अपणे अर ओरां नैं बचाण के जोग्गा होया करै।

63. सुआध्याय अर सुभ ध्यान मैं ए रह्ण आले दुनिया के जीव बचाण आले अर पापां की कालख तै दूर रह्ण आले, सुध सुभा आले साद्धु का पाछले जनमां का कट्ठा कर्या होया करमां का गंद उसे तरियां दूर होया करै, जिस तरियां आग मैं तपाएं पाछै सोन्ने अर चांदी की गंदगी दूर हो जाया करै।

64. पहलां बताए होए सद्गुणां आला, दुक्खां नैं समता तै सह्न करण आला, चंचल इंदरियां नैं जीत्तण आला, सुरुत ग्यान राखण आला, किसे भी तरियां की ममता ना राखण आला, परिग्रह के बोझ तै हलका, त्याग्गी, पूरा संजमी साद्धु करम के बाद्दल हटें पाछै उसे तरियां सुथरा दीख्या करै जिस तरियां सारे बाद्दलां के झुंड तै न्यारा होएं पाछै चंदरमा।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

॥ आचार प्रणिधि नाम का आट्ठवां पाठ समाप्त ॥

अह विणय समाही णाम णवमज्झयणं

मूल: थंभा व कोहा व मयप्पमाया,
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो,
फलं व कीअस्स वहाय होई॥1॥

छाया: स्तम्भाद्वा (मानाद्वा) क्रोधाद्वा मायाप्रमादात्,
गुरोः सकाशे विनशं न शिक्षेत।
स चैव तु तस्य अभूतिभावः,
फलमिव कीचकस्य वधाय भवति॥

मूल: जे आवि मंदत्ति गुरुं विइत्ता,
डहरे इमे अप्पसुअत्ति नच्चा।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा,
करंति आसायण ते गुरुणं॥2॥

छाया: ये चापि मन्द इति गुरु विदित्वा,
डहरो(अल्पवयाः)ऽयमल्पश्रुत इति ज्ञात्वा।
हीलयन्ति(अनाद्रियन्ते)मिथ्यात्वं प्रतिपद्यमानाः,
कुर्वन्ति आशातनां ते गुरुणाम्॥

मूल: पगईए मंदावि भवंति एगे,
डहरावि जे सुअबुद्धोववेआ।
आयारमंता गुणसुट्ठिअप्पा,
जे हीलिआ सिहिरिव भास कुज्जा॥3॥

छाया: प्रकृत्या मन्दा अपि भवन्ति एके,
डहरा अपि च ये श्रुत-बुद्ध्युपपेताः।
आचारवन्तो गुणस्थितात्मानः,
ये हीलिताः शिखीव भस्म कुर्यः॥

मूल: जे आवि नागं डहरंति नच्चा,
आसायए से अहिआय होइ।
एवायरियंपि हु हीलयंतो,
निअच्छइ जाइपहं खु मंदो॥4॥

नौवाँ पाठ : बिनय-समाधी : पहला भाग

1. गुरुआं के धोरै घमंड, गुस्से, नसे अर परमाद के कारण जो साद्धु बिनय धरम की सिक्सा नहीं लिया करदा तो उसकी घमंड बरगी बुराई ग्यान बरगी अच्छाइयां का उसे तरियां नास कर दिया करैं जिस तरियां बांस का फल बांस का ए नास करणिया होया करै।

2. जो साद्धु अपणे गुरुआं नैं मंदबुद्धी या थोड़े ग्यान आले, छोट्टे अर कम पढे होए सिमझ कै उनपै ध्यान नहीं दिया करदे अर उनके उपदेसां नैं झूठे मान्या करैं वे अपणे गुरुआं की असातना करण आले होया करैं।

3. कई अचार्यै घणी उमर आले होंदे होए भी सुभा तै मंदबुद्धी होया करैं अर कई छोट्टी उमर आले जुआन भी ग्यान्नी अर तेज बुद्धी आले होया करैं। इस कारण तै सदाचारी अर सद्गुणां आले गुरुआं की बात की अनदेक्खी नहीं करणी चहिए, बेस्सक वे ग्यान मैं थोड़े-घणे कीसे ए हों। इनकी अनदेक्खी सारे सद्गुणां नैं उसे तरियां भसम कर दिया करै जिस तरियां आग ईंधन के ढेर नैं।

4. यो सांप तो कत्ती छोट्टा सै, न्यूँ सोच कै कोए उसकी असातना करै तो ओ छोट्टा सांप भी बुरा करणिया होया करै। इसे तरियां उमर मैं छोट्टे अचार्यै की अनदेक्खी करण आला मंदबुद्धी साद्धु भी जनम-मरण करदा होया संसार मैं भटकदा रह्या करै।

छाया : यश्चापि नागं डहर इति ज्ञात्वा,
आशातयति तस्य अहिताय भवति।
एवमाचार्यमपि हीलयन्,
नियच्छति जातिपन्थानं खलु मन्दः।।

मूल : आसीविसो वावि परं सुरुट्ठो,
किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा।
आयरिअपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो।।5।।

छाया : आशीविषश्चाऽपि परं सुरुष्टः,
किं जीवितनाशात् परं नु कुर्यात्।
आचार्यपादाः पुनः अप्रसन्ना,
अबोधिमाशातनया नास्ति मोक्षः।।

मूल : जो पावगं जलिअमवक्कमिज्जा,
आसीविसं वावि हु कोवइज्जा।
जो वा विसं खायइ जीविअट्ठी,
एसोवमासायणया गुरुणं।।6।।

छाया : यः पावकं ज्वलितमपक्रामेत्,
आशीविषं वाऽपि खलु कोपयेत्।
यो वा विषं खादति जीवितार्थी,
एषा उपमा आशातनया गुरुणाम्।।

मूल : सिआ हु से पावय नो डहिज्जा,
आसीविसो वा कुवियो न भक्खे।
सिआ विसं हलाहलं न मारे,
न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए।।7।।

छाया : स्यात् खलु स पावकः न दहेत्,
आशीविषो वा कुपितो न भक्षयेत्।
स्यात् विषं हलाहलं न मारयेत्,
न चापि मोक्षो गुरुहीलनया।।

5. आसीबिस (कसूत्ते जहर आला) सांप भी गुस्सा हो ज्या तो जान लेण तै ज्यादा और के बुरा कर सकै सै? पर पूजनीय अचार्यै नराज हो ज्यां तो अग्यान के कारण बण्या करैं। इसलिए अचार्यै की असातना करण तै कदे भी मोक्स नहीं मिल सकदा।

6. जो साद्धु अचार्यै की असातना कर्या करै, ओ बलदी होई आग नैं लांग्घण के, जहरील्ले सांप कै गुस्सा ठाण के अर जीण की इच्छा तै जिब्बै ए मारण आला कसूत्ता जहर खाण के जिसा पागलपण कर्या करै।

7. हो सकै सै अक् भभकदी होई परचंड आग भी कदे भसम ना करै, छेड्या होया गुस्से मैं भर्या सांप भी ना डँसै अर खाया होया कसूत्ता जहर भी ना मारै पर न्यूँ नहीं हो सकदा अक् गुरु की असातना करण आले चेल्ले नैं मोक्स मिल ज्या।

मूल: जो पव्वयं सिरसा भित्तुमिच्छे,
सुत्तं वा सीहं पडिबोहइज्जा।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं,
एसोवमाऽऽसायणया गुरुणं॥8॥

छाया: यः पर्वतं शिरसा भेत्तुमिच्छेत्,
सुप्तं वा सिंहं प्रतिबोधयेत्।
यो वा ददीत शक्त्यग्रे प्रहारं,
एषा उपमा आशातनया गुरूणाम्॥

मूल: सिआ हु सीसेण गिरिं पि भिंदे,
सिआ हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिआ न भिंदिज्ज व सत्तिअग्गं,
न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए॥9॥

छाया: स्यात् खलु शिरसा गिरमपि भिन्द्यात्,
स्यात् सिंहः कुपितो न भक्षयेत्।
स्यात् न भिन्द्यात् वा शक्त्यग्रं,
न चापि मोक्षो गुरुहीलनया॥

मूल: आयरिअपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि आसायण नत्थि मोक्खो।
तम्हा अणाबाह सुहाभिकंखी,
गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा॥10॥

छाया: आचार्यपादाः पुनः अप्रसन्ना,
अबोधिमाशातनया नास्ति मोक्षः।
तस्मात् अनाबाधसुखाभिकांक्षी,
गुरुप्रसादाभिमुखोः रमेत॥

मूल: जहाहि-अग्गी जलणं नमंसे,
नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं।
एवायरिअं उवचिट्ठइज्जा,
अणंतनाणोवगओ वि संतो॥11॥

8. गुरुआं की असातना करणा इसा ए सै जिसा मजबूत पहाड़ नैं सिर की टक्कर मार कै फोड़णा, सोत्ते होए सेर नैं जगाणा अर भाल्ले की तेज धार पै अपणे हाथ नै मारण की इच्छा करणा।

9. हो सकै सै अक् कोए कदे सिर की टक्कर मार कै पहाड़ नैं भी फोड़ दे, गुस्से मैं भर्‌या सेर भी कदे ना मारै, भाल्ले की धार भी ना काट्टै पर न्यूँ नहीं हो सकदा अक् गुरु की असातना करण आले चेल्ले नैं मोक्स मिल ज्या।

10. पूजनीय अचार्‌यां नैं नराज करण आले माणस नैं ग्यान नहीं हो सकदा अर उसनैं मोक्स का सुख भी नहीं मिल सकदा। इस कारण तै मोक्स का सुख लेण की जिसके जी मैं हो, उस साद्‌धु का फरज सै अक् ओ अपणे गुरुआं की किरपा हासल करण की पूरी कोसिस करदा रह्‌वै।

11. जिस तरियां हवन करण आला बाह्‌मण घी-सहद वगैरा की घणी सारी आहूतियां अर मंतरां तै पुजी होई आग नैं नमस्कार कर्‌या करै, उसे तरियां चेल्ला अनंत ग्यान्नी होएं पाछै भी अचार्‌यै की बिनय तै सेवा-भगती करै।

छाया : यथा आहिताग्निः ज्वलनं नमस्यति,
नानाहुतिमन्त्रपदाभिषिक्तम्।
एवमाचार्यमुपतिष्ठेत्
अनन्तज्ञानोपगतोऽति सन्।।

मूल : जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे,
तस्संतिए वेणइयं पउंजे।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ,
कायग्गिरा भो मणसा अ निच्चं।।12।।

छाया : यस्यान्तिके धर्मपदानि शिक्षेत,
तस्यान्तिके वैनयिकं प्रयुञ्जीत।
सत्कारयेत् शिरसा प्राञ्जलिकः,
कायेन गिरा भो मनसा च नित्यम्।।

मूल : लज्जा दया संजम बंभचेरं,
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं।
जे मे गुरु सययमणुसासयंति,
तेहिं गुरु सययं पूअयामि।।13।।

छाया : लज्जा दया संयम ब्रह्मचर्यं,
कल्याणभाजः विशोधिस्थानम्।
ये मां गुरवः सततमनुशासयन्ति,
तान् अहं गुरुन् सततं पूजयामि।।

मूल : जहा निसंते तवणच्चिमाली,
पभासइ केवल भारहं तु।
एवायरिओ सुअसीलबुद्धिए,
विरायई सुरमज्झेव इंदो।।14।।

छाया : यथा निशान्ते तपन् अर्चिर्माली,
प्रभासयति केवल भारतं तु।
एवमाचार्यः श्रुत-शील-बुद्ध्या,
विराजते सुरमध्य इव इन्द्रः।।

12. (चेल्ला) उस गुरु की पूरी तरियां बिनय अर भगती करै जिस गुरु के धोरै आतमा का ग्यान देणिये धरम-सास्तरां के गहरे पदां की सिक्सा पाई हो। हाथ जोड़ कै, सिर झुका कै बंदना करै अर मन-वचन-काया के योग्गां तै हमेस्सां पूरी-पूरी इज्जत करै, यो चेल्ले का फरज सै।

13. कल्लाण करणिये साद्धु की खात्तर आतमा नैं सुध करण आली ये चार बड्डी चीज सैं- सरम, दया, संजम अर बर्हमचर्यै। चेल्ले नैं हमेस्सां या हे भौअना राखणी चहिए अक् जो गुरु मनैं सिक्सा देंदे रह्या करैं, मैं उन गुरुआं की लगातार पूजा करदा रहूँ।

14. जिस तरियां रात के बीत्तें पाछै चमकदा होया सूरज सारी धरती नैं अपणी किरणां तै उजली कर दिया करै, उसे तरियां अचार्यै भी ग्यान, सील अर बुद्धी की ताक्कत आले उपदेसां तै दुनिया नैं उजली कर दिया करैं। जिस तरियां द्योत्यां की सभा मैं बिराज्या होया इंदर चिमक्या करै, उसे तरियां साद्धुआं की सभा मैं गणी-अचार्यै चिमक्या करैं।

मूल: जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो,
नक्खत्ततारागण परिवुडप्पा।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के,
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे॥15॥

छाया: यथा शशी कौमुदीयोगयुक्त:,
नक्षत्रतारागणपरिवृतात्मा।
खे शोभते विमलेऽभ्रमुक्ते,
एवं गणी शोभते भिखुमध्ये॥

मूल: महागरा आयरिआ महेसी,
समाहिजोगेसुअसीलबुद्धिए।
संपाविउ कामे अणुत्तराइं,
आराहए तोसइ धममकामी॥16॥

छाया: महाकरा: आचार्या:महैषिण:,
समाधियोगेनश्रुतशीलबुद्ध्या।
सम्प्राप्तुकाम: अनुत्तराणि,
आराधयेत् तोषयेत् धर्मकामी॥

मूल: सुच्चाण मेहावी सुभासिआइं,
सुस्सूसए आयरिअप्पमत्तो।
आराहइत्ता ण गुणे अणेगे,
से पावई सिद्धिमणुत्तरं॥17॥
त्ति बेमि।

छाया: श्रुत्वा मेधावी सुभाषितानि,
शुश्रूषयेत् आचार्यान् अप्रमत्त:।
आराध्यणं गुणान् अनेकान् स:,
प्राप्नोति सिद्धिमनुत्तराम्॥
—इति ब्रवीमि।

॥ इति विणयसमाहिज्झयणे पढमो उद्देसो समत्तो॥

15. जिस तरियां नक्छत्रां अर तारां के झुण्ड मैं घिर्‌या होया चांद कात्तक की पूरणमास्सी की बिना बादलां आली रात नैं साफ-सुथरे अकास मैं चिमक्या करै, उसे तरियां साद्धुआं के झुण्ड मैं अचार्‌यै चिमक्या करैं।

16. सब तै ऊँच्चा ग्यान अर और गुणां के रतन पाण का जिनका जी करदा हो, इसे करम-निरजरा की इच्छा राखणिए साद्धुआं नैं चहिए अक् वे समाद्धी-योग, ग्यान, सील, बुद्धी के भंडार अर मोक्स की चाह्‌ना करणिए अचार्‌यै की अराधना करैं। उन्‌नैं हमेस्सां राजी राखैं।

17. श्याणा साद्धु ये आच्छे बोल सुण कै परमाद तै दूर रह्‌दा होया अचार्‌यै की सेवा करै। इस तरियां ओ घनखरे सद्‌गुणां की अराधना करदा होया सब तै ऊँच्ची सिद्धी की जंगा पहोंच जाया करै।

—न्यूँ मैं कहूँ सूँ !

॥ विनय समाधि नाम के नौवें पाठ का पहला भाग समाप्त ॥

अह णवमज्झयणं बीओ उद्देसो

मूल: मूलाउ खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाउपच्छा समुविंति साहा।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ से पुप्फं च फलं रसो अ॥1॥

छाया: मूलात् स्कन्धप्रभव: द्रुमस्य,
स्कन्धात् पश्चात् समुपयन्ति शाखा:।
शाखाभ्य: प्रशाखा: विरोहन्ति पत्राणि,
तत: तस्य पुष्पं च फलं रसश्च॥

मूल: एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो अ से मुक्खो।
जेण कित्तिं सुअं सिग्घं, नीसेसं चाभिगच्छइ॥2॥

छाया: एवं धर्मस्य विनयो मूलं, परमस्तस्य मोक्ष:।
येन कीर्तिं श्रुतं श्लाघ्यं, नि:शेषं चाधिगच्छति॥

मूल: जे अ चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे।
वुज्झइ से अविणीअप्पा, कट्ठं सोअगयं जहा॥3॥

छाया: यश्च चण्ड: मृग: स्तब्ध:, दुर्वादी निकृति (निकृतिमान्) शठ:।
उह्यतेऽसौ अविनीतात्मा, काष्ठं स्रोतोगतं यथा॥

मूल: विणयंपि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्वं सो सिरिमिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए॥4॥

छाया: विनये य उपायेन, चोदित: कुप्यति नर:।
दिव्यां स: श्रियम् आयन्तीं, दण्डेन प्रतिषेधयति॥

मूल: तहेव अविणीअप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिआ॥5॥

छाया: तथैव अविनीतात्मान:, औपवाह्या हया गजा:।
दृश्यन्ते दु:खमेधमाना:, आभियोग्यमुपस्थिता:॥

मूल: तहेव सुविणीअप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा॥6॥

छाया: तथैव सुविनीतात्मान:, औपवाह्या हया गजा:।
दृश्यन्ते सुखमेधमाना:, ऋद्धिं प्राप्ता: महायशस:॥

नौवाँ पाठ : बिनय-समाधी: दूसरा भाग

1. सब तै पहलां पेड़ की जड़ तै तणा पैदा होया करै। तणे पाछै डाल़ी, डाल़ियां तै टैहणी, टैहणियां तै पत्ते, पत्तां पाछै फूल अर फूल्लां के पाछै फल़ अर फेर नंबरवार फल़ां मैं रस पैदा होया करै।

2. उसे तरियां धरम के पेड की जड़ सै बिनय अर आखरी फल़ सै मोक्स। कारण यो अक् बिनय तै ए चारूं ओड नाम, इज्जत अर मिसाल बणन आल़े ग्यान बरगी चाह्ना आल़ी चीज पूरी तरियां हासल करी जाया करैं।

3. जो गुस्सैल, अग्यानी, अकड़बाज, कड़ुआ बोल्लणिए, छल़-कपट करणिए अर असंजमी सैं, वे बिनयहीन माणस पाणी के भ्हाव मैं पड़े काठ की तरियां संसार के समुंदर मैं बहते रह्या करैं।

4. गुरु जिब बिनय धरम की परेरणा दें तो जो माणस उनपै गुस्सा करै, ओ बावल़ा अपणे धोरै आंदी होई द्यौतां की लछमी नैं डंडे तै रोक्या करै।

5. सुआरी मैं जुत्तण जोगे हात्थी-घोड़े वगैरा जिनौअर भी बिनयहीन होण के कारण दुक्ख पांदे साक्छात देक्खे जाया करैं।

6. सुआरी मैं जुत्तण जोगे वे ए हात्थी-घोड़े बिनयवान होण के कारण संपदा, इज्जत अर नाम पा कै सुखी होंदे देक्खे जाया करैं।

मूल: तहेव अविणीअप्पा, लोगंसि नरनारिओ।
दीसंति दुहमेहंता, छाया ते विगलिंदिआ।।7।।

छाया: तथैव अविनीतात्मानः, लोके नरनार्यः।
दृश्यन्ते दुःखमेधमानाः, छाताः ते विकलेन्द्रियाः।।

मूल: दंडसत्थपरिज्जुन्ना, असब्भवयणेहि अ।
कलुणा विवन्नछंदा, खुप्पिवासाइपरिग्गया।।8।।

छाया: दण्डशस्त्रपरिजीर्णाः, असभ्यवचनैश्च।
करुणाः व्यापन्नच्छन्दसः, क्षुत्पिपासापरिगताः।।

मूल: तहेव सुविणीअप्पा, लोगंसि नरनारिओ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिपत्ता महायसा।।9।।

छाया: तथैव सुविनीतात्मानः, लोके नरनार्यः।
दृश्यन्ते सुखमेधमानाः, ऋद्धिं प्राप्ताः महायशसः।।

मूल: तहेव अविणीअप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिआ।।10।।

छाया: तथैव अविनीतात्मानः, देवाः यक्षाश्च गुह्यकाः।
दृश्यन्ते दुःखमेधमानाः, आभियोग्यमुपस्थिताः।।

मूल: तहेव सुविणीअप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिपत्ता महायसा।।11।।

छाया: तथैव सुविनीतात्मानः, देवाः यक्षाश्च गुह्यकाः।
दृश्यन्ते सुखमेधमानाः, ऋद्धिं प्राप्ताः महायशसः।।

मूल: जे आयरिअ उवज्झायाणं, सुस्सूसावयणं करे।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति, जलसित्ता इव पायवा।।12।।

छाया: ये आचार्योपाध्यायानाम्, शुश्रूषावचनकराः।
तेषां शिक्षाः प्रवर्द्धन्ते, जलसिक्ता इव पादपाः।।

मूल: अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा णेउणिआणि अ।
गिहिणो उवभोगट्ठा, इह लोगस्स कारणा।।13।।

छाया: आत्मार्थं वा परार्थं वा, शिल्पानि नैपुण्यानि च।
गृहिण उपभोगार्थं, इह लोकस्य कारणात्।।

मूल: जेण बंधं बहं घोरं, परिआवं च दारुणं।
सिक्खमाणा निअच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिआ।।14।।

7. दुनिया मैं जो मरद अर बीर बिनयहीन होया करैं, वे तरां-तरां के कष्ट भोग्या करैं। वे घायल, कमजोर अर बेचैन इंदरियां आले बण कै दुक्ख पांदे दीख्या करैं।

8. वे हथियारां तै सजा पा कै कमजोर सरीर आले, सारे कै बुरे बोल सुण कै बेसती कराण आले, दया के पात्तर, गुलामी की जिंदगी बिताण आले अर भूख-प्यास की बेदना मुसकिल तै बरदास करदे होए दीख्या करैं।

9. दुनिया मैं जो मरद अर बीर बिनयवान होया करैं, वे संपदा पा कै नाम अर इज्जत आला सुख भोगदे दीख्या करैं।

10. इसे तरियां जो द्यौता, यक्स अर भवनवासी द्यौता बिनयहीन होया करैं वे भी लगातार दुक्ख भोगदे अर गुलामी के छोट्टे काम करदे होए दीख्या करैं।

11. इसतै उलट बिनयवान द्यौता, यक्स अर भवनवासी द्यौता ऊँच्ची संपदा पा कै बडे नाम अर इज्जत आला सुख भोगदे दीख्या करैं।

12. जो साद्धु अचार्यां अर उपाध्यायां की सेवा-भगती करण आले, उनकी अग्या मैं चालण आले होया करैं, उनका ग्यान उन पेड्डां की तरियां लगातार बढदा ए जाया करै, जिनकी आच्छी तरियां सिंचाई होंदी हो।

13-14. जो गिरस्थी सरीर के सुख-भोग्गां की खात्तर, अपणी रोजी-रोटी चलाण की खात्तर या दूसरां की भलाई करण खात्तर सिल्प वगैरा कलायां मैं माहिर होणा चाह्वैं सैं, वे नाज्जुक सरीर आले होएं पाछै भी सीक्खण के बखत मैं बंधण, डांट-फटकार अर करड़ी मेहनत के कसूत्ते अर भूंडे कष्ट सैहन कर्‌या करैं।

छाया: येन बन्धं वधं घोरं, परितापं च दारुणम्।
शिक्षमाणा नियच्छन्ति, युक्तास्ते ललितेन्द्रिया:।।

मूल: तेऽवि तं गुरुं पूअंति, तस्स सिप्पस्स कारणा।
सक्कारंति नमंसंति, तुट्ठा निद्देसवत्तिणो।।15।।

छाया: तेऽपि तं गुरुं पूजयन्ति, तस्य शिल्पस्य कारणात्।
सत्कारयन्ति नमस्यन्ति, तुष्टा: निर्देशवर्तिन:।।

मूल: किं पुणं जे सुअग्गाही, अणंतहिअकामए।
आयरिआ जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए।।16।।

छाया: किं पुनर्य: श्रुतग्राही, अनन्तहितकामक:।
आचार्या: यद् वदेयु: भिक्षु:, तस्मात् तन्नातिवर्तयेत्।।

मूल: नीअं सिज्जं गइं ठाणं, नीअं च आसणाणि अ।
नीअं च पाए वंदिज्जा, नीअं कुज्जा अ अंजलिं।।17।।

छाया: नीचां शय्यां गतिं स्थानं, नीचानि च आसनानि च।
नीचं च पादौ वन्देत, नीचं कुर्यात् च अञ्जलिम्।।

मूल: संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणामवि।
खमेह अवराहं मे, वइज्ज न पुणुत्ति अ।।18।।

छाया: संघट्य (स्पृष्ट्वा) कायेन, तथोपधिनापि।
क्षमस्व अपराधं मे, वदेत् न पुन: इति च।।

मूल: दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहइ रहं।
एवं दुबुद्धि किच्चाणं, वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ।।19।।

छाया: दुर्गो: वा प्रतोदेन, चोदितो वहति रथम्।
एवं दुर्बुद्धि: कृत्यानां, उक्त: उक्त: प्रकरोति।।

मूल: आलवंते वा लवंते वा, न निसिज्जाए पडिस्सुणे।
मुत्तूण आसणं धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे।।20।।

आलपति वा लपति वा, न निषद्यया प्रतिशृणुयात्।
मुक्त्वा आसनं धीर:, शुश्रूषया प्रतिशृणुयात्।।

15. वे फटकारें पाछै भी नरमाई तै उस सिल्प की सिक्सा लेण की मारी सिल्पाचार्यै नैं पूज्या करै, उनकी इज्जत कर्या करैं, उन्नैं नमस्कार कर्या करैं अर उनकी अग्या मैं चाल्या करैं।

16. जिब इस संसार की बिद्या चाह्ण आलै ए न्यूँ कर्या करैं तो धरम-सास्तरां का ग्यान सीक्खण आलां अर आतमा के अनंत कल्लाण की चाह्ना राखण आलां की तो कुहा ए के हो सै। उन्नैं तो खासकर कै धरम के अचार्यै की अग्या मोड़णी ए नहीं चहिए।

17. चेल्ले का फरज सै अक् ओ अपणा बिछौणा, हलचल, जंगा अर आसन वगैरा सब किम् गुरु तै नीचा ए राखै। बिनय करदा होया नीचै झुक कै हाथ जोड़ै। गुरुआं के चरणां मैं माथा झुका कै ठीक तरीक्के तै बंदना करै।

18. जै कदे गलती तै अपणे साद्धन या सरीर अचार्यै के सरीर तै लाग भी ज्या तो उसे बखत चेल्ला नरमाई तै कह्वै—आप मेरा यो कसूर माफ करो, फेर कदे यो काम कोन्यां करूं।

19. जिस तरियां दुष्ट बैल छड़ी वगैरा तै बार-बार हांके पाछै ए रथ नैं खींच्या करै, ठीक उसै तरियां बेअकला चेल्ला भी अचार्यै के बार-बार कहें पाछै ए उनका काम कर्या करै।

20. गुरुदेव एक बर या बार-बार बुलावैं तो अकलमंद चेल्ला अपणे आसन पै तै ए अग्या सुण कै जुआब ना देवै। ओ आसन छोड कै बिनय की भौअना राखदा होया गुरु की अग्या सुणै अर फेर उसके हिसाब तै ठीक-ठीक जुआब देवै।

मूल: कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं।
तेण तेण उवाएणं, तं तं संपडिवायए॥21॥

छाया: कालं छन्दोपचारं च, प्रतिलेख्य हेतुभिः।
तेन तेन उपायेन, तत् तत् सम्प्रतिपादयेत्॥

मूल: विवत्ती अविणीअस्स, संपत्ती विणिअस्स अ।
जस्सेय दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छइ॥22॥

छाया: विपत्तिरविनीतस्य, सम्पत्तिर्विनीतस्य च।
यस्यैतत् उभयतो ज्ञातं, शिक्षां सोऽभिगच्छति॥

मूल: जे आवि चंडे मइइड्ढिगारवे,
पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए,
असंविभागी न हु तस्स मुक्खो॥23॥

छाया: यश्चाऽपि चण्डः मतिऋद्धिगौरवः,
पिशुनो नरः साहसिकः हीनप्रेषणः।
अदृष्टधर्मा विनयेऽकोविदः,
असंविभागी न खलु तस्य मोक्षः॥

मूल: निद्देसवित्ती पुण जे गुरुणं, सुअत्थधम्मा विणयंमि कोविआ।
तरित्तु ते ओघमिणं दुरुत्तरं, खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया॥24॥
–त्ति बेमि।

छाया: निर्द्देशवर्तिनः पुनः ये गुरुणां,
श्रुतार्थधर्माणः विनयेकोविदाः।
तीर्त्वा ते औघमेनं दुस्तरं,
क्षपयित्वा कर्म गतिमुत्तमां गताः॥
–इति ब्रवीमि।

॥ इति विणयसमाहिणामज्झयणे बीओ उद्देसो समत्तो ॥

21. चेल्ले का फरज सै अक् ओ हर चीज, जंगा, बखत अर भौअना नैं तरां-तरां के तरीक्कां तै परखै। ओ गुरुआं के मन की गह्री बात नैं जाणै। उसके हिसाब तै सेवा-भगती करण के ठीक-ठीक साधनां अर तरीक्कां नैं आच्छी तरियां जाण कै उस बात नैं पूरी करै।

22. बिनयहीन माणस के गुण खतम हो जाया करैं अर बिनयवान् माणस के गुण बढदे जाया करैं। बिनयहीन नैं बिपदा मिल्या करै अर बिनयवान् नैं संपदा। ये दोनूं बात जिसनैं पता सैं, ओ सुख तै सिक्सा पाया करै।

23. जो माणस गुस्सैल, अपणी बुद्धी अर संपदा का घमंड करण आला, चुगलखोर अर बुरे कामां मैं हिम्मत दिखाण आला हो; जो अग्या की अनदेक्खी करण आला, धरम नैं ना जाणन आला, बिनय तै अनजाण अर बरोबर बांट कै ना खाण आला होया करै, ओ कदे भी मोक्स नहीं पा सकदा।

24. जो गुरु की अग्या मैं रह्या करैं, सास्तरां की गहरी बात सिमझ्या करैं अर बिनय के रस्ते के आच्छे जाणकार होया करैं, वे हे इस मुसकल संसार के समुंदर नैं पार कर कै, करमां का नास कर कै सब तै ऊँच्ची जंगा- मोक्स मैं जाया करैं।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

॥ बिनय समाधि नाम के नौवें पाठ का दूसरा भाग समाप्त ॥

अह णवमज्झयणं तइओ उद्देसो

मूल: **आयरिअं अग्गिमिवाहि अग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा।**
आलोइअं इंगिअमेव नच्चा, जो छंदमाराहयई स पुज्जो।।1।।
छाया: आचार्यमग्निमिव आहिताग्निः, शुश्रूषमाणः प्रतिजागृयात्।
आलोकितमिंगितमेव ज्ञात्वा, यः छन्दः आराधयति सः पूज्यः।।

मूल: **आयारमट्ठा विणयं पउंजे, सुस्सूसमाणो पडिगिज्झ वक्कं।**
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो, गुरुं तु नासाययई स पुज्जो।।2।।
छाया: आचारार्थं विनयं प्रयुञ्जीत, शुश्रूषमाणः परिगृह्य वाक्यम्।
यथोपदिष्टमभिकाङ्क्षन् (अभिकाङ्क्षमाणः),
गुरुन्तु नाशातयति सः पूज्यः।।

मूल: **रायणिएसु विणयं पउंजे, डहरावि अ जे परिआयजिट्ठा।**
नीअत्तणे वट्टइ सच्चवाई, उवायवं वक्ककरे स पुज्जो।।3।।
छाया: रात्निकेषु विनयं प्रयुञ्जीत, डहरा अपिच ये पर्यायज्येष्ठाः।
नीचत्वे वर्तते सत्यवादी, अवपातवान् वाक्यकरः सः पूज्यः।।

मूल: **अन्नायउंछं चरइ विसुद्धं, जवणट्ठया समुआणं च निच्चं।**
अलद्धुअं न परिदेवइज्जा, लद्धु न विकत्थइ स पुज्जो।।4।।
छाया: अज्ञातोंच्छं चरति विशुद्धं, यापनार्थं समुदानं च नित्यम्।
अलब्ध्वा न परिदेवयेत्, लब्ध्वा न विकत्थते सः पूज्यः।।

मूल: **संथारसिज्जासणभत्तपाणे, अप्पिच्छया अइलाभे वि संते।**
जो एवमप्पाणभितोसइज्जा, संतोसपाहन्नरए स पुज्जो।।5।।
छाया: संस्तारक शय्यासनभक्तपाने, अल्पेच्छता अतिलाभे सत्यपि।
य एवमात्मानमभितोषयेत्, सन्तोषप्राधान्यरतः सः पूज्यः।।

मूल: **सक्का सहेउं आसाइ कंटया, अयोमया उच्छहया नरेणं।**
अणासए जोउ सहिज्ज कंटए, वईमए कन्नसरे स पुज्जो।।6।।

नौवाँ पाठ : बिनय-समाधीः तीसरा भाग

1. जिस तरियां यग्य करण आला बाह्मण आग की सेवा-पूजा करण मैं लगातार चौकस रह्या करै, उसे तरियां ग्यान्नी चेल्ला अचार्यै की सेवा-भगती करण मैं चौकस रह्वै। कारण यो अक् जो अचार्यै की निगहा, मन की भौअना अर इसारां नैं सिमझ कै उनके हिसाब तै चल्या करै, ओ ए इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गा बण्या करै।

2. जो चारित्तर पाण के लिए बिनय बरत्या करैं, जो गुरु के बचन इज्जत तै सुण कै अर मान कै उनका काम पूरा कर्या करैं अर जो गुरु की असातना नहीं कर्या करदे, वैं ए इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गे बण्या करैं।

3. अपणे तै गुणां मैं आच्छे अर थोड़ी उमर के होएं पाछे भी दीक्सा मैं बड्डे साद्धुआं की बिनय-भगती करण आला, हमेस्सां नरमाई बरतण आला, सच बोलण आला, अचार्यां के धोरै रह्ण आला अर उनकी अग्या पालण आला ए इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गा बण्या करै।

4. जो संजम पालण मैं गुजारा करण खात्तर सुद्ध, घणे अर अनजाण घरां तै अपणा परिचै दिए बिना थोड़ा-थोड़ा कट्ठा कर्या होया भोजन-पाणी ए लिया करैं अर जो भिक्सा ना मिलण तै दुक्खी कोन्यां होंदे अर मिलण तै घमंड या तारीफ कोन्यां कर्या करदे, वैं ए साद्धु इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गे बण्या करैं।

5. जो बिछौणा, आस्सन, भोजन-पाणी वगैरा भतेरे मिलें पाछै भी थोड़े की चाह्ना राख्या करैं, हमेस्सां संतोस तै भरे रह्या करैं अर अपणी आतमा नैं हर तरियां राजी राख्या करैं, वैं ए साद्धु इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गे बण्या करैं।

6. कोए माणस धन-माया की चाह्ना तै तो लोहे के तीक्खे कांडे सह्न कर सकै सै पर जो साद्धु बिना किसे चाह्ना के लोभ-लालच छोड कै कड्डुए

छाया : शक्याः सोढुमाशया कण्टकाः, अयोमया उत्सहमानेन नरेण।
अनाशया यस्तु सहेत कण्टकान्, वाङ्मयान् कर्णशरान् सः पूज्यः।।

मूल : मुहुत्तदुक्खा उ हवंति कंटया, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा।
वाया दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि।।7।।

छाया : मुहूर्तदुःखास्तु भवन्ति कण्टकाः, अयोमयास्तेऽपि ततः सूद्धराः।
वाचा दुरुक्तानि दुरुद्धराणि, वैरानुबन्धीनि महाभयानि।।

मूल : समावयंता वयणाभिघाया, कन्नंगया दुम्मणिअं जणंति।
धम्मुत्ति किच्चा परमग्गसूरे, जिइंदिए जो सहई स पुज्जो।।8।।

छाया : समापतन्तो वचनाभिघाताः, कर्णंगता दौर्मनस्यं जनयन्ति।
धर्म इति कृत्वा परमाग्रशूरः, जितेन्द्रियो यः सहते सः पूज्यः।।

मूल : अवन्नवायं च परम्मुहस्स,
पच्चक्खओ पडिणीअं च भासं।
ओहारिणिं अप्पिअकारिणिं च,
भासं न भासिज्ज सया स पुज्जो।।9।।

छाया : अवर्णवादं च पराङ्मुखस्य, प्रत्यक्षतः प्रत्यनीकां च भाषाम्।
अवधारिणीं अप्रियकारिणीं च, भाषां न भाषेत सदा सः पूज्यः।।

मूल : अलोलुए अक्कुहए अमाई,
अपिसुणे आवि अदीणवित्ती।
नो भावए नो विज भाविअप्पा,
अकोउहल्ले अ सया स पुज्जो।।10।।

छाया : अलोलुपः अकुहकः अमायी, अपिशुनश्चापि अदीनवृत्तिः।
नो भावयेत् नाऽपि च भावितात्मा, अकौतुकश्च सदा सः पूज्यः।।

मूल : गुणेहिं साहू अगुणेहिंऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुंचऽसाहू।
विआणिआ अप्पगमप्पएणं, जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो।।11।।

छाया : गुणैः साधुरगुणैरसाधुः, गृहाण साधुगुणान् मुञ्ज असाधून्।
विज्ञाय आत्मानमात्मना, यो राग-द्वेषयोः समः सः पूज्यः।।

बोल्लां के कांडे सह्न कर्‌या करै, ओ ए संसार मैं इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गा बण्या करै।

7. सरीर मैं गडे होए लोहे के कांडे तो थोड़े बखत ताईं दुक्ख देणिये होया करैं अर वे सरीर मैं कै अराम तै काड्ढे भी जा सकैं सैं पर कठोर अर बुरे बोल्लां के कांडे तो मुस्कल तै लिकड़्या करैं। वे बैर-भौअना बढाण आले अर घणे भयान्नक होया करैं।

8. श्याह्मीं तै होण आली कड़ुए बोल्लां की मार कान्नां तै मन मैं पहोंच कै बुरी भौअना पैदा कर दिया करैं। बहादरी मैं आग्गै रह्ण आले, इंदरियां नैं जीत्तण आले माणस इस मार नैं न्यूं सोच कै सांती तै बरदास कर लिया करैं अक् यो मेरा धरम सै, वैं ए संसार मैं इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गे बण्या करैं।

9. जो माणस किसे के पाछे तै उसकी बुराई या चुगली नहीं कर्‌या करदे अर श्याह्मीं दुक्ख-देणिए बोल नहीं कह्या करदे, जो पक्कमूपक्का अर भूंडे लागण आले बोल भी नहीं कह्या करदे, वैं ए संसार मैं इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गे बण्या करैं।

10. जो सुआद बरगे इंदरिय-बिसयां की लालसा नहीं राख्या करदे, टोणे-टामण, छल-कपट, चुगली अर हीणे बणकै रह्ण बरगे दोसां तै दूर रह्या करैं, दूसरां तै अपणी तारीफ नहीं करांदे, आप अपणी बडाई दूसरां के श्याह्मीं कोन्यां कर्‌या करदे अर खेल-तमास्सां तै दूर रह्या करैं, वैं ए इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गे बण्या करैं।

11. गुणां तै भर्‌या होण तै ए कोए साद्धु होया करै अर बुराइयां तै भर्‌या होण तै ए नहीं होया करदा। इस कारण साद्धु गुणां नैं तो ले लेवै अर बुराइयां नैं छोड दे। आतमा नैं आतमा तै पिछाण कै प्रेम अर बैर भौअना मैं समता राक्खण आला गुणवान् साद्धु ए इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गा बण्या करै।

मूल: तहेव डहरं च महल्लगं वा,
इत्थिं पुमं पव्वइअं गिहिं वा।
नो हीलए नो विअ खिंसइज्जा,
थंभं च कोहं च चए स पुज्जो॥12॥

छाया: तथैव डहरं च महल्लकं वा,
स्त्रियं पुमांसं प्रव्रजितं गृहिणं वा।
न हीलयेत् नापि च खिंसयेत्,
स्तम्भं च क्रोधं च त्यजेत् सः पूज्यः॥

मूल: जे माणिआ सययं माणयंति, जत्तेण कन्नं व निवेसयंति।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो॥13॥

छाया: ये मानिताः सततं मानयन्ति, यत्नेन कन्यामिव निवेशयन्ति।
तान् मानयेत् मानार्हान् तपस्वी, जितेन्द्रियः सत्यरतः सः पूज्यः॥

मूल: तेसिं गुरुणं गुणसायराणं, सुच्चा ण मेहावि सुभासिआइं
चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो, चउक्कसायावगए स पुज्जो॥14॥

छाया: तेषां गुरुणां गुणसागराणां, श्रुत्वा मेधावी सुभाषितानि।
चरति मुनिः पञ्चरतः त्रिगुप्तः, चतुःकषायापगतः सः पूज्यः॥

मूल: गुरुमिह सययं पडिअरिअ मुणी,
जिणमयनिउणे अभिगमकुसले।
धुणिअ रयमलं पुरेकडं,
भासुरामउलं गइं वइ॥15॥
–त्ति बेमि।

छाया: गुरुमिह सततं परिचर्य मुनिः,
जिनमतनिपुणः अभिगमकुशलः।
धूत्वा रजोमलं पुराकृतं,
भास्वरामतुलां गतिं व्रजति॥
–इति ब्रवीमि।

॥ इति विणयसमाहिए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

12. जो बालक, बजुर्ग, बीर, मरद, साद्धु अर गिरस्थी वगैरा की बेसती अर बुराई नहीं कर्या करदा अर गुस्से, घमंड के दोसां का त्याग कर्या करै, ओ इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गा सै।

13. जो चेल्ले अचार्यै की तरक्की, बिनय वगैरा तै लगातार इज्जत कर्या करैं, वे आप भी अचार्यै के ग्यान देण तै उसे तरियां इज्जत कमाया करैं जिस तरियां बाप अपणी बेट्टी नैं आच्छे खानदान मैं कोसस करकै जमा दिया करै। इस कारण जो सच बोलणिए, इंदरियां नैं जीत्तणिए अर तपस्सी साद्धु ईसे इज्जत करण जोग्गे अचार्यै की इज्जत कर्या करैं, वे इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गे सैं।

14. जो हुष्यार, गुणां के सागर गुरुआं के आच्छे बोल सुण कै उनके हिसाब तै ए चल्या करैं, पांच महाबरत पाल्या करैं, तीन गुपती राखणिए अर गुस्से-घमंड जिसे कसायां तै दूर रह्या करैं, वे इज्जत अर सेवा-भगती कराण जोग्गे होया करैं।

15. भगवान के बताए होए ग्यान नैं पूरी तरियां जाणन आला अर मेहमान साद्धुआं की सेवा-भगती करण मैं माहिर साद्धु इस दुनिया मैं गुरु की लगातार सेवा करकै पहलां कट्ठे करे होए करमां के मैल नैं झटक दिया करै अर ग्यान के परकास तै भरी होई सब तै न्यारी सिद्धी पा लिया करै।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ!

॥ बिनय समाधि नाम के नौवें पाठ का तीसरा भाग समाप्त ॥

अह णवमज्झयणं चउत्थो उद्देसो

मूल: **सुअं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिठाणा पन्नत्ता।।1।।**

छाया : श्रुतं मया आयुष्मन्! तेन भगवता एवमाख्यातम्, इह खलु स्थविरैः भगवद्भिः चत्वारि विनय समाधिस्थानानि प्रज्ञप्तानि।।

मूल: **कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं**
चत्तारि विणयसमाहिठाणा पन्नत्ता?।
इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं
चत्तारि विणयसमाहिठाणा पन्नत्ता।।2।।

छाया : कतराणि खलु तानि स्थविरैः भगवद्भिः चत्वारि विनयसमाधिस्थानानि प्रज्ञप्तानि?।।
इमानि खलु तानि स्थविरैः भगवद्भिः चत्वारि विनयसमाधिस्थानानि प्रज्ञप्तानि!

मूल: **तंजहा–(1) विणयसमाहि (2) सुअसमाहि (3) तवसमाहि (4) आयारसमाहि।।3।।**

छाया : तद्यथा–(1) विनय समाधिः (2) श्रुतसमाधिः (3) तपः समाधिः (4) आचारसमाधिः।।

श्लोकः **विणए सुए अ तवे, आयारे निच्च पंडिआ।**
अभिरामयंति अप्पाणं, जे भवंति जिइंदिया।।1।।

छाया : विनये श्रुते च तपसि, आचारे नित्यं पण्डिताः।
अभिरामयन्ति आत्मानं, ये भवन्ति जितेन्द्रियाः।।

मूलः **चउव्विहा खलु विणयसमाहि; तंजहा–(1) अणुसा-सिज्जंतो सुस्सूसइ (2) सम्मं संपडिवज्जइ (3) वेयमाराहइ (4) न य भवइ अत्तसंपग्गहिए–चउत्थं पयं भवइ।।4।।**

छाया : चतुर्विधः खलु विनय समाधिर्भवतिः, तद्यथा–(1) अनुशास्यमानः शुश्रूषते (2) सम्यक् सम्प्रतिपद्यते (3) वेदमाराधयति (4) न च भवति आत्म-सम्प्रगृहीतः, चतुर्थं पदं भवति।।5।।

नौवाँ पाठ : बिनय-समाधीः चौत्था भाग

1. हे आयुस्मान! मनैं सुण्या सै अक् इस निर्ग्रंथ परबचन मैं बड्डे साद्धु भगवान्नां नैं भगवान के कहे होए बिनय समाधी के चार रूप आच्छी तरियां बताए सैं।

2. (चेल्ले का सुआल) हे भगवन्! बड्डे साद्धु भगवान्नां के आच्छी तरियां बताए होए बिनय-समाधी के वे चार रूप कुण से सैं?

3. बड्डे साद्धु भगवान्नां के आच्छी तरियां बताए होए बिनय-समाधी के वे चार रूप इस तरियां सैं- (1) बिनय समाधी, (2) सुरुत समाधी, (3) तप समाधी अर (4) आचार समाधी।

(1) इंदरियां नैं जीत्तणिए जो साद्धु बिनय समाधी, सुरुत समाधी, तप समाधी अर आचार समाधी मैं अपणी आतमा नैं पूरी तरियां खो दिया करैं, वैं ए असल मैं ग्यान्नी सैं।

4. बिनय समाधी के चार रूप ये सैं-(1) गुरु के अनुसासन मैं रह्या होया, गुरु के आच्छे बोल सुणन की चाह्ना राखणिया, (2) गुरु के बोलां नैं धरम के हिसाब तै मान्नणिया, (3) सास्तरां के ग्यान की पूरी तरियां साधना करणिया, अर (4) घमंड तै अपणी तारीफ आप ना करणिया। यो चौत्था रूप सै। इसकी बाबत एक और स्लोक सै।

श्लोकः भवइ अ इत्थ सिलोगो–

पेहेइ हिआणुसासणं, सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठिए।
न य माणमएण मज्जई, विणयसमाहि आययट्ठिए॥2॥

छाया : भवति च अत्र श्लोकः–
प्रार्थयते (प्रेक्षते) हितानुशासनं, शुश्रूषते तच्च पुरधितिष्ठति।
न च मान-मदेन माद्यति, विनयसमाधौ आयतार्थिकः॥

मूलः **चउव्विहा खलु सुअसमाहि भवइ; तंजहा–(1) सुअं मे भविस्सइत्ति अज्झाइअव्वं भवइ (2) एगग्गचित्तो भविस्सामित्ति अज्झाइअव्वं भवइ (3) अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ (4) ठिओ परंठावइस्सामि त्ति अज्झाइ अव्वं भवइ–चउत्थं पयं भवइ॥5॥**

छाया : चतुर्विधः खलु श्रुतसमाधिर्भवति, तद्यथा–(1) श्रुतं मे भविष्यतीति अध्येतव्यं भवति (2) एकाग्रचित्तो भविष्यामीति अध्येतव्यं भवति (3) आत्मानं स्थापयिष्यामीति अध्येतव्यं भवति (4) स्थितः परं स्थापयिष्यामीति अध्येतव्यं भवति–चतुर्थं पदं भवति॥

श्लोकः भवइ अ इत्थ सिलोगो–

नाणमेगग्गचित्तो अ, ठिओ अ ठावयई परं।
सुआणि अ अहिज्झित्ता, रओ सुअसमाहिए॥3॥

छाया : भवति चात्र श्लोकः–
ज्ञानमेकाग्रचित्तश्च, स्थितश्च स्थापयति परम्।
श्रुतानि च अधीत्य, रतः श्रुतसमाधौ॥

मूलः **चउव्विहा खलु तवसमाहि भवइ; तंजहा–(1) नो इह लोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा (2) नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा (3) नो कित्तिवन्नसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा (4) नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा–चउत्थं पयं भवइ॥6॥**

छाया : चतुर्विधः खलु तपःसमाधिर्भवतिः तद्यथा–(1) न इह लोकार्थं तपोऽधितिष्ठेत् (2) न परलोकार्थं तपोऽधितिष्ठेत् (3) न कीर्ति-वर्णशब्द श्लोकार्थं तपोऽधितिष्ठेत् (4) नान्यत्र निर्जरार्थं तपोऽधि-तिष्ठेत्–चतुर्थं पदं भवति॥

(2) जो साद्धु, गुरुआं तै भला करणिये अनुसासन की सीख सुणन की चाह्ना राख्या करै, सुण कै उसनैं साची-साची सिमझ्या करै, सुणन अर सिमझण के हिसाब तै ए चाल्या करै, चालदा होया यो घमंड भी कोन्यां कर्‌या करदा अक् मैं बिनय समाधी का माहिर सूँ, ओ ए आतमा नैं जीण आला होया करै।

5. सुरुत समाधी के चार रूप ये सैं- (1) मनैं सास्तरां का ग्यान मिल्लैगा, इस कारण तै पढाई करणी चहिए; (2) मेरा ध्यान एक्कै जंगा जम ज्यागा, इस कारण तै पढाई करणी चहिए; (3) मैं अपणी आतमा नैं धरम मैं जमा सकूँगा, इस कारण तै सास्तर पढणा चहिए; अर (4) मैं आप धरम मैं जम कै दूस्सरे भव्य जीवां नैं भी धरम मैं जमा सकूँगा, इस कारण तै मनै सास्तरां की पढाई करणी चहिए। यो चौत्था रूप सै। इसकी बाबत एक और स्लोक सै।

(3) सास्तर पढ कै ग्यान बढ्या करै, ध्यान एक्कै जंगा जम्या करै अर माणस आप धरम मैं जम्या करै अर दूसरां नैं भी जमाया करै। ईसा साद्धु कई तरियां के सास्तर पढ कै सुरुत समाधी नैं जीण आला होया करै।

6. तप समाधी के चार रूप ये सैं- (1) साद्धु नैं इस संसार के सुख पाण की खात्तर तप नहीं करणा चहिए; (2) सुरग वगैरा मैं मिल्लण आले सुख पाण की खात्तर तप नहीं करणा चहिए; (3) नाम कमाण अर अपणी तारीफ कराण की खात्तर तप नहीं करणा चहिए; (4) बस पहलां कट्ठे करे होए करम झाड़ण नैं छोड कै और किसे भी मकसद तै तप नहीं करणा चहिए। यो चौत्था रूप सै। इसकी बाबत एक और स्लोक सै।

श्लोकः भवइ अ इत्थ सिलोगो–
विविहगुणतवोरए, निच्चं भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए।।4।।

छाया : भवति चात्र श्लोकः–
विविधगुणतपोरतः, नित्यं भवति निराशः निर्जरार्थिकः।
तपसा धुनोति पुराणपापं, युक्तः सदा तपः समाधौ।।

मूलः चउव्विहा खलु आयारसमाहि भवइ; तंजहा–(1) नो इह लोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा (2) नो पर लोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा (3) नो कित्ति वन्नसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा (4) नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठिज्जा–चउत्थं पयं भवइ।।7।।

छाया : चतुर्विधः खलु आचारसमाधिर्भवतिः, तद्यथा–(1) नेह लोकार्थमाचारमधितिष्ठेत् (2) न परलोकार्थमाचारमधितिष्ठेत् (3) न कीर्तिवर्णशब्दश्लोकार्थमाचारमधितिष्ठेत् (4) नान्यत्र आर्हतैर्हेतुभिराचारमधितिष्ठेत्–चतुर्थं पदं भवति।।

श्लोकः भवइ अ इत्थ सिलोगो–
जिणवयणरए अतिंतिणे, पडिपुन्नायइमाययट्ठिए।
आयारसमाहिसंवुडे, भवइ अ दंते भावसंधए।।5।।

छाया : भवति चात्र श्लोकः–
जिनवचनरतः, अतिन्तिनः, प्रतिपूर्णः आयतमार्थिकः।
आचारसमाधिसंवृतः, भवति च दान्तः भावसन्धकः।।

श्लोकः अभिगम चउरो समाहिओ, सुविसुद्धो सुसमाहिअप्पओ।
विउलहिअं सुहावहं पुणो, कुव्वई सो पयक्खेममप्पणो।।6।।

छाया : अभिगम्य चतुरः समाधीन्, सुविसुद्धः सुसमाहितात्मा।
विपुलहितंसुखावहं पुनः, करोति च सः पदक्षेमात्मनः।।

श्लोकः जाइमरणाओ मुच्चइ, इत्थंथं च चएइ सव्वसो।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए।।7।।
त्ति बेमि।

छाया : जातिमरणाभ्यां मुच्यते, इत्थंस्थं (अत्रस्थं) च त्यजति सर्वशः।
सिद्धो वा भवति शाश्वतः, देवो वा अल्परतः महतकः।।–इति ब्रवीमि

।। विणयसमाहि णाम णवमज्झयणे चउत्थो उद्देसो समत्तो ।।

(4) घनखरे गुणां आली तपश्या मैं लगातार लाग्या रहण आला साद्धु किसे तरियां के इस दुनिया के या सुरग वगैरा के फल पाण की उमेद नहीं राख्या करदा। ओ तो बस करम झाड़ण का ए मकसद राख्या करै। ओ पुराने पाप-करमां का नास करकै अपणी आतमा नैं तप समाधी मैं ला दिया करै।

7. आचार समाधी के चार रूप ये सैं- (1) इस संसार के फैदे खात्तर चारित्तर नहीं पालणा चहिए; (2) दूसरी दुनिया के फैदे खात्तर चारित्तर नहीं पालणा चहिए; (3) नाम कमाण अर अपणी तारीफ कराण की खात्तर चारित्तर नहीं पालणा चहिए; (4) बस अरिहंत भगवान के बताए होए संबर चारित्तर धरम पाण नैं छोड कै ओर किसे भी मकसद तै चारित्तर नहीं पालणा चहिए। यो चौत्था रूप सै। इसकी बाबत एक और स्लोक कह्या होया सै।

(5) भगवान के परबचन पै पक्की सरधा राखण आला, भड़काण आली बात ना कहूण आला, सास्तरां की गहरी बात्तां नैं पूरी तरियां सिमझण आला, मोक्स की चाहना राखण आला, आचार समाधी तै करम आण के रस्तां नैं रोक्कण आला अर चंचल इंदरियां नैं अर मन नैं काब्बू मैं करण आला साद्धु अपणी आतमा नैं मोक्स के धोरै ले जाया करै।

(6) समाधी के चार तरियां के रूपां नैं आच्छी तरियां जाण कै साफ-सुथरी अकल आला अर अपणे आप नैं संजम मैं पूरी तरियां जमा कै राखण आला साद्धु भला-करणी, सुख देणी अर कल्लाण करणी सिद्ध की पदवी नैं पाया करै।

(7) जो साद्धु पहलां कहे होए समाधी के गुण हासल कर्या करैं, वे जनम-मरण तै छूट जाया करैं; नरक बरगी जून्नां तै छूट जाया करैं अर इस तरियां ओ सिद्ध पदवी पा लिया करैं या थोड़े करमां आले अर घणी संपदा आले द्यौता बण जाया करैं।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ।

।। बिनय समाधि नाम के नौवें पाठ का चौथा भाग समाप्त ।।

अह सभिक्खू णाम दसमज्झयणं

मूल: निक्खम्म माणाइ अ बुद्धवयणे,
निच्चं चित्तसमाहिओ हविज्जा।
इत्थीणवसं न आवि गच्छे,
वंतं नो पडिआयइ जे स भिक्खू॥1॥

छाया : निष्क्रम्य आज्ञया च बुद्धवचने, नित्यं चित्तसमाहितो भवेत्।
स्त्रीणां वशं न चापि गच्छेत्, वान्तं न प्रत्यापिवति यः सः भिक्षुः॥

मूल: पुढविं न खणे न खणावए,
सीओदगं न पिए न पिआवए।
अगणिसत्थं जहा सुनिसिअं,
तं न जले न जलावए जे स भिक्खू॥2॥

छाया : पृथिवीं न खनेत् न खानयेत्, शीतोदकं न पिबेत् न पाययेत्।
अग्निशस्त्रं यथा सुनिशितं, तं न ज्वलेद् न ज्वालयेद् यः सः भिक्षु॥

मूल: अनिलेण न वीए न वीयावए,
हरियाणि न छिंदे न छिंदावए।
बीआणि सया विवज्जयंतो,
सचित्तं नाहारए जे स भिक्खू॥3॥

छाया : अनिलेन न व्यजेद् न व्यजयेत्, हरितानि न छिन्द्यात् न छेदयेत्।
वीजानि सदा विवर्जयन्, सचित्तं नाहारयेद् यः सः भिक्षुः॥

मूल: वहणं तसथावराण होइ,
पुढवीत्तणकट्ठनिस्सिआणं।
तम्हा उद्देसिअ न भुंजे,
नोवि पए न पयावए जे स भिक्खू॥4॥

छाया : वधनं त्रसस्थावराणां भवति, पृथिवीतृणकाष्ठनिश्रितानाम्।
तस्मादौद्देशिकं न भुञ्जीत, नापि पचेत् न पाचयेत् यः सः भिक्षुः॥

मूल: रोइअ नायपुत्तवयणे,
अत्तसमे मन्निज्ज छप्पि काए।

दसवाँ पाठ : सभिक्सु

1. साद्धु ओ सै जो जिनेस्वर भगवान के परबचन के हिसाब तै दीक्सा ले कै श्याणे माणसां की बात्तां मैं जी लाया करै, जो लुगाइयां के (काम-भोग्गां के) बस कोन्यां होंदा अर जो त्याग्गे होए बिसय-भोग्गां नैं हट कै नहीं भोग्या करदा।

2. साद्धु ओ सै जो सचित प्रिथवी नैं ना तो आप खोदता अर ना किसे और पै खुदवाता। जो सचित पाणी ना तो आप पींदा अर ना किसे और नैं प्यांदा। जो तीक्खे सस्तर जिसी आग नैं ना तो आप जलांदा अर ना किसे और पै जलवांदा।

3. साद्धु ओ सै जो पंखे-पुंखे तै ना आप हवा करदा, ना करवांदा, जो हरी (बनासपति) की ना तो आप काट-कूट करदा अर ना किसे और पै करवांदा, जो बीज वगैरा कै हाथ नहीं लांदा अर सचित भोजन-पाणी नहीं करदा।

4. साद्धु ओ सै जो भोजन त्यार करदे होए प्रिथवी, तुणके, काठ वगैरा के आसरे रह्ण आले त्रस अर सथावर जीवां की हत्या होया करै, इस कारण साद्धु की खात्तर बणाया होया भोजन-पाणी ना लेंदा, नाज-नूज ना तो आप पकांदा अर ना किसे और तै पकवांदा।

5. साद्धु ओ सै जो भगवान महाबीर के बचनां पै सरधा राख कै छहकाय के जीवां नैं अपणी आतमा जिसे प्यारे सिमझ्या करै, पांच महाबरत पाल्या

पंच य फासे महव्वयाइं,
पंचासवसंवरे जे स भिक्खू॥5॥

छाया : रोचयित्वा ज्ञातपुत्रवचनं, आत्मसमान् मन्येत षडपि कायान्।
पंच च स्पृशेत् महाव्रतानि, पंचाश्रवसम्वृतो यः सः भिक्षुः॥

मूल: **चत्तारि वमे सया कसाए,**
धुवजोगी हविज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जायरुवरयए,
गिहिजोगं परिवज्जए जे से भिक्खू॥6॥

छाया : चतुरो वमेत् सदा कषायान्, ध्रुवयोगी भवेत् बुद्धवचने।
अधनो निर्जातरूपरजतः, गृहियोगं परिवर्ज्जयेत् यः सः भिक्षुः॥

मूल: **सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे,**
अत्थि हु नाणे तवे संजमे अ।
तवसा धुणइ पुराणपावगं,
मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू॥7॥

छाया : सम्यग्दृष्टिः सदा अमूढः,
अस्ति हि ज्ञानं तपः संयमश्च।
तपसा धुनोति पुराणपापकं,
मनोवचः कायसुसम्वृतः यः सः भिक्षुः॥

मूल: **तहेव असणं पाणगं वा,**
विविहं खाइमं साइमं लभित्ता।
होही अट्ठो सुए परे वा,
तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू॥8॥

छाया : तथैव अशनं पानकं वा,
विविधं खाद्यं स्वाद्यं लब्ध्वा।
भविष्यति अर्थः श्वः परस्मिन् वा,
तत् न निदध्यात् न निधापयत् यः सः भिक्षुः॥

मूल: **तहेव असणं पाणगं वा,**
विविहं खाइमं साइमं लभित्ता।
छंदिअ साहम्मियाण भुंजे,
भुच्चा सज्झायरए जे स भिक्खू॥9॥

करै अर करमां के आतमा तक आण आले पांच रस्त्यां नैं बंद कर्‌या करै।

6. साद्धु ओ सै जो गुस्से वगैरा चारूं कसायां का त्याग कर्‌या करै, साद्धु के धरम मैं कती पक्का रह्या करै, धन-माया के परिग्रह तै अजाद रह्या करै अर गिरस्थियां जोग्गे काम करण का त्याग कर दिया करै।

7. साद्धु ओ सै जो धरम के हिसाब तै सब कुछ देक्खण आला सै; मूरखता तै दूर सै मतलब मिथ्यात्व मैं फँसे होयां की धन-माया देख कै जी ना लांदा; ग्यान, तप अर संजम मैं पूरी सरधा राख्या करै; मन-बचन-काया नैं काबू मैं राख्या करै अर तपश्या तै पुराणे पाप-करमां नैं झाड़ दिया करै।

8. साद्धु ओ सै जो सास्तरां मैं बताए तरीक्के तै ल्याई होई तरां-तरां की खाण-पीण की या सुआद की चीजां नैं ना तो आप कट्ठी करकै राखदा अर ना ओरां तै रखवांदा।

9. साद्धु ओ सै जो बिना दोस के ठीक तरीक्के तै हर तरियां का भोजन-पाणी ल्याएं पाछै अपणे साथी साद्धुआं तै न्योत्ता दे कै ए भोजन-पाणी लिया करै अर ले कै सुआध्याय जिसे आच्छे काम मैं लाग जाया करै।

छाया : तथैव अशनं पानकं वा,
विविधं खाद्यं स्वाद्यं लब्ध्वा।
छन्दित्वा समानधार्मिकान् भुंक्ते,
भुक्त्वा च स्वाध्यायरतः यः सः भिक्षुः।।

मूल: न य वुग्गहियं कहं कहिज्जा,
न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते।
संजमेधुवजोगजुत्ते उवसंते,
अविहेडए जे स भिक्खू।।10।।

छाया : न च व्युद्ग्राहिकां कथां कथयेत्, न च कुप्येत् निभृतेन्द्रियः प्रशान्तः।
संयमे ध्रुवयोग युक्तः, उपशान्तः अविहेठकः यः सः भिक्षुः।।

मूल: जो सहइ हु गामकंटए,
अक्कोसपहारतज्जणाओ अ।
भयभेरवसद्दसप्पहासे,
समसुहदुक्खसहे अ जे स भिक्खू।।11।।

छाया : यः सहते खलु ग्रामकण्टकान्, आक्रोशप्रहारतर्जनाश्च।
भयभैरवशब्दसप्रहासे, समसुख दुःखसहश्च यः सः भिक्षुः।।

मूल: पडिमं पडिवज्जिआ मसाणे,
नो भीयए भयभेरवाइं दिअस्स।
विविहगुणतवोरए अ निच्चं,
न सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू।।12।।

छाया : प्रतिमां प्रतिपद्य श्मशाने, न विभेति भयभैरवानि दृष्ट्वा।
विविधगुणतपोरतश्च नित्यं, न शरीरं च अभिकांक्षते यः सः भिक्षुः।।

मूल: असइं वोसट्ठचत्तदेहे,
अकुट्ठे व हए व लूसिए वा।
पुढविसमे मुणी हविज्जा,
अनिआणे अकोउहल्ले जे स भिक्खू।।13।।

छाया : असकृत् व्युत्सृष्टत्यक्तदेहः,
आक्रुष्टो वा हतो वा लूषितो (लुञ्चितो) वा।
पृथिवीसमो मुनिर्भवेत्,
अनिदानः अकुतूहलो यः सः भिक्षुः।।

10. जो कलेस करण आली बात कोन्यां कर्‌या करदा; गुस्सा कोन्यां कर्‌या करदा; मन अर इंदरियां नैं हमेस्सां काबू मैं राख्या करै; कत्ती ठंडा रह्या करै; संजम के काम्मां मैं कत्ती पक्का रह्या करै; कोए कष्ट आ जा तो बेचैन नहीं होया करदा अर औरां की बेसती नहीं कर्‌या करदा, ओ साद्धु कुहाया करै।

11. साद्धु ओ सै जो कांड्यां की तरियां चुभण आले बोल्लां नैं, मारां नैं अर ताड़ना नैं; भूत-परेत वगैरा की घणा डराण आली हांस्सी नैं, उनके बोल्लां नैं, उनके दिए होए दुक्खां नैं अर और हरेक सुख-दुःख नैं समता तै बरदास कर्‌या करै।

12. साद्धु ओ सै जो प्रतिमा (खास तरियां की तपस्या) ले कै समसान मैं ध्यान करदा होया भूत-परंतां के डराणिये रूप देख कै कोन्यां डरदा, जो तरां-तरां के मूल गुणां अर तपस्या वगैरा मैं प्रेम तै लाग्या रह्या करै अर सरीर की भी ममता कोन्यां कर्‌या करदा।

13. साद्धु ओ सै जो साधना करदे होए बार-बार अपणे सरीर के ध्यान का त्याग कर दिया करै, कोए गुस्सा करदे, बेसती कर दे, मार-पीट दे अर घाव कर दे तो धरती की तरियां सब कुछ बरदास कर्‌या करै, जो उन मारणियां का कदे भी बुरा करण की बात सोच कै साधना कोन्या कर्‌या करदा अर खामखां की बात्तां नैं जाणन की चाह्ना कोन्यां राख्या करदा।

मूल: अभिभूअ काएण परीसहाइं,
समुद्धरे जाइपहाउ अप्पयं।
विइत्तु जाई मरणं महब्भयं,
तवे रए सामणिए जे स भिक्खू॥14॥

छाया : अभिभूय कायेन परीषहान्, समुद्धरेत् जातिपथात् आत्मानम्।
विदित्वा जातिमरणं महाभयं, तपसि रतः श्रामण्ये यः सः भिक्षुः॥

मूल: हत्थसंजए पायसंजए,
वायसंजए संजएइंदिए।
अज्झप्परए सुसमाहिअप्पा,
सुत्तत्थं च विआणइ जे स भिक्खू॥15॥

छाया : हस्तसंयतः पादसंयतः, वाक्संयतः संयतेन्द्रियः।
अध्यात्मरतः सुसमाहितात्मा, सूत्रार्थं च विजानाति यः सः भिक्षुः॥

मूल: उवहिंमि अमुच्छिए अगिद्धे,
अन्नायउंछं पुलनिप्पुलाए।
कयविक्कयसंनिहिओ विरए,
सव्वसंगावगए अ जे स भिक्खू॥16॥

छाया : उपधौ अमूर्च्छितः अगृद्धः, अज्ञातोंच्छं पुलाकनिष्पुलाकः।
क्रयविक्रयसंनिधिभ्यो विरतः, सर्वसंगापगतश्च यः सः भिक्षुः॥

मूल: अलोल भिक्खू न रसेसु गिज्झे,
उंछं चरे जीविअंनाभिकंखी।
इड्ढिं च सक्कारण पूअणं च,
चए ट्ठिअप्पा अणिहे जे स भिक्खू॥17॥

छाया : अलोल भिक्षुः न रसेषु गृद्धः, उंछं चरेत् जीवितं नाभिकांक्षेत।
ऋद्धिं च सत्कारं पूजनं च, त्यजति स्थितात्माऽनिभः यः सः भिक्षुः॥

मूल: न परं वइज्जासि अयं कुसीले,
जेणं च कुप्पिज्ज न तं वइज्जा।
जाणिअ पत्तेअं पुन्नपावं,
अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू॥18॥

14. साद्धु ओ सै जो अपणे सरीर तै परीसहां नैं (साधना मैं आण आले दुक्खां नैं) जीत कै आतमा नैं संसार की राही तै दूर कर लिया करै अर जनम-मरण नैं कसूत्ता डर सिमझ कै चारित्तर अर तप-साधना मैं खोया रह्या करै।

15. साद्धु ओ सै जो अपणे हाथ, पां, जबान अर इंदरियां नैं पूरी तरियां काबू मैं राख्या करै, धरम के ग्यान मैं लाग्या रह्या करै, समाधी की भौअना मैं आच्छी तरियां टिक कै रह्या करै अर सास्तर की गहराई नैं साफ-साफ सिमझ्या करै।

16. साद्धु ओ सै जो अपणे साधनां मैं मोह-ममता कोन्यां राख्या करदा, संसार के बंधनां तै अजाद रह्या करै, अनजान घरां तै भोजन-पाणी लिया करै, संजम नैं दोस लाग्गण तै बेकार कोन्यां होण देंदा, खरीद-बेच अर कट्ठा करण तै दूर रह्या करै अर सब तरियां के संग-साथ तै भी दूर रह्या करै।

17. साद्धु ओ सै जो लालच कोन्यां राखदा, सुआद्दां के पाछै बावला कोन्यां होंदा, अनजान घरां तै लाया होया थोड़ा-थोड़ा भोजन-पाणी ए लिया करै, संजम तै दूर जीण की चाह्ना कोन्यां राखदा, धन-माया अर सेवा-भगती की चाह्ना भी कोन्यां करदा, जो टिके होए सुभा आला अर निचलाया होया करै अर जो करमां का नास करण मैं ए अपणी ताकत लाया करै।

18. साद्धु ओ ए सै जो न्यूं सोच कै अक् जो जिसा पुन्न-पाप करै, उसा ए फल पाया करै, दूसरां नै बुरे आचरण आला कह कै उनकी बेसती कोन्यां कर्या करदा। जो किसे तै गुस्सा ठाण आले कड़ुवे बोल कोन्यां कह्या करदा अर 'मैं ए सबतै आच्छा सूँ' न्यूं मान कै घमंड कोन्यां कर्या करदा।

छाया : न परं वदेत् अयं कुशीलः, येन च कुप्येत् न तद् वदेत्।
ज्ञात्वा प्रत्येकं पुण्य-पापं, आत्मानं न समुत्कर्षेत् यः सः भिक्षुः।।

मूलः न जाइमत्ते न य रुवमत्ते,
न लाभमत्ते न सुएणमत्ते।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता,
धम्मज्झाण रए जे स भिक्खू।।19।।

छाया : न जातिमत्तः न च रूपमत्तः, न लाभमत्तः न श्रुतेनमत्तः।
मदान् सर्वान् विवर्ज्य, धर्मध्यानरतो यः सः भिक्षुः।।

मूलः पवेअए अज्जपयं महामुणी,
धम्मेठिओ ठावयई परं पि।
निक्खम्म वज्जिज्ज कुसीललिंगं,
न आवि हासंकुहए जे स भिक्खू।।20।।

छाया : प्रवेदयेत् आर्यपदं महामुनिः, धर्मे स्थितः स्थापयति परमपि।
निष्क्रम्य वर्जयेत् कुशीललिङ्गं, न चापि हासेकुहकः यः सः भिक्षुः।।

मूलः तं देहवासं असुइं असासयं,
सया चए निच्चहिअट्ठिअप्पा।
छिंदित्तु जाईमरणस्स बंधणं,
उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं।।21।।
–त्ति बेमि

छाया : तं देहवासमशुचिमशाश्वतं, सदा त्यजेत् नित्यहितस्थितात्मा।
छित्वा जातिमरणस्य बन्धनं, उपैति भिक्षुरपुनरागमं गतिम्।।
–इति ब्रवीमि

।। इअ सभिक्खू णाम दसमज्झयणं सम्मत्तं ।।

19. साद्धु ओ ए सै जो जात का, रूप का, फायदे का अर ग्यान वगैरा का घमंड कोन्यां कर्‌या करदा अर जो सब तरियां के घमंडां नैं छोड कै हमेस्सां धरम-ध्यान मैं ए लाग्या रह्या करै।

20. जो साद्धु दूसरां का भला करण की भौअना तै साच्चे धरम का परबचन कर्‌या करै, आप धरम मैं टिक कै औरां नैं भी टिका दिया करै, संसार की गंदी आब-हवा तै बाहर रह्या करै,, गलत धरम नैं छोड दिया करै अर ओरां नैं हँसाण की खात्तर ऊटपटाँग काम कोन्यां कर्‌या करदा, ओ ए साद्धु सै।

21. अपणी आतमा नैं हमेस्सां सदा रह्ण आली भलाई मैं टिका कै राखणिया साद्धु तरां-तरां की गंदगी तै भरे इस नासवान सरीर नैं हमेस्सां के लिए छोड दिया करै अर जनम-मरण के बंधनां नैं काट कै मुकती नाम की इसी जंगा पा लिया करै, जहां जाएं पाछै फेर संसार मैं आणा-जाणा कोन्यां होंदा।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ।

।। सभिक्खु नाम का दसवां पाठ समाप्त ।।

अह रइवक्का पढमा चूला

मूल: इह खलु भो! पव्वइएणं, उप्पण्णदुक्खेणं, संजमे अरइसमावन्नचित्तेणं, ओहाणुप्पेहिणा, अणोहाइएणं, चेव हयरस्सिगयंकुसपोयपडागाभूआइं, इमाइं, अट्ठारस-ठाणाइं, सम्मं संपडिलेहिअव्वाइं भवंति।

तंजहा-(1) हं भो! दुस्समाए दुप्पजीवी (2) लहु-सगा इत्तिरिआ गिहीणं कामभोगा (3) भुज्जो अ साइ-बहुला मणुस्सा (4) इमे अ मे दुक्खे न चिरकालोवट्ठाई भविस्सइ (5) ओमज्जणपुरक्कारे (6) वंतस्स य पडिआयणं (7) अहरगइ वासोवसंपया (8) दुल्लहे खलु भो! गिहीणं धम्मे गिहीवासमज्झे वसंताणं (9) आयंके से वहाय होइ (10) संकप्पे से वहाय होइ (11) सोवक्केसे गिहवासे, निरुवक्केसे परिआए (12) बंधे गिहवासे, मुक्खे परिआए (13) सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परिआए (14) बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा (15) पत्तेयं पुन्नपावं (16) अणिच्चे खलु भो! मणुआण जीविए कुसग्गजलबिंदु- चंचले (17) बहुं च खलु भो! पावं कम्मं पगडं (18) पावाणं च खलु भो! कडाणं, कम्माणं, पुव्विं दुच्चिनाणं, दुप्पडिकंताणं, वेइत्ता मुक्खो, नत्थि अवेइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता-अट्ठारसमं पयं भवइ॥1॥

छाया : इह खलु भोः प्रव्रजितेन, उत्पन्नदुःखेन, संयमेऽरतिसमापन्नचित्तेन, अवधानोत्प्रेक्षिणा, अनवधावितेन, चैव हय-रश्मिगजांकुशपोतपताका-भूतानि, इमानि, अष्टादशस्थानानि, सम्यक् संप्रतिलेखितव्यानि भवन्ति।

तद्यथा-(1) हं भो दुःसमायां दुष्प्रजीविनः (2) लघुतरा इत्वरा गृहिणां कामभोगाः (3) भूयश्च स्वातिबहुला मनुष्याः (4) इदं च मे दुःखं न चिरकालोपस्थायि भविष्यति (5) अवमजनपुरस्कारः (6) वान्तस्य प्रत्यादानम् (7) अधरगतिवासोपसंपत् (8) दुर्लभः

पहली चूलिकाः रतिवाक्या

हे मोक्स चाह्ण आलो! दीक्षा लिये होये जिस साद्धु नैं मोह-ममता के कारण कोए दुक्ख हो ज्या, संजम तै उसका मन दूर हट ज्या, अर ओ संजम छोड कै गिरस्थी बणना चाह्वै तो उसनैं पहलां इन अठारा बात्तां पै आच्छी तरियां सोच-बिचार कर लेणा चहिए। डामाडोल मन की खात्तर ये अठारा बात इसी ए सैं, जिसी घोड़े की खात्तर लगाम, हात्थी की खात्तर अंकुस अर जहाज की खात्तर पाल। ये अठारा बात इस तरियां सैं-

1. ओ हो! अवसरपिणी काल के इस पांचमें आरे या दुक्खम काल मैं गुजारा करणा बहोत मुस्किल सै।
2. गिरस्थियां के काम-भोग थोथे, हीणे अर थोड़ी ए देर के होया करैं।
3. आजकाल के माणस तकरीबन छल-कपट अर लोभ-लालच तै भरे होया करैं।
4. मेरा यो दुक्ख परीसहां तै (साधना मैं आण आले दुक्खां तै) पैदा होया सै अर यो हमेस्सां रह्ण आला कोन्यां।
5. गिरस्थी नैं तो नीच्चां की भी इज्जत करणी पड्या करै।
6. संजम छोड कै फेर गिरस्थी बणना कै (उलटी) नैं पीण जिसा सै।
7. संजम छोड कै फेर गिरस्थी बणना नरकां मैं दुक्ख भोग्गण जिसा सै।
8. ओ हो! गिरस्थी की जिंदगी मैं धरम की साधना करणा बड़ा मुस्किल सै।
9. वहां बेमारियां का नतीज्जा मौत होया करै।
10. वहां मन की बेमारियां का नतीज्जा भी मौत होया करै।
11. गिरस्थी मैं रह्णा कलेस मैं रह्णा सै अर संजम मैं रह्णा कलेस तै अजाद रह्णा सै।
12. गिरस्थी बंधण अर संजम मुकती सै।
13. गिरस्थी पाप-भरी सै अर संजम पापां तै बच्या होया सै।
14. गिरस्थियां के काम-भोग मामूली होया करैं अर सब नैं सह्जै ए मिल ज्याया करैं।

खलु भो! गृहिणां धर्मः गृहवासमध्ये वसताम् (9) आतङ्कस्तस्य वधाय भवति (10) संकल्पस्तस्य वधाय भवति (11) सोपक्लेशो गृहवासः, निरुपक्लेशः पर्याय (12) बन्धो गृहवासः मोक्षः पर्यायः (13) सावद्यो गृहवासः, अनवद्य पर्यायः (14) बहु-साधारणा गृहिणां कामभोगाः (15) प्रत्येकं पुण्यपापम् (16) अनित्यं खलु भो! मनुजानां जीवितं कुशाग्रजलबिन्दुचंचलम् (17) बहु च खलु भो, पापं कर्म प्रकटम् (18) पापानां कृतानां कर्मणां पूर्वं दुश्चरितानां दुष्प्रतिक्रान्तानां वेदयित्वा मोक्षः, नास्त्यवेदयित्वा, तपसा वा क्षपयित्वा। अष्टादशं पदं भवति।।

मूलः **भवइ अ इत्थ सिलोगो–**
जया य चयई धम्मं, अणज्जो भोगकारणा।
से तत्थ मुच्छिए बालो, आयइं नावबुज्झइ।।1।।

छाया : भवति चात्र श्लोकः–
यदा च त्यजति धर्मं, अनार्यः भोगकारणात्।
स तत्र मूर्च्छितो बालः, आयतिं नावबुद्ध्यते।।

मूलः **जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं।**
सव्वधम्मपरिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ।।2।।

छाया : यदाऽवधावितो भवति, इन्द्रो वा पतति क्षमाम्।
सर्वधर्मपरिभ्रष्टः, सः पश्चात् परितप्यते।।

मूलः **जया अ वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो।**
देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ।।3।।

छाया : यदा च वन्द्यो भवति, पश्चाद् भवत्यवन्द्यः।
देवतेव च्युता स्थानात्, सः पश्चात् परितप्यते।।

मूलः **जया अ पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो।**
राया व रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ।।4।।

छाया : यदा च पूज्यो भवति, पश्चाद् भवत्यपूज्यः।
राजेव राज्यप्रभ्रष्टः, सः पश्चात् परितप्यते।।

15. पुन्न अर पाप सबका अपणा-अपणा होया करै।

16. ओ हो! माणस की जिंदगी आणी-जाणी सै। वा घास की नोक पै पड़ी होई ओस की बूँद की तरियां थोड़ी देर ऐ रह्ण आली सै।

17. ओ हो! मनै इसतै पहलां घणे पाप-करम कर राखे सैं।

18. ओ हो! बुरे चारित्तर अर बुरी आदत तै पहलां कट्ठे करे होए पाप-करम या तो भोगें पाछे छूट्या करैं या तपष्या तै उन्नैं खतम करें पाछै ए मोक्स मिल्या करै। इसे तरियां उनका अंत होया करै।

यो अठारवां पद सै।

यहां कुछ स्लोक कहे गए सैं–

1. काम-भोग्गां के कारण जिब नीच बुद्धी आला साद्धु संजम नैं छोड्या करै तो उन काम-भोग्गां मैं बावला होया ओ मूरख अपणी अगत तै अनजान रह्या करै।

2. जो साद्धु संजम छोड कै गिरस्थी बण ज्याया करै, ओ सारे धरम-करम तै गिर कै उसे तरियां पछताया करै जिस तरियां सुरग तै नीचै पड़ कै धरती पै आया होया इंदर पछताया करै।

3. संजम पालदा होया साद्धु सबकी खात्तर बंदना करण जोग्गा रह्या करै पर संजम तै गिरें पाछै ओ हे साद्धु बेसती कराण जोग्गा बण ज्याया करै अर उसे तरियां पछताया करै जिस तरियां सुरग तै नीचै पड्या होया द्यौता।

4. संजम पालण के बखत साद्धु सबकी पूजा करण जोग्गा रह्या करै पर धरम तै गिरें पाछै ओ पूजा करण जोग्गा कोन्यां रह्या करदा। ओ राजपाट छूट्टे होए राजा की तरियां हमेस्सां पछतावा करदा रह्या करै।

मूल: **जया अ माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो।**
सेट्ठिव्व कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ॥5॥

छाया : यदा च मान्यो भवति, पश्चाद् भवत्यमान्यः।
श्रेष्ठीव कर्बटे क्षिप्तः, सः पश्चात् परितप्यते॥

मूल: **जया अ थेरओ होइ, समइक्कंत जुव्वणो।**
मच्छुव्व गलं गिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ॥6॥

छाया : यदा च स्थविरो भवति, समतिक्रान्तयौवनः।
मत्स्य इव गलं (बडिशं) गिलित्वा, सः पश्चात् परितप्यते॥

मूल: **जया अ कुकुडंबस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ।**
हत्थी व बंधणे बद्धो, स पच्छा परितप्पइ॥7॥

छाया : यदा च कुकुटुम्बस्य, कुतप्तिभिर्विहन्यते।
हस्तीव बंधने बद्धः, सः पश्चात् परितप्यते॥

मूल: **पुत्तदारपरीकिण्णो, मोहसंताणसंतओ।**
पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ॥8॥

छाया : पुत्रदारपरिकीर्णः, मोहसंतानसंततः।
पंकावसन्नो यथा नागः, सः पश्चात् परितप्यते॥

मूल: **अज्ज आहं गणी हुंतो, भाविअप्पा बहुस्सुओ।**
जइऽहं रमंतो परिआए, सामण्णे जिणदेसिए॥9॥

छाया : अद्य तावदहं गणी भवेयम्, भावितात्मा बहुश्रुतः।
यद्यहं रमेय पर्याये, श्रामण्ये जिनदेशिते॥9॥

मूल: **देवलोगसमाणो अ, परिआओ महेसिणं।**
रयाणं अरयाणं च, महानरयसारिसो॥10॥

छाया : देवलोकसमानस्तु, पर्यायो महर्षीणाम्।
रतानामरतानां च, महानरकसदृशः॥

मूल: **अमरोवमं जाणिअ सुक्खमुत्तमं,**
रयाणं परियाए तहारयाणं।
निरओवमं जाणिअ दुक्खमुत्तमं,
रमिज्ज तम्हा परियाइं पंडिए॥11॥

5. संजम पालण के बखत साद्धु सबकी पूजा करण जोग्गा रह्या करै पर धरम तै गिरें पाछै उसकी कसूत्ती बेसती होया करै। ओ उसे तरियां पछतावा कर्या करै जिस तरियां किसे छोट्टे-से गाम की हद मैं बंध्या होया सेठ कर्या करै।

6. जुआन्नी बीत्तें पाछै जो बुढापे मैं संजम छोड्या करै, ओ उसे तरियां पछतावा कर्या करै जिस तरियां किसे मछली के गले मैं कांडा फँस रह्या हो।

7. संजम तै गिरे होए साद्धु नैं जिब कुणबे की कसूत्ती चिंता चारूं ओड़ तै घेर लिया करैं तो ओ बँधे होए हात्थी की तरियाँ पछतावा कर्या करै।

8. संजम तै गिर्या होया साद्धु बेट्टाँ मैं अर लुगाई की मोह-मामता मैं फँस जाया करै। मोह के बहाव मैं बैह्त्ता होया ओ कीच मैं फँसे होए हात्थी की तरियाँ पछतावा कर्या करै।

9. जै मैं धरम मैं लाग्गी होई आत्मा आला आच्छा ग्यान्नी होंदा अर साद्धुता मैं रम्या रह्ंदा तो इस बखत गणी की पदवी पै बिराज्या होंदा।

10. साद्धुता मैं रमे होए साद्धुआँ की खात्तर संजम सुरग की तरियां सुख देणिया होया करै अर जिनका जी संजम मैं कोन्यां लागदा, उन्नैं भयान्नक नरक के बड़े भारी दुक्ख देण आला लाग्या करै।

11. संजम मैं रमे होए साद्धु द्यौतां की तरियां आच्छा सुख महसूस कर्या करैं अर संजम तै उचटे होए जी आले साद्धु नरक की तरियां दुक्ख महसूस कर्या करैं। या सच्चाई सिमझ कै श्याणे साद्धु नैं संजम मैं ए लगातार रमे रह्णा चहिए।

छाया : अमरोपमं ज्ञात्वा सौख्यमुत्तमं,
रतानां पर्याये तथाऽरतानाम्।
नरकोपमं ज्ञात्वा दुःखमुत्तमं,
रमेत तस्मात् पर्याये पण्डितः।।

मूलः धम्माउ भट्ठं सिरिओववेयं,
जन्नग्गि विज्झाअमिवप्पतेअं।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला,
दाढुद्धियं घोरविसं व नागं।।12।।

छाया : धर्माद्भ्रष्टं श्रियोऽपेतं यज्ञाग्निं विध्यातमिव अल्पतेजसम्।
हीलयन्ति एनं दुर्विहितं कुशीलाः, उद्धृतदंष्ट्रं घोरविषमिव नागम्।।

मूलः इहेवधम्मो अयसो अकित्ती,
दुन्नामधिज्जं च पिहुज्जणम्मि।
चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो,
संभिन्नवित्तस्स य हिट्ठओ गई।।13।।

छाया : इहैव अधर्मोऽयशोऽकीर्तिः, दुर्नामध्येयं च पृथग् जने।
च्युतस्य धर्मादधर्मसेविनः, संभिन्नवृत्तस्य चाधस्ताद् गतिः।।

मूलः भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा,
तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं।
गइं च गच्छे अणहिज्झियं दुहं,
बोही अ से नो सुलभा पुणो पुणो।।14।।

छाया : भुक्त्वा भोगान् प्रसह्य चेतसा, तथाविधं कृत्वाऽसंयमं बहुम्।
गतिं च गच्छति अनभिध्यातां, दुःखां बोधिश्चास्य न सुलभा पुनः पुनः।।

मूलः इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो,
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं,
किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं?।।15।।

छाया : अस्य तावत् नारकस्य जन्तोः, दुःखोपनीतस्य क्लेशवर्तिनः।
पल्योपमं क्षीयते सागरोपमं, किमंग पुनर्ममेदं मनोदुःखम्।।

12. धरम तै गिर्‌या होया अर यग्य की ठंडी होई होई आग की तरियां चारित्तर अर तप का तेज ना राखणिया साद्धु नीचाँ पै भी अपणी बेसती कराया करै। संजम तै गिरे होए इसे साद्धु की जनता उसे तरियाँ बेसती कर्‌या करै जिस तरियाँ कसूत्ते जह्‌र आले उस साँप की, जिसके जह्‌र के दाँत पाड़ राखे हों।

13. धरम तै गिर्‌या होया, पाप करणिया अर संजम की बुराई करणिया साद्धु इस लोक मैं बदनाम होया करै, पापी कुहाया करै अर जनता उस्‌के बुरे नाम धर दिया करै। परलोक मैं ओ नरग बरगी नीच गतियां मैं जाकै दुक्ख भोग्या करै।

14. संजम तै गिरे होए इसे साद्धु नैं बेचैन मन तै भोग भोग्गें पाछै अर उनके हिसाब तै उमर पूरी करकै दुक्ख-देणी नरक बरगी नीच गतियां मैं जाकै सह्‌जै-सी धरम का ग्यान कोन्यां मिल्या करदा।

15. (संकट आ पड़ै तो संजम तै गिरण आला साद्धु न्यूँ सोच्चै अक्‌) करड़े दुक्खां तै भरी नारकी जीवां की पल्योपम अर सागरोपम जिसी (घणी ए) लाम्बी-लाम्बी उमर भी खतम हो ज्याया करै तो फेर मेरा यो संजम मैं आण आला मन का दुक्ख सै ए कितणी वार का!

मूल: न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई,
असासया भोगपिवास जंतुणो।
न चे सरीरेण इमेणऽविस्सई,
अविस्सई जीविअपज्जवेण मे॥16॥

छाया : न मम चिरं दुःखमिदं भविष्यति, अशाश्वती भोगपिपासा जन्तोः।
न चेच्छरीरेण अनेन अपयास्यति, अपयास्यति जीवित पर्यायेण मे॥

मूल: जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छिओ,
चइज्ज देहं न हु धम्मसासणं।
तं तारिसं नो पइलिंति इंदिया,
उविंतिवाया व सुदंसणं गिरिं॥17॥

छाया : यस्यैवमात्मा तु भवेत् निश्चितः, त्यजेत् देहं न तु धर्मशासनम्।
तं तादृशं न प्रचालयंति इन्द्रियाणि, उत्पतद्वाता इव सुदर्शनं गिरिम्॥

मूल: इच्चेव संपस्सिअ बुद्धिमं नरो,
आयं उवायं विविहं विआणिया।
काएण वाया अदु माणसेणं,
तिगुत्तिगुत्तो जणवयणमहिट्ठिजासि॥18॥

–त्ति बेमि।

छाया : इत्येव संदृश्य बुद्धिमान्नरः, आयमुपायं विविधं विज्ञाय।
कायेन वाचाऽथवा मानसेन, त्रिगुप्तिगुप्तो जिनवचनमधितिष्ठेत्॥

–इति ब्रवीमि।

॥ इअ रइवक्का पढमा चूला समत्तो॥

16. यो मेरा दुक्ख घणी वार ताईं कोन्यां ठहूर सकदा। कारण यो अक् जीव की भोग्गां की लालसा तो आणी-जाणी सै। जै या जीत्ते जी खतम कोन्यां होई तो मरें पाछै तो खतम हो ए जावैगी।

17. पक्की आतमा जिस साद्धु की होया करै ओ पक्कम्पक्का न्यूँ सोच्या करै अक् मोक्के पै सरीर तो राजी हो कै छोड्या जा सकै सै पर धरम नहीं छोडणा चहिए। परलै की आंधी भी जिस तरियाँ परबताँ के राज्जा सुमेरु नैं कोन्यां हला सकदी, उसे तरियाँ चंचल इंदरियां भी इसे पक्के बरताँ आले साद्धु नैं डिगा कोन्यां सकदी।

18. श्याणे माणस नैं इस तरियाँ ठीक-ठीक बिचार करकै ग्यान बरगे लाभ के साद्धन जाणने चहिएँ अर मन-बचन-काया के तीन्नूँ तरीक्याँ तै गुपत (पापाँ तै बच्या होया) हो कै भगवान के बचन ज्यूँ के त्यूँ पालणे चहिएँ।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ।

॥ रतिवाक्या नाम की पहली चूलिका समाप्त ॥

अह विवित्तचरिया बीआ चूला

मूल: चूलियं तु पवक्खामि, सुयं केवलिभासिअं।
जं सुणित्तु सपुन्नाणं, धम्मे उप्पज्जए मई॥1॥

छाया : चूलिकां तु प्रवक्ष्यामि, श्रुतां केवलिभाषिताम्।
यां श्रुत्वा सुपुण्यानां, धर्मे उत्पद्यते मतिः॥

मूल: अणुसोअपट्ठिए बहुजणम्मि, पडिसोअ-लद्धलक्खेणं।
पडिसोअमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेणं॥2॥

छाया : अनुस्रोतः प्रस्थिते बहुजने, प्रतिस्रोतो लब्धलक्ष्येण।
प्रतिस्रोत इव आत्मा, दातव्यो भवतु कामेन॥

मूल: अणुसोय सुहो लोओ, पडिसोओ आसवो सुविहिआणं।
अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो॥3॥

छाया : अनुस्रोतः सुखो लोकः, प्रतिस्रोत आश्रवः सुविहितानाम्।
अनुस्रोतः संसारः, प्रतिस्रोतस्तस्योत्तारः॥

मूल: तम्हा आयारपरक्कमेणं संवरसमाहिबहुलेणं।
चरिया गुणा य नियमा य, हुंति साहूण दट्ठव्वा॥4॥

छाया : तस्मादाचारपराक्रमेण, संवरसमाधिबहुलेन।
चर्या गुणाश्च नियमाश्च, भवन्ति साधूनां द्रष्टव्याः॥

मूल: अणिएयवासो समुआणचरिया,
अन्नायउंछं पइरिक्कया य।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य,
विहारचरिया इसिणं पसत्था॥5॥

छाया : अनिकेतवासः समुदानचर्या, अज्ञातोंच्छं प्रतिरिक्तता च।
अल्पोपधिः कलहविवर्ज्जना च, विहारचर्या ऋषीणां प्रशस्ता॥

दूसरी चूलिका : विविक्तचर्या

1. मैं उस चूलिका का बखाण करूँ सूँ जो सुणी होई अर केवली भगवान की कही होई सै। इसनैं सुणन तै पुन्नवान जीवाँ की धरम मैं पक्की सरधा बण ज्याया करै।

2. संसार के घनखरे जीव पाणी के बहाव मैं पड़े काठ की तरियां काम-भोग्गां की नदी के बहाव मैं संसार-समुंदर की तरफ बहत्ते जाण लाग र्‌हे सैं। जिनका मकसद काम-भोग्गां के बहाव तै पलट कै संजम-साधना मैं लाग लिया सै अर जो संसार तै छूट्टण की चाह्‌ना राख्या करैं, उनका फरज सै अक् वे अपणी आतमा नैं हमेस्सां काम-भोग्गां के बहाव तै उलटे बहाव मैं राखैं।

3. यो संसार बहाव मैं बहण जिसा सै अर साद्‌धु-धरम की दिक्सा इस तै उलटे बहाव मैं बहण जिसी सै। कारण यो अक् इसे तै संसार-समुंदर तै पार उतर्‌या जाया करै। संसार के मामूली जीवां नैं संसार तै उलटा बहाव मुस्कल लाग्या करै। वें तो संसार के बहाव के हिसाब तै बह्‌ण मैं ए सुख मान्या करैं।

4. इस कारण संजम मैं हिम्मत बरतण आले अर संवर मैं समाधी राखण आले साद्‌धुआं नैं अपणे गुणां का, नेमां का अर चारित्तर का ख्याल राखणा चहिए।

5. साद्‌धुआं का जो चारित्तर कत्ती ठीक अर बडाई जोग्गा बताया सै, उसकी किरिया इस तरियां होया करैं—एक्कै जंगा या गिरस्थी के घरां नहीं रहणा, बिना जाण-पिछाण के घरां तै जरूरी भोजन-पाणी लेणा, एकांत जंगा रह्‌णा, साधन अर काम की चीज थोड़ी राखणा अर कलेस नैं कत्ती छोड देणा।

मूल: आइण्णओ माणविवज्जणा य,
ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे।
संसट्ठकप्पेण चरिज्ज भिक्खू,
तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा॥6॥

छाया : आकीर्णावमानविवर्जना च, उत्सन्नदृष्टाहृतं भक्तपानम्।
संसृष्टकल्पेन चरेद् भिक्षुः, तज्जातसंसृष्टः यतिर्यतेत॥

मूल: अमज्जमंसासि अमच्छरीआ,
अभिक्खणं निव्विगइंगया य।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी,
सज्झायजोगे पयओ हविज्जा॥7॥

छाया : अमद्यमांसाशी अमत्सरी च, अभीक्ष्णं निर्विकृतिं गताश्च।
अभीक्ष्णं कायोत्सर्गकारी, स्वाध्याययोगे प्रयतो भवेत्॥

मूल: न पडिन्नविज्जा सयणासणाइं,
सिज्जं निसिज्जं तह भत्तपाणं।
गामे कुले वा नगरे व देसे,
ममत्तभावं न कहिं पि कुज्जा॥8॥

छाया : न प्रतिज्ञापयेत् शयनासने, शय्यां निषद्यां तथा भक्तापानम्।
ग्रामे कुले वा नगरे वा देशे, ममत्वभावं न क्वचिदपि कुर्यात्॥

मूल: गिहिणो वेआवडियं न कुज्जा,
अभिवायणं वंदण पूअणं वा।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसिज्जा,
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी॥9॥

छाया : गृहिणो वैयावृत्यं न कुर्यात्, अभिवादन-वन्दन-पूजनं वा।
असंक्लिष्टैः समं वसेत्, मुनिश्चारित्रस्य यतो न हानिः॥

मूल: न या लभेज्जा निउणं सहायं,
गुणाहिअं वा गुणओ समं वा।
इक्को वि पावाइं विवज्जयंतो,
विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो॥10॥

छाया : न यदि लभेत निपुणं सहायं, गुणाधिकं वा गुणतः समं वा।
एकोऽपि पापानि विवर्जयन्, विहरेत् कामेषु असज्जमानः॥

6. साद्धु नैं भीड़ आली जंगा तै अर इसी जंगा तै जहां खाणिए घणे अर खाण की चीज कम रहण का अंदेसा हो, भोजन-पाणी लेण का त्याग करणा चहिए। उसनैं तीन घरां का फासला राखदे होए पूरे ध्यान तै लिया होया सुध भोजन-पाणी ए बरतणा चहिए। देण आला जो चीज देंदा हो, उसे चीज तै भरे होए उसके हात्थां अर बरतनां तै ए भोजन-पाणी लेण की कोसस करणी चहिए।

7. साद्धु हमेस्सां नसे की चीज अर मांस खाण तै दूर रहवै। किसे तै ना जलै। बार-बार दूध, दही, घी जिसा ताकतबर भोजन-पाणी ना लेवै। बार-बार कायोत्सर्ग करदा रहवै अर सुआध्याय मैं लाग्या रहण की कोसस करै।

8. बिहार करते बखत गिरस्थी तै आसन, फट्टे, भोजन-पाणी वगैरा की बाबत इसा नेम नहीं कराणा चहिए अक् ये चीज, जिब मैं फेर यहीं आऊँ तो मेरे तै ए देणी हैं, किसे और तै नहीं। साद्धु नैं गाम, सहर, कुल अर देस बरगी किसे भी चीज पै मोह-मामता नहीं राखणी चहिए।

9. साद्धु गिरस्थियां की सेवा ना करै। उनतै राम-राम या उनकी बंदना वगैरा ना करै। अपणे चारित्तर नैं नुकसान तै बचाण की खात्तर कलेस तै दूर रहण आले साद्धुआं की संगत मैं रहवै।

10. कदे अपणे तै गुणां मैं बडा या बराबर का संजम मैं हुश्यार कोए साथी ना मिलै तो साद्धु पापां नैं टालदा होया अर काम-भोग्गां तै दूर रहंदा होया एकला ए बिचरै पर ढील्ले साद्धुआं के साथ ना रहवै।

मूल: संवच्छरं वावि परं पमाणं,
बीअं च वासं न तहिं वसेज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू,
सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ॥11॥

छाया : संवत्सरं वाऽपि परं प्रमाणं, द्वितीयं च वर्षं न तत्र वसेत्।
सूत्रस्य मार्गेण चरेद् भिक्षुः, सूत्रस्यार्थो यथा आज्ञापयति॥

मूल: जो पुव्वरत्तावररत्तकाले,
संपेहए अप्पगमप्पएणं।
किं मे कडं किं च मे किच्च सेसं,
किं सक्कणिज्जं न समायरामि॥12॥

छाया : यः पूर्वरात्रापररात्रकाले, संप्रेक्षते आत्मकमात्मकेन।
किं मया कृतं किंच मम कृत्यशेषं, किं शक्यं न समाचरामि॥

मूल: किं मे परो पासइ किं च अप्पा,
किं वाऽहं खलियं न विवज्जयामि।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो,
अणागयं नो पडिबंध कुज्जा॥13॥

छाया : किं मम परः पश्यति किं चात्मा, किं वाऽहं स्खलितं न विवर्ज्जयामि।
इत्येवं सम्यगनुपश्यन्, अनागतं न प्रतिबंध कुर्यात्॥

मूल: जत्थेव पासे कई दुप्पउत्तं,
काएण वाया अदु माणसेणं।
तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा,
आइन्नओ खिप्पमिवक्खलीणं॥14॥

छाया : यत्रैव पश्येत् क्वचिद् (कदा) दुष्प्रयुक्तं, कायेन वाचाऽथवा मानसेन।
तत्रैव धीरः प्रतिसंहरेत्, आकीर्णः क्षिप्रमिव खलिनम्॥

मूल: जस्सेरिसा जोग जिइंदिअस्स,
धिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी,
सो जीअइ संजमजीविएणं॥15॥

छाया : यस्य ईदृशाः योगाः जितेन्द्रियस्य, धृतिमतः सत्पुरुषस्य नित्यम्।
तमाहुर्लोके प्रतिबुद्धजीविनं, स जीवति संयमजीवितेन॥

11. साद्धु की खात्तर बारिस के मौसम मैं एक्कै जंगा ज्यादा तै ज्यादा चार म्हीने अर और मोसमां मैं एक म्हीना ठहरण का टैम बताया सै। इसलिए साद्धु जिस जंगा इस तै ज्यादा मीयाद तक ठह्र लिया हो तो उस्से जंगा दूसरा चौमास या मास-कल्प नहीं करणा चहिए। आम अर खास हालत की खात्तर शास्तर मैं जिस तरियां का जो अग्या हो, उसा ए ब्योहार करणा चहिए।

12. साद्धु रात के पहले अर पाछले पहर मैं अपणी आतमा नैं ठीक-ठीक देख्या करै, सोच्या करै अक् मनैं के कर्‌या सै, के करणा सै अर इसा कुण-सा काम सै, जिसनैं करण की ताकत होते-सुहात्ते भी मैं परमाद के बस हो कै कोन्यां करदा।

13. (ओ न्यूं भी सोच्या करै अक्) मेरे परमाद के बस होणे नैं कोए ओर देक्खै सै या अपणी गलती नैं मैं आप्पै ए देख लिया करूँ! वा कौण-सी गलती सै, जो मेरे तै छुटदी कोन्यां? इस तरिया अपणे आप्पे नैं ठीक-ठीक देखता होया साद्धु आण आल़े टैम मैं अपणै कोये भी दोस ना लाग्गण दे अर पाप-करमां मैं ना बंधै।

14. अपणे आप्पे नैं कदे भी अर कहीं भी मन-बचन-काया तै गिरता होया देखै तो श्याणा अर धीरज आल़ा साद्धु जिबै ए उस्से तरियां सिंभल़ जा जिस तरियां आच्छी अर ऊँच्ची नसल का सीख्या होया घोड़ा लगाम खैंचते ए सिंभल़ जाया करै।

15. दुनिया मैं ओ ए माणस श्याणा कुहाया करै, जिसनैं अपणी सारी इंदरी जीत ली हों, जिसके जी मैं संजम पाल़ण का धीरज हो अर जिसके तीन्नूँ योग हमेस्सां बस मैं रह्त्ते हों। ओ ए दुनिया मैं संजम जीण आल़ा होया करै।

मूल: अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो,
सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ,?
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ॥16॥ –त्ति बेमि।

छाया : आत्मा खलु सततं रक्षितव्यः, सर्वेन्द्रियैः सुसमाहितैः।
अरक्षितो जातिपथमुपैति, सुरक्षितः सर्वदुःखेभ्यो मुच्यते।।
–इति ब्रवीमि।

॥ इअ दसवेआलिअसुत्तस्स विवित्तचरिआ बीआ चुलिआ समत्ता॥

16. सारी इंदरियां नैं आच्छी तरियां काबू करकै (पाप तै, सारे करमां तै) अपणी आतमा हमेस्सां बचाणी चहिए। ना बचाई होई आतमा जनम-मरण के चक्कर मैं फँस जाया करै अर बचाई होई आतमा सारे दुक्खाँ तै छूट जाया करै।

–न्यूँ मैं कहूँ सूँ।

॥ विविक्तचर्या नाम की दूसरी चूलिका समाप्त ॥

परिशिष्ट - 1

दशवैकालिक के सुभाषित

1. धम्मो मंगलमुक्किट्ठं; अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो॥ 1/1

2. विहंगमा च पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया। 1/3

3. वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ। 1/4

4. महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया। 1/5

5. कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए। 2/1

6. वत्थ गंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइत्ति वुच्चइ॥ 2/2

7. जे य कंते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठिकुव्वइ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चई॥ 2/3

8. कामे कमाही कमियं खु दुक्खं। 2/5

9. वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे। 2/7

10. जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बन्धइ॥ 4/8

11. पढमं नाणं तओ दया। 4/10

12. अन्नाणी किं काही, किं वा नाही सेयपावगं? 4/10

13. जं सेयं तं समायरे। 4/11

परिशिष्ट - 1

सिरी दसवैकालिक सुत्तर की कहबत

1. धरम सब तै बड्डा मंगल सै। अहिंसा, संजम अर तप धरम सैं। धरम मैं जिस (माणस) का जी टिक जाया करै, उसनै द्यौता भी निमस्कार कर्या करैं। –1/1
2. साद्धु (उस्सै तरियाँ) दाता का दिया होया भोजन–पाणी लिया करैं, भौंरा जिस तरियाँ फूल्लाँ तै रस। –1/3
3. हम (साद्धु) अपणी जरूरत इस तरियां पूरी करैं सैं जिसतै किस्से नै भी ना कोये दुख हो अर ना नुकसान। –1/4
4. ज्ञान्नी साद्धु भौंरे की तरियाँ किसे एक माणस या चीज के आसरे कोन्या रह्या करदे। जहाँ तैं रस मिलै, वहीं तै ले लिया करैं। –1/5
5. संसारी सुक्खाँ मैं जी लाण आला अपणे साद्धु–धरम नैं क्यूकर पालैगा? –2/1
6. सुथरे कपड़ों, खुसबूदार चीजों, गहणों, लुगाई अर मुलाम बिछौणे (वगैरा) का सुख जो मजबूर होण के कारण नहीं ले सकदा, ओ त्याग्गी कोन्या होया करदा। –2/2
7. त्याग्गी ओ होया करै जो अपणी मरजी अर सुक्खाँ की सारी चीजाँ का मालिक होते–सुहात्ते भी सुक्खाँ तै मुँह फेर लिया करै। –2/3
8. चाह्ना दूर हटाण का मतलब सारे दुख अर कलेस मिटणा सै। –2/5
9. संसारी सुक्खाँ की करी होई उलटी (कै) भी पीणा चाह्ण तै तो मर जाणा आच्छा सै। –2/7
10. जतना तै (पूरा ध्यान दे कै, देखभाल कै जीवाँ नैं बचा कै) चाल्लै, जतना तै खड़्या हो, जतना तै बैट्ठै, जतना तै खावै अर जतना तै बोल्लै तो जीव पाप–करम कोन्या बांध्या करदा। –4/8
11. पहलाँ ग्यान होया करै अर फेर आचरण। –4/10
12. ग्यान ए ना हो तो कोये के करैगा? उसनैं के बेरा लगैगा अक् पाप के सै, पुन्न के सै? –4/10
13. जो भला करणिया हो, उसके हिसाब तै ए काम करणा चहिए। –4/11

14. जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाही संवरं? 4/12

15. दवदवस्स न गच्छेज्जा। 5/1/14

16. हसंतो नाभिगच्छेज्जा। 5/1/14

17. संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए। 5/1/16

18. असंसत्तं पलोइज्जा। 5/1/23

19. उप्फुल्लं न विणिज्झाए। 5/1/23

20. निअट्टिज्ज अयंपिरो। 5/1/23

21. अकप्पियं न गिण्हिज्जा। 5/1/27

22. छंदं से पडिलेहए। 5/1/37

23. महुघयं व भुंजिज्ज संजए। 5/1/97

24. उप्पण्णं नाइहीलिज्जा। 5/1/99

25. मुहादाइ मुहाजीवी, दो वि गच्छन्ति सुग्गइं। 5/1/100

26. काले कालं समायरे। 5/2/4

27. अलाभोत्ति न सोइज्जा, तवोत्ति अहियासए। 5/2/6

28. अदीणो वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडिए। 5/2/28

29. पूयणट्ठा जसोकामी, माणसंमाणकामए।
बहुं पसवई पावं, मायासल्लं च कुव्वइ। 5/2/37

30. पणीयं वज्जए रसं। 5/2/42

31. अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं वि वज्जए। 5/2/51

14. जीवाँ का अर अजीवाँ का जिसनैं ग्यान ए कोन्या हो, ओ संजम (साद्धुपणा) नै किस तरियाँ सिमझैगा? –4/12

15. साद्धु कदे भी तौला–तौला या भाजदा होया ना चाल्लै। –5/1/14

16. साद्धु कदे भी हाँसता होया ना चाल्लै। –5/1/14

17. कलेस या बेचैनी पैदा करण आली सारी जंगाँ तै दूर रहणा चहिए। –5/1/16

18. ललचाई आँक्खाँ तै नहीं देखणा चहिए। –5/1/23

19. दीदे पाड़ कै नहीं देखणा चहिए। –5/1/23

20. किसे कै काम ना बणै तो वहाँ तै बोलबाले उलटे आ जाओ। –5/1/23

21. कोए भी चीज कलपदी (सास्तराँ मैं बताई बात्ताँ के हिसाब तै ठीक) ना हो तो नहीं लेणी चहिए। –5/1/27

22. दूसरे जणे की नीत या उसके मन की हाल्लत जरूर देखणी चहिए। –5/1/37

23. साद्धु, सुआद या बेसुआद, जीसा भी भोजन–पाणी मिल जा, उसे नैं घी–बूरा मान कै राज्जी हो कै खावै–पीवै। –5/1/97

24. टैम पै मिल्ली होई ठीक चीज बिसराणी नहीं चहिए। –5/1/99

25. बिना सुआरथ की भौअना राक्खे देण आले अर बिना सुआरथ का बिचार राक्खे लेण आले, दोन्नूँ ए ऊँच्ची अर आच्छी गती (जून) पाया करैं। –5/1/100

26. ठीक टैम पै ए सारे कान करणे चहिएँ। –5/2/4

27. साद्धु नैं कलपदा होया भोजन–पाणी ना मिल्लै तो दुक्ख ना मानै। भूख के दुक्ख नैं बरदास करदा होया न्यूँ सोचै अक् इस तरियाँ मेरी तपश्या हो गी। –5/2/6

28. आतमा का ग्यानी साद्धु सारी जिंदगी अपणे नैं हीणा ना सिमझै। कदे भी मन मैं बेचैन्नी ना आण दे। –5/2/28

29. अपणी मानता अर इज्जत की झूठी चाहना राक्खण आला साद्धु उसकी खात्तर कई तरियाँ का छल–कपट करकै घणे भूण्डे पाप–करम बाँध लिया करै। –5/2/37

30. बिगाड़ करण आला भोजन–पाणी नहीं लेणा चहिए। –5/2/42

31. श्याणा (संजम नैं आच्छी तरियाँ पालण आला) साद्धु राई जोड भी छल–कपट ना करै अर झूठ ना बोल्लै। –5/2/51

32. अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो। 6/9

33. सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं। 6/11

34. मुसावाओ उ लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरहिओ। 6/13

35. जे सिया सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से। 6/19

36. मुच्छा परिग्गहो वुत्तो। 6/21

37. अवि अप्पणो वि देहंमि, नायरंति ममाइयं। 6/22

38. कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए। 6/59

39. जमट्ठंतु न जाणेज्ज, एवमेयंति नो वए। 7/8

40. जत्थ संका भवे तं तु, एवमेयंति नो वए। 7/9

41. सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो। 7/11

42. न लवे असाहुं साहु त्ति, साहुं साहु त्ति आलवे। 7/48

43. न हासमाणो वि गिरं वइज्जा। 7/54

44. मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए, सयाण मज्झे लहई पसंसणं। 7/55

45. वइज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं। 7/56

46. अप्पमत्तो जये निच्चं। 8/16

47. बहुं सुणेहिं कन्नेहिं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ॥ 8/20

48. कन्नसोक्खेहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए। 8/26

32. सारे जीवां के परति संजम राक्खणा ए अहिंसा सै। –6/9

33. सारे जीव सुख तै जीणा चाह्वैं सैं। मरणा कोए न्हीं चाह्ता। –6/11

34. दुनिया के सारे भले माणसाँ नैं झूठ की बुराई करी सै। –6/13

35. राई जोड भी चीज कट्ठी करण की चाह्ना राखणिया साद्धु गिरस्थी ए होया करै, साद्धु कोन्याँ होया करदा। –6/19

36. मूर्च्छा (चीजाँ के लालच) की भौअना ए असली परिग्रह होया करै। –6/21

37. साद्धु और तो के, अपणे सरीर मैं भी ममता कोन्याँ राक्ख्या करदे।–6/22

38. काम–वासना बढाण आल़ी बात्ताँ अर जँगा तै साद्धु सदा दूर रह्वै। –6/59

39. जिस बात का आच्छी (पूरी) तरियाँ बेरा ना हो, उसनैं न्यूँ न्हीं कह्वै अक् या बात न्यूँ ए सै। –7/8

40. जिस बात मैं कोए सक–सुबा हो, उसकी बाब्बत पक्की बात नहीं कह्णी चहिए। –7/9

41. वा सच्चाई भी नहीं बोलणी चहिए जिसतै कोए पाप–करम बंधता हो। –7/11

42. किसे तरियाँ के दबाव या लोभ के बस हो कै जो साद्धु ना हो, उसतै साद्धु नहीं कहणा चहिए। जो साद्धु हो, उसे नै साद्धु कहणा चहिए।–7/48

43. हाँसदे होए नहीं बोलणा चहिए। –7/54

44. जो बोलण तै पहलां पूरा बिचार कर कै सबका भला करण आल़ी बात कह्या करै अर फालतू नहीं बोल्या करदा ओ आच्छे माणसां मैं आच्छा कुहाया करै। –7/55

45. ग्यान्नी अपणा अर दूसरां का भला करण आल़ी, सुथरी अर मीठी बाणी ए बोलै। –7/56

46. हमेसां धरम की साधना मैं चोकस रहणा चहिए। –8/16

47. गिरस्थियां के संपरक मैं आण की वजह तै साद्धु कान्नां तै आच्छी–बुरी सब तरियां की बात सुण्या करै अर इसे तरियां आंक्खां तै भी आच्छा–बुरा बहोत कुछ देख्या करै। जो कुछ भी ओ देक्खै अर सुणै, ओ सब लोगां के श्यामीं परगट करणा ठीक न्हीं होया करदा। –8/20

48. कान्नां नैं प्यारे अर मीठे लागण आल़े थोथे बोलां तैं प्रेम नहीं रखणा चहिए। –8/26

49. देहदुक्खं महाफलं। 8/27

50. थोवं लद्धुं न खिंसए। 8/29

51. न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे। 8/30

52. सुय लाभे न मज्जिज्जा। 8/30

53. बीयं तं न समायरे। 8/31

54. बलं थामं च पेहाए, सद्धामारुग्गमप्पणो।
खेत्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं निजुंजए॥ 8/35

55. जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे॥ 8/36

56. कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो॥ 8/37

57. कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्व विणासणो॥ 8/38

58. उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
माययमज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे॥ 8/39

59. रायणिएसु विणयं पउंजे। 8/41

60. सप्पहासं विवज्जए। 8/42

61. अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स अन्तरा। 8/47

62. पिट्ठिमंसं न खाइज्जा। 8/47

63. दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुन्नं विअं जियं।
अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं॥ 8/49

49. सरीर के कष्ट (समता राख कै) सह्न करण तै ए (मोक्स का) महाफल मिल्या करै। –8/27

50. मनभात्ता लाभ ना मिल्लै तो दुख मैं बौला न होवै। –8/29

51. दूसरे की बेसती न्हीं करणी चहिए अर अपणे आपे नैं भोत आच्छा अर ऊँच्चा नहीं सिमझणा चहिए। –8/30

52. ग्यान पा कै घमंड मत ना करो। –8/30

53. गलती दुबारा ना होवै। –8/31

54. अपणे मन की ताक्कत, सरधा, सेहत, द्रव्यै, छेत्तर, काल अर भाव वगैरा का बिचार करकै ए अपणे आपे नैं किसे काम मैं लाणा चहिए। –8/35

55. जिब तक सरीर बुढापे तै दुक्खी ना हो, जिब तक सरीर पै बेमारियां का जमघट ना लाग्गै, जिब तक कान, आंख बरगी इंदरियां कमजोर हो कै काम करण मैं लाचार ना हों तब तक चौक्कस हो कै धरम का आचरण कर लेणा चहिए। –8/36

56. जो अपणी आतमा का भला चाह्वै सै, उसनैं गुस्से, घमंड, छल–कपट अर लोभ, इन चार बड्डे दोसां तै पूरी तरियां बचणा चहिए। ये चारूं दोस पाप–करम बड्ढाण आले सैं। –8/37

57. गुस्सा प्रेम का नास कर्या करै, घमंड बिने (नरमाई) का नास कर्या करै, छल–कपट दोस्ती का नास कर्या करै अर लोभ सारे के सारे सद्गुणां का नास कर दिया करै। –8/38

58. शांती की भौअना तै गुस्से का नास करो, नरमाई तै घमंड नैं जीतो, सरलता तै छल–कपट नैं अर संतोस तै लोभ नैं जीत ल्यो। –8/39

59. अपणे तै दीक्सा, ग्यान वगैरा मैं बडाँ के साथ बिनै का बरताव करणा चहिए। –8/41

60. जोर तै नहीं हाँसणा चहिए। –8/42

61. बूझे बिना खामखाँ किसे के बीच मैं नहीं बोल्या करदे। –8/47

62. किसे के पाछै उसकी चुगली करणा उसकी कमर का माँस खाण बरगा सै अर यो काम कदे नहीं करणा। –8/47

63. आतमा के ध्यान मैं रह्ण आला साद्धु वा हे भासा बोलै जो उसके तजरबे तै ठीक हो, जिसमैं कोए सक–सुबा ना हो, जो पूरी बात कह्ण आली हो, साफ हो अर जो थोड़े सबदां मैं अराम तै बिना डर के अर ठीक–ठीक अवाज मैं बोली जावै। –8/49

64. कुज्जा साहूहिं संथवं। 8/53

65. न या वि मोक्खो गुरुहीलणाए। 9/1/7

66. जस्संतिए धम्मपयाइं सिक्खे, तस्संतिए वेणइय पउंजे। 9/1/12

67. एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो य से मोक्खो। 9/2/2

68. जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे।
वुज्झइ से अविणीयप्पा, कट्ठं सोयगयं जहा॥ 9/2/3

69. जे आयरिय-उवज्झायाणं, सुस्सूसा वयणं करे।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति, जलसित्ता इव पायवा॥ 9/2/12

70. विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणीयस्स य। 9/2/22

71. असंविभागी नहु तस्स मोक्खो। 9/2/23

72. जो छंदमाराहयई स पुज्जो। 9/3/1

73. वक्ककरे स पुज्जो। 9/3/3

74. अलद्धुयं नो परिदेवइज्जा, लद्धुं न विकत्थयई स पुज्जो। 9/3/4

75. वाया दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि। 9/3/7

76. गुणेहिं साहू, अगुणेहिंऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुञ्चऽसाहू। 9/3/11

77. वियाणिया अप्पगमप्पएणं, जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो। 9/3/11

78. निच्चं चित्त समाहिओ हवेज्जा। 10/1

79. वंतं नो पडिआयइ जे स भिक्खू। 10/1

80. अतंसमे मन्निज्ज छप्पिकाए। 10/5

64. सदा सज्जनां के साथ ऐ परिचै या बातचीत करणी चहिए। –8/53

65. गुरु की असातना करण आले चेल्ले नैं मोक्स कदे नहीं मिल्लै। –9/1/7

66. जिस गुरु के धोरै आतमा का ग्यान देणिये धरम–सास्तरां के गह्रे पदां की सिक्सा पाई हो, उसतैं हमेस्साँ बिनै भाव बरतणा चहिए। –9/1/12

67. धरम के पेड की जड़ सै बिनय अर आखरी फल सै मोक्स। –9/2/2

68. गुस्सैल, अग्यानी, अकड़बाज, कड़ुआ बोल्लणिए, छल –कपट करणिए अर असंजमी बिनैहीन माणस पाणी के भ्हाव मैं पड़े काठ की तरियां संसार के समुंदर मैं बहते रह्या करैं। –9/2/3

69. जो साद्धु अचार्यां अर उपाध्यायां की सेवा–भगती करण आले, उनकी अग्या मैं चालण आले होया करैं, उनका ग्यान उन पेड्डां की तरियां लगातार बढदा ए जाया करै, जिनकी आच्छी तरियां सिंचाई होंदी हो। –9/2/12

70. बिनयहीन नैं बिपदा मिल्या करै अर बिनयवान् नैं संपदा। –9/2/22

71. सारी चीज बरोबर ना बांटण आले नैं मोक्स नहीं मिल्या करदा। –9/2/23

72. गुरुआँ की भौअना की कदर करण आला ए पूज बण्या करै। –9/3/1

73. गुरुआँ की अग्या पालण आला ए पूज बण्या करै। –9/3/3

74. जो लाभ ना होण तै दुक्खी कोन्यां होंदे अर होण तै घमंड नहीं कर्‌या करदे अर डींग नहीं हाँक्या करदे, वैं ए पूज बण्या करैं। –9/3/4

75. कठोर अर बुरे बोल कई जनमाँ तक बैर–भौअना बढाण आले अर भयान्नक होया करैं। –9/3/7

76. गुणां तै भर्‌या होण तै ए कोए साद्धु होया करै अर बुराइयां तै भर्‌या होण तै ए नहीं होया करदा। इस कारण गुणां नैं तो ले ल्यो अर बुराइयां नैं छोड द्यो। –9/3/11

77. आतमा नैं आतमा तै पिछाण कै प्रेम अर बैर भौअना मैं समता राक्खण आला ए पूज बण्या करै। –9/3/11

78. हमेस्साँ समाधी मैं राजी रहो। –10/1

79. जो त्याग्गे होए बिसय –भोग्गां नैं हट कै नहीं भोग्या करदा ओ ए साच्चा साद्धु सै। –10/1

80. छहकाय के सारे जीवां नैं अपणे जिसा सिमझो। –10/5

81. सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे। 10/7

82. न य वुग्गहियं कहं कहिज्जा। 10/10

83. उवसंते अविहेडए जे स भिक्खू। 10/10

84. पुढविसमो मुणी हवेज्जा। 10/13

85. पत्तेयं पुण्ण पावं। चू. 1/1

86. संभिन्नवत्तस्स य हिट्ठिमा गई। चू. 1/13

87. बोही य से नो सुलहा पुणो पुणो। चू. 1/14

88. चइज्ज देहं, न हु धम्मसासणं चू. 1/17

89. अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो। चू. 2/3

90. असंकिलिट्ठेहि समं वसेज्जा। चू. 2/9

91. जो पुव्वरत्तावररत्तकाले, संपेहए अप्पगमप्पएणं।
किं मे कडं किंच मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं न समायरमि।।
चू. 2/12

92. अप्पा हु खलु सययं रक्खिअव्वो। चू. 2/16

81. धरम के हिसाब तै सब कुछ देक्खण आल़ा कदे बौल़ा नहीं बण्या करदा। –10/7

82. कल़ेस करण आल़ी बात नहीं करवा होंदी। –10/10

83. आच्छा साद्धु ओ सै जो कत्ती ठंडा अर संजम के काम्मां मैं कत्ती चोक्कस रह्या करै। –10/10

84. साद्धु ओ सै जो धरती की तरियां सब कुछ बरदास करण आल़ा अर सबनैं माफ करण आल़ा होया करै। –10/13

85. पुन्न अर पाप सबका अपणा–अपणा होया करै। –चूलिका–1/1

86. धरम (बरताँ) तै गिर्या होया अर पाप करणिया नीच गतियां मैं जाया करै। –चूलिका–1/13

87. धरम का ग्यान बार–बार सह्जै–सी कोन्यां मिल्या करदा। –चूलिका–1/14

88. जरूरत पड़ ज्या तो सरीर बेसक छूटै पर धरम नहीं छोडणा चहिए। –चूलिका–1/17

89. संसार बहाव (भोग्गाँ) मैं बहण जिसा सै अर इस तै उलटे बहाव मैं बहणा संसार–समुंदर तै पार उतरणा सै। –चूलिका–2/3

90. कल़ेस तै दूर रह्ण आल़ाँ की संगत मैं रहो। –चूलिका–2/9

91. साद्धु रात के पहले अर पाछले पहर मैं अपणी आतमा नैं ठीक–ठीक देख्या करै, सोच्या करै अक् मनैं के कर्या सै, के करणा सै अर इसा कुण–सा काम सै, जिसनैं करण की ताकत होते–सुहात्ते भी मैं परमाद के बस हो कै कोन्यां करदा। –चूलिका–2/12

92. अपणी आतमा (पाप तै, सारे करमां तै) हमेस्सां बचाणी चहिए। –चूलिका–2/16

परिशिष्ट - 2

दशवैकालिक के पारिभाषिक शब्द

अंगधन कुल : सर्प जाति का एक ऊँचा कुल।

अचित : जिसमैं जीव ना हो।

अचौर्य : किसे की चीज उसके दिये बिना कदे ना लेण का, तीसरा महावरत।

अजीव : जिसमैं जी न हो। इसनैं अचित भी कह्या करैं।

अण्ड-सूक्ष्म : माक्खी, कीड़ी, मकड़ी वगैरा के कत्ती छोट्टे अण्डे।

अध्यवतर : अपणी खात्तर भोजन-पाणी बणांदे होये साद्धुआँ नैं याद करकै बढ़ाया होया भोजन-पाणी।

अनाचीर्ण : ना करण के काम।

अपरिग्रह : धन-माया अर उसका लालच कत्ती छोड्डण आला, पाँचवाँ महावरत।

अप्काय : पाणी के सरीर आले जीव।

अरिहंत : पूरण ग्यान, केवल ग्यान अर केवल दरसन पाए होए वो महापुरस, जिननै भगवान् कया करैं।

अलोक : अकास का वो हिस्सा जिसमैं कुच्छ बी कोन्या सै।

अहिंसा : सारे जीवाँ नै ना सताण अर ना मारण आला पहला महावरत।

आचार-समाधि : आचार समाधी के चार रूप ये सैं-1. इस संसार के फैदे खात्तर चारित्तर नहीं पालणा चहिए, 2. दूसरी दुनिया के फैदे खात्तर चारित्तर नहीं पालणा चहिए, 3. नाम कमाण अर अपणी तारीफ कराण की खात्तर चारित्तर नहीं पालणा चहिए, 4. बस अरिहंत भगवान के बताए होए संबर चारित्तर धरम पाण नैं छोड कै और किसे भी मकसद तै चारित्तर नहीं पालणा चहिए।

आचार्य : संघ के रथ नैं चलाण आला या संजम पै चाल्लण अर चलाण आला बड्डा धरम गुरु।

आलोचना : अपणे करे होए पाप की आप-ए गुरु के शाम्मी बुराई करणा/बताणा।

आशातना : गुरु नै या अपणैं बड्डे नै सताणा। उसकी बेइज्जती करणा।

आशीविष सर्प : कसूत्ते जहर आला साँप।

आस्त्रव : आतमा मैं करमां नैं लाण आले रस्ते या काम।

आहृत : साद्धु की खात्तर स्थानक मैं ला कै दिया होया भोजन-पाणी।

उत्तिंग-सूक्ष्म : दीमक बरगे जीवां की बांबी, जिसके जीव बाहर तै नहीं दीखदे।

उपाध्याय : सास्तर पढाण आला ग्यान्नी साद्धु।

उपाश्रय : साद्धु-सतियाँ के ठहरने की जंगा या स्थानक।

एषणा : सास्तर या भगवान के बताए तरीक्के तै भोजन-पाणी ल्याणा।

औद्देशिक : साद्धु की ए खात्तर बणाया होया भोजन-पाणी।

करण : (कोये काम) करणा, कराणा अर करण आले को ठीक बताणा।

कल्पता : सास्तराँ में बताई बात्ताँ के हिसाब तै ठीक।

कषाय : आत्मा-जीव नै गिराण आले ये चार भूण्डे काम-गुस्सा, घमण्ड, छल-कपट, लोभ।

कायोत्सर्ग : देही की ममता छोड्डण आला ध्यान।

काल : बखत अर मौत।

केवल ज्ञान : सब किमे जाणन आला ज्ञान। पूरण बिरम ज्ञान।

केवल दर्शन : सब किम् देखण की ताकत।

क्रीतकृत : साद्धु की ए खात्तर मोल लिया भोजन-पाणी।

क्षेत्र : जंगा।

गंधन कुल : सरप जाति का नीचा कुल।

गति : चार जून। द्यौता, माणस, तिर्यंच (पसु) अर नरक।

गुप्ति : अपणे मन-वचन-काया नैं पाप करण तै रोक कै राखणा।

गोचरी : साद्धुआँ के भोजन-पाणी लेण का ओ तरीक्का, जिसमैं कोए दोस न हो।

चारित्र : मोक्स मैं ले जाण आला आचरण।

छह काय के जीव: छह तरियां के सरीर आले जीव। माटी, पाणी, हवा, वनास्पति के सरीर आले अर त्रसकाय के (हालण-चालण लायक सरीर वाले) जीव।

जितेन्द्रिय : जिसनैं अपणी इंदरियाँ पै अर अपणे मन पै काबू कर लिया हो।

जीव : जिसमैं जी हो।

तप-समाधि : तप समाधी के चार रूप ये सैं–1. साद्धु नैं इस संसार के सुख पाण की खात्तर तप नहीं करणा चहिए, 2. सुरग वगैरा मैं मिल्लण आले सुख पाण की खात्तर तप नहीं करणा चहिए, 3. नाम कमाण अर अपणी तारीफ कराण की खात्तर तप नहीं करणा चहिए, 4. बस आपणे करम झाड़ण काटण नैं छोड कै और किसे भी मकसद तै तप नहीं करणा चहिए।

तिर्यंच : परिंदाँ अर जानवराँ की जून।

तीर्थंकर : औरां के किल्लाण खात्तर धर्म-संघ का तीरथ बणान आले केवल ग्यान्नी भगवान।

तेजस्काय : आग के सरीर आले जीव।

त्याग : किसे चीज अर काम नैं कत्ती छोडणा।

त्रस : हालण-चालण आले जीव।

दीक्षा : साद्धु का धरम निभाण का नेम लेणा। सिन्नास लेणा।

देव : सुख भोग्गण आली गति मैं जनमे होए जीव। (आत्मा)

द्रव्य : चीज़ या बस्तु।

द्वेष : मनमुटाव, दुसमनी के भाव।

नरक : दुःख देण आली जून।

निकाचित कर्म : इसे करम, जिनके फल भोगे बिना जिनतै छुटकारा कोन्याँ होंदा।

निर्जरा : आतमा तै पाप करमां नैं दूर करणा।

पनक-सूक्ष्म : तरां-तरां की काई के सरीर आले बारीक जीव।

परिग्रह : धन-माया अर उसका लालच।

परीषह : संजम की साधना मैं आण आले दुक्ख।

पल्योपम : सास्तरां मैं बताई होई घणी लाम्बी उमर।

पश्चात्कर्म दोष : साद्धु तै भोजन-पाणी दियें पाछै बरतन, कपड़े, हात्थ वगैरा सचित पाणी तै धोणे पड़ैं तो यो दोस लाग्य करै।

पिण्डैषणा : भोजन-पाणी की सास्तरां के हिसाब तै होण आली चाह्ना।

पुष्प-सूक्ष्म : बड़ बरगे सिमझ मैं ना आण आले फूलां के सरीर आले बारीक जीव।

पूतिकर्म : साद्धु को गाम-नगर में आया होया जाण कै, गिरेस्थी आपणा भोजन बनाते हुए, साद्धु के लिये भोजन को बढ़ा लेना। ज्यादा ए बणाना।

पूर्वकर्म दोष : साद्धु तै भोजन-पाणी देण तै पहलां बरतन, कपड़े, हात्थ वगैरा सचित पाणी तै धोणे पड़ैं तो यो दोस लाग्या करै।

पृथ्वीकाय : माटी के सरीर आले जीव।

प्रतिक्रमण : अपणे करे होये पाप की आपै बुराइ करते होए अपणे आपे नैं उसतै दूर करणा।

प्रतिमा : खास तरियां की तपस्या।

प्रतिलेखना : कपड़े अर पातरां की देखभाल, झाड़-पूंझ।

प्रमाद : धरम के काम्मां तै दूर राखण आल़ा सुभा।

प्राण-सूक्ष्म : कुंथू बरगे इतणे बारीक जीव, जो हालैं तो दीखैं अर ना हालैं तो ना दीखैं।

प्रामित्य : साद्धु की ए खात्तर उधार लिया होया भोजन-पाणी।

प्रासुक : बिना जीवां की चीज, जिसके लेण या बरतण मैं संजमी कै कोए दोस ना लागै।

बीज-सूक्ष्म : साल वगैरा पेड्डां के आगे के हिस्सां पै रहणिए छोटे-छोटे कणां के सरीर आल़े बारीक जीव।।

ब्रह्मचर्य : काम-भोग्गाँ तै बचाण आल़ा साद्धुआं का चोत्था महाबरत।

भवनवासी : एक तरियां के देव।

भाव : भावना, सोच-बिचार।

भाषा-समिति : सास्तरां मैं बताई होई भासा के मुताबिक बोलना।

महाव्रत : साधु-सतियाँ के बड्डे पांच बरत।

मिथ्यात्व : सांच नै झूठ अर झूठ नै सांच मानणा।

मिश्रजात : अपणी अर साद्धुआँ की खात्तर मिला कै बणाया होया भोजन-पाणी।

मोक्ष : वा जंगा, जहां जा कै जीव जनम-मरण तै सदा के लिए छूट जाया करै।

मोह : जीव अर निरजीव तै घणा लगाव रखणा।

यतना : पूरा ध्यान दे कै, देखभाल कै जीवाँ नैं बचा कै सारे काम करणा।

योग : मन (भावना), वचन (बोल), काया (काम)।

राग : लगाव, परेम-भाव।

लोक : अकास का वो हिस्सा जिसमैं या दुनिया सै।

वनस्पतिकाय : पेड़-पौद्धाँ के सरीर आल़े जीव।

वायुकाय : हवा के सरीर आल़े जीव।

विनय : नरमाई।

विनय-समाधि : बिनय समाधी के चार रूप ये सैं–1. गुरु के अनुसासन मैं रह्या होया, गुरु के आच्छे बोल सुणन की चाह्ना राखणिया, 2. गुरु के बोलां नैं धरम के हिसाब तै मान्नणिया, 3. सास्तरां के ग्यान की पूरी तरियां साधना करणिया, अर, 4. घमंड तै अपणी तारीफ आप ना करणिया।

विहार : साद्धुआँ का एक तै दूसरी जंगा जाणा।

विचरण : साद्धुआँ का एक गाम-नगर तैं दूसरे गाम-नगर में जाणा।

वैमानिक देव : सब तै ऊँच्चे देव।

शस्त्र : जीवाँ का जी खतम करण आल़ी या सचित नैं अचित करण आल़ी कोये चीज।

शैलेशी दशा : पहाड़ जीसी कत्ती ना काँप्पण आल़ी मुकती तै पैहल्याँ की साधना।

श्रुत-समाधि : स्रुत समाधी के चार रूप ये सैं–1. मनैं सास्तरां का ग्यान मिल्लैगा, इस कारण तै पढाई करणी चहिए, 2. मेरा ध्यान एक्कै जंगा जम ज्यागा, इस कारण तै पढाई करणी चहिए, 3. मैं अपणी आतमा नैं धरम मैं जमा सकूँगा, इस कारण तै सास्तर पढणा चहिए, अर 4. मैं आप धरम में जम के दूस्सरे भव्य जीवां न भी धरम में जमा सकूँगा, इस कारण तै मनै सास्तरां की पढाई करणी चहिए।

संघटन : छूणा। संजमी तै भोजन-पाणी देंदे होए किसे का हाथ किसे दोस आल़ी चीज कै लाग ज्या तो संघट्टे का दोस लाग्या करै।

संयम : सारे जीवां तै कदे भी कोए दुक्ख ना देणा।

संयोग : दुनिया के रिस्ते-नाते अर उनमैं मोह-ममता।

संवर : आतमा तक आण आले करमां का रस्ता बंद करण के तरीक्के।

सचित : जिसमैं जीव हों।

सत्य : झूठ का कत्ती त्याग कराण आला साद्धुआं का दूसरा महाबरत।

समता : सुख-दुख मैं एक-सी भौअना राखणा।

समाधि : धरम मैं जी का इसा लाग जाणा अक् वहीं लाग्या रह्वै।

सागरोपम : सास्तरां मैं बताई होई घणी लाम्बी उमर।

साधु : मोक्स मैं जाण खात्तर पांच महाबरत ले कै साधना करण आला महापुरुस।

सिद्ध : दुनिया की सबतै ऊँच्ची अर आखरी जंगा। मोक्स में जाण आली आत्मा।

सिद्धि : दुनिया की सबतै ऊँच्ची अर आखरी जंगा, मोक्स।

स्थावर : एक ए जंगा पर रहण आले जीव।

स्नेह-सूक्ष्म : पाणी के बारीक जीव।

स्वाध्याय : सास्तर वगैरा पढ कै अपणे आपे नैं पिछाणना।

हरित-सूक्ष्म : हालोहाल जाम्मण आले बारीक जीव जिनका सरीर माट्टी के रंग के अंकुरां जिसा हो।

हिंसा : जीवाँ नैं सताणा अर मारणा।

○○○

अस्वाध्याय-काल

अस्वाध्याय काल

शास्त्र-स्वाध्याय आत्मशुद्धि का प्रमुख साधन है। स्वाध्याय से आत्म-प्रदेशों पर आवृत्त ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है जिससे आत्मा का ज्ञानमय सुनिर्मल स्वरूप उद्घाटित होता है। आत्मशुद्धि अथवा निर्जरा के प्रधान हेतुभूत बारह प्रकार के तपों में स्वाध्याय का दसवां स्थान है। यह एक आंतरिक तप है। चित्त की एकाग्रता, हृदय की निष्ठा एवं अन्तर्-बाह्य शुद्धि पूर्वक की गई स्वाध्याय शीघ्र ही कर्म-मलों को जलाकर आत्मा को उसके मौलिक स्वरूप-परमात्मस्वरूप में प्रतिष्ठित कर देती है।

आत्म-शुद्धि का हेतुभूत होने से यह आवश्यक है कि स्वाध्याय-साधना के लिए द्रव्यशुद्धि एवं आगम-विहित समय का भी विशेष ध्यान रखा जाए। इस विषय पर आगमवेत्ता महापुरुषों द्वारा पर्याप्त चिन्तन किया गया है। जैन परम्परा के समान ही वैदिक परम्परा में भी वेदों, शास्त्रों, स्मृतियों आदि आर्षग्रन्थों की स्वाध्याय के लिए अनध्यायकाल का विधान है।

स्वाध्याय के लिए अनुचित स्थान या समय को अनध्याय या अस्वाध्याय कहा गया है। जैन आगमों के मूल पद सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित एवं स्वरविद्या से युक्त हैं। इनका भी अस्वाध्याय काल में स्वाध्याय करना वर्जित है। स्थानांग सूत्र[1] में बताए गए बत्तीस प्रकार के अस्वाध्याय का संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है–

---

1. दसविहे अंतलिक्खिते असज्झाए पण्णत्ते, तं जहा–उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, निग्घाते, जुवते, जक्खालित्ते, धूमिता, महिता, रयउग्घाते।
दसविहे ओरालिते असज्झातिते, तं जहा–अट्ठी, मंसं, सोणिते, असुचिसामंते, सुसाणसामंते, चंदोवराते, सूरोवराते, पडने, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे।
–स्थानाङ्गसूत्र, स्थान 10

नो कप्पति निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करित्तए, तं जहा–आसाढपाडिवए, इंदमहपाडिवए कत्तिअपाडिवए सुगिम्हपाडिवए। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा, चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा–पढिमाते, पच्छिमाते, मज्झण्हे अड्ढरत्ते। कप्पई निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा, चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए, तं जहा–पुव्वण्हे अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे।
–स्थानाङ्गसूत्र, स्थान 4, उद्देश 2

आकाश संबंधी 10 अस्वाध्याय

1. **उल्कापात/तारापतन**–यदि बड़े तारे का पतन हो तो एक प्रहर तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

2. **दिग्दाह**–जब तक दिशाओं में लालिमा दिखायी दे, प्रतीत हो कि दिशाएं जल रही हैं, तब तक स्वाध्याय वर्जित है।

3. **गर्जित**–अकाल में मेघ-गर्जन हो तो एक प्रहर तक स्वाध्याय नहीं करनी चाहिए।

4. **विद्युत**–अकाल में बिजली चमके तो एक प्रहर तक अस्वाध्याय काल जानना चाहिए।

5. **निर्घात**–बिना बादलों के ही व्यंतर आदिकृत घोर गर्जना होने पर अथवा बादलों के गरजने पर दो प्रहर तक अस्वाध्याय काल रहता है।

6. **यूपक**–शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया और तृतीया की संध्याओं की प्रभा एवं चन्द्र की प्रभा का संयोग यूपक कहलाता है। यूपक काल में प्रहर रात्रि पर्यंत स्वाध्याय वर्जित है।

7. **यक्षादीप्त**–यक्षादि के प्रभाव से कभी-कभी दिशाओं में बिजली की चमक जैसा प्रकाश होता है जो यक्षादीप्त कहलाता है। यक्षादीप्त होने पर अथवा यक्षाकृति दिखायी देने पर, जब तक दिखायी दे तब तक अस्वाध्याय काल रहता है।

8. **धूमिका कृष्ण**–सर्दी के मौसम में आकाश से गिरने वाली धूएं के वर्ण की धुंध धूमिका कृष्ण कहलाती है। यह जब तक गिरती रहे तब तक स्वाध्याय नहीं करनी चाहिए।

9. **मिहिकाश्वेत**–शीत ऋतु में सूक्ष्म जलकणों के रूप में आकाश से गिरने वाली मिहिका (धुंध) जब तक गिरे तब तक स्वाध्याय वर्जित है।

10. **रज-उद्घात**–आकाश धूल से आच्छादित हो तो, जब तक स्वच्छ न हो तब तक अस्वाध्याय काल रहता है।

औदारिक संबंधी 10 अस्वाध्याय

1-2-3. **हड्डी, मांस, रक्त**–स्वाध्याय भूमि के समीप (60 हाथ तक) यदि तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय जीव की (1) हड्डी (2) मांस, या (3) रक्त पड़ा हो तो जब तक हटाया न जाए तब तक स्वाध्याय नहीं करनी चाहिए।

4. **अशुचि**–स्वाध्याय-स्थल से मल-मूत्र आदि दिखायी पड़ता हो तो जब तक शुद्धि न हो तब तक स्वाध्याय वर्जित है।

5. **श्मशान**–श्मशान-स्थल से चारों ओर सौ-सौ हाथ तक की भूमि में स्वाध्याय नहीं करनी चाहिए।

6. **चन्द्रग्रहण**–चन्द्र ग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह एवं उत्कृष्ट सोलह प्रहर तक अस्वाध्याय काल जानना चाहिए।

7. **सूर्यग्रहण**–चन्द्रग्रहण के समान ही सूर्यग्रहण में भी अस्वाध्याय का यथारूप विधान है।

8. **पतन**–देश के राजा अथवा किसी बड़े राज्याधिकारी का निधन होने पर जब तक उसका अंतिम संस्कार न किया जाए तब तक अस्वाध्याय रहता है। जब तक नए राष्ट्राध्यक्ष की नियुक्ति न हो तब तक मन्द स्वर में स्वाध्याय करनी चाहिए।

9. **राजव्युद्ग्रह**–जिस क्षेत्र में साधु विचरता है उस क्षेत्र के राजा का किसी अन्य राजा से यदि युद्ध हो जाए तो जब तक युद्ध चले तब तक अस्वाध्याय काल रहता है। युद्ध-समाप्ति के एक दिन-रात्रि के पश्चात् ही स्वाध्याय करनी चाहिए।

10. **औदारिक शरीर**–पंचेन्द्रिय जीव का कलेवर यदि उपाश्रय में अथवा स्वाध्याय भूमि के सौ हाथ के दायरे में पड़ा हो तो जब तक वह रहे तब तक अस्वाध्याय रहता है।

काल संबंधी 12 अस्वाध्याय

1-8. **चार महोत्सव एवं चार महाप्रतिपदा**–आषाढ, आश्विन, कार्तिक एवं चैत्र, इन चारों मासों की पूर्णिमाएं चार महोत्सव कहलाती हैं। इन चारों पूर्णिमाओं के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहा जाता है। उक्त चारों महोत्सवों एवं चारों महाप्रतिपदाओं में स्वाध्याय वर्जित है।

9-12. **प्रातः, सांय, मध्याह्न एवं मध्य रात्रि**–प्रातः सूर्य उदय होने से एक घड़ी (24 मिनट) पूर्व एवं एक घड़ी पश्चात् तक स्वाध्याय का निषेध है। इसी प्रकार सूर्य अस्त होने के एक घड़ी पहले एवं एक घड़ी पश्चात्, मध्याह्न से एक घड़ी पहले और एक घड़ी पश्चात्, एवं मध्यरात्रि के एक घड़ी पूर्व एवं एक घड़ी पश्चात् स्वाध्याय नहीं करनी चाहिए।

(आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज
द्वारा स्वीकृत
'अनध्यायकाल' के आधार पर)

सुभद्र-साहित्य

स्तुति :

वीर स्तुति (हिन्दी पद्यानुवाद एवं व्याख्या)	गुरुदेव मुनि रामकृष्ण	स्वाध्याय
उपासना (स्वाध्याय संकलन)	,, ,,	,,
भक्तामर स्तोत्र (हिन्दी पद्यानुवाद एवं व्याख्या)	,, ,,	,,
कल्याण मन्दिर स्तोत्र (हिन्दी पद्यानुवाद एवं व्याख्या)	,, ,,	,,
चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र (हिन्दी पद्यानुवाद एवं व्याख्या)	,, ,,	,,

आगम :

उत्तराध्ययन सूत्र : (संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी व्याख्या)	सुभद्र मुनि	200.00
उत्तराध्ययन सूत्र : (हरियाणवी अनुवाद)	,, ,,	(प्रैस)
दशवैकालिक सूत्रः (हरियाणवी अनुवाद)	,, ,,	(प्रैस)
अन्तकृद्दशांग सूत्र	,, ,,	50.00
विशेषावश्यक भाष्य	,, ,,	500.00
मुक्ति के राही (अन्तकृत-सूत्र बाल-संस्करण)	,, ,,	15.00
महावीर के उपासक (उपासकदशांग-सूत्र बाल-संस्करण)	,, ,,	15.00
ज्ञानभरी कहानियां (ज्ञाताधर्म कथांग-सूत्र बाल संस्करण)	,, ,,	25.00
कर्म फल की कहानियां (विपाक सूत्र-बाल संस्करण)	,, ,,	20.00

काव्य :

मन्दाकिनी (मुक्तक संग्रह)	गुरुदेव मुनि रामकृष्ण	20.00
ऋतम्भरा (मुक्तक संग्रह)	,, ,,	20.00
ज्योत्स्ना (मुक्तक संग्रह)	,, ,,	20.00
ऋषभायण महाकाव्य	सुभद्र मुनि	100.00
वीरायण महाकाव्य	,, ,,	100.00
महाप्राण महाकाव्य	,, ,,	100.00
प्रकाश पर्व महावीर	,, ,,	100.00
जय महाप्राण	,, ,,	(प्रैस)
श्री महावीर कथा	,, ,,	,,
अन्तर्नाद (गीत संग्रह)	अरुण मुनि	स्वाध्याय
यशोगीति (संस्कृत-काव्य)	डॉ. दामोदर शास्त्री	100.00

शोध/अनुसंधान :

जैन एवं वैदिक धर्म की सांस्कृतिक एकता	सुभद्र मुनि	200.00

निबन्ध :

विचार वैभव	गुरुदेव मुनि रामकृष्ण	100.00
तृतीयनेत्र	गुरुदेव मुनि रामकृष्ण	20.00
भगवान महावीर :	,, ,,	
प्राची से आता प्रकाश	गुरुदेव मुनि रामकृष्ण	स्वाध्याय
चिन्तन के नक्षत्र (सूक्तियां)	,, ,,	स्वाध्याय
आओ जरा सोचें!	सुभद्र मुनि	20.00
स्वाध्याय : एक अनुचिंतन	,, ,,	50.00

चरित्र :

भगवान् पार्श्वनाथ	सुभद्र मुनि	10.00
विश्वबन्ध-महावीर	,, ,,	50.00
भगवान महावीर (लघु)	,, ,,	5.00
महाप्राण मुनि मायाराम (ग्रन्थ)	,, ,,	200.00
तपोकेसरी श्री केसरीसिंह जी महाराज	,, ,,	10.00
अद्भुत तपस्वी	,, ,,	10.00
श्रमण धर्म के मुकुट (लघु)	,, ,,	10.00
प्रज्ञा पुरुषोत्तम मुनि रामकृष्ण	,, ,,	150.00
गुरुदेव मुनि रामकृष्ण : श्रद्धार्चनम् (ग्रन्थ)	अमित मुनि	200.00

कथा / कहानी :

गुरुदेव योगिराज की कहानियां	सुभद्र मुनि	15.00
गुरुदेव योगिराज की बोध कथाएं	,, ,,	10.00
समय साक्षी है	अमित मुनि	25.00
अमृत-बोध	,, ,,	20.00
जीवन के प्रतिमान	,, ,,	10.00
प्रकाश-पथ	,, ,,	10.00
पतित से पावन	सुभद्र मुनि	25.00
उजालों की ओर	,, ,,	25.00
दया पालो	,, ,,	25.00
सेवा धर्म	,, ,,	25.00
मुक्ति का खेल (नाटक)	,, ,,	20.00

नारी का प्रतिबोध	,, ,,	25.00

बाल साहित्य :

बच्चों की धार्मिक कहानियां	सुभद्र मुनि	10.00
धर्म नाव के बाल यात्री	,, ,,	10.00
जैन कथामृतम्	,, ,,	10.00
सुभद्र कहानियां	,, ,,	10.00
सुभद्र कथाएं	,, ,,	10.00
सचित्र महावीर कथा	,, ,,	10.00
सुख का मार्ग	,, ,,	10.00
सुभद्र शिक्षा (5 भाग)	,, ,,	एक सैट 25.00
जैनागमों की पशु-पक्षी कथाएं	,, ,,	10.00
क्षमा है धर्म हमारा	सुभद्र मुनि	15.00
जैन पर्व कथाएं	,, ,,	20.00
सचित्र भगवान् ऋषभ देव	,, ,,	25.00
जैन बाल रामायण	,, ,,	20.00
जैन सचित्र कथाएं	,, ,,	15.00
हरियाणवी जैन कथाएं	,, ,,	25.00

प्रवचन-साहित्य :

मैं महावीर को गाता हूं	सुभद्र मुनि	100.00
ते गुरु मेरे मन बसे	,, ,,	50.00
जीवन है एक मन्दिर	,, ,,	25.00
सूरज ढलने से पूर्व	,, ,,	20.00
मां के आंचल में	,, ,,	25.00
धर्म है महामंगल	,, ,,	25.00
दुःखों से मुक्ति	,, ,,	30.00
मैं सब का मित्र हूं	,, ,,	100.00
मन के जीते जीत	,, ,,	100.00

कोष :

अहिंसा विश्व कोष (दो भाग)	सुभद्र मुनि	2500.00
जैन चरित्र कोष	,, ,,	500.00
जैन सूक्ति कोष	,, ,,	300.00

○○○